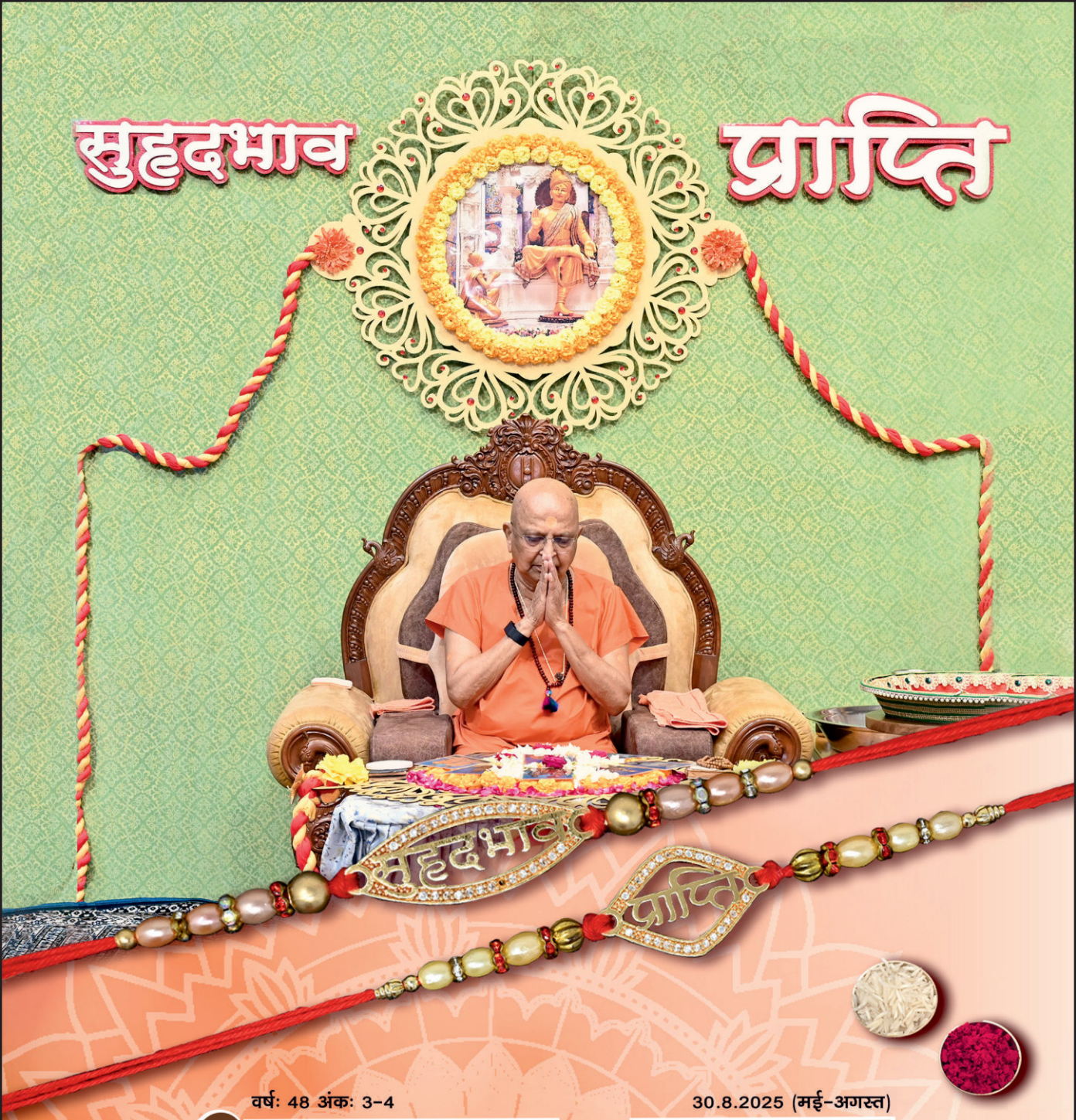

वर्ष: 48 अंक: 3-4 30.8.2025 (मई-अगस्त)

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या श्रीजी भक्तिस्तु सर्वदा ॥

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

9 अगस्त 2025 – रक्षाबंधन का मंगलकारी दिन...

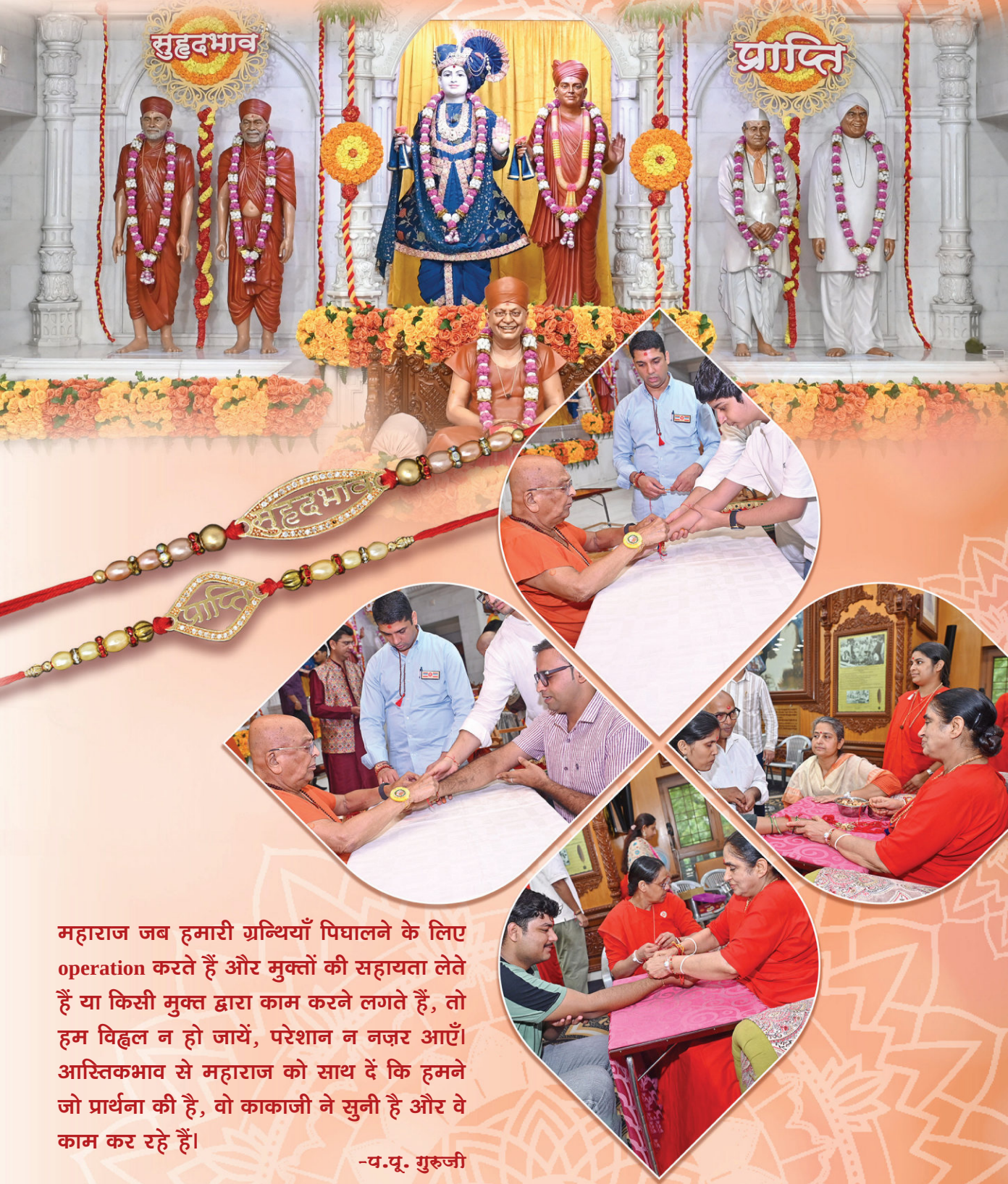

महाराज जब हमारी ग्रन्थियाँ पिघालने के लिए operation करते हैं और मुक्तों की सहायता लेते हैं या किसी मुक्त द्वारा काम करने लगते हैं, तो हम विह्वल न हो जायें, परेशान न नज़र आएँ। आस्तिकभाव से महाराज को साथ दें कि हमने जो प्रार्थना की है, वो काकाजी ने सुनी है और वे काम कर रहे हैं।

-प.पू. गुरुजी

शाश्वत् रक्षा कवच प्राप्ति का पर्व 'रक्षाबंधन'...

विश्वभर में भारतीय संस्कृति का स्थान सबसे अधिक महत्वपूर्ण व सर्वोत्तम है और भरतखंड में पूरे साल प्रति दिन कोई न कोई त्यौहार, उत्सव, व्रत, उपवास, जयंती मनाते हैं। दरअसल, इनके माध्यम से व्यक्ति के अंतर में नित्य नवीन चेतना जाग्रत होती है और वह अपने जीवन के कर्त्तव्यों, मर्यादाओं के प्रति सजग रह कर, आपसी संबंधों में सामंजस्य बनाने का प्रयास करता है। बाह्य दृष्टि से रक्षाबंधन के पर्व का तात्पर्य यह है कि बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बाँध कर, उससे 'रक्षा' का वचन मांगती है और आपसी रिश्ते में मिठास रहे, इसके प्रतीक रूप मिठाई खिलाती है। साथ ही उपहारों का आदान-प्रदान होता है। लेकिन, **आध्यात्मिक दृष्टिकोण से यह उत्सव मनुष्य के लिए अपनी अंतरात्मा को शाश्वत् सुरक्षा और चिरस्थायी सुख पाने के लिए प्रभु चरणों में प्रार्थना करने का अनमोल अवसर प्रदान करता है।** परंतु, जन्मों की जड़ता के चक्रव्यूह में घिरा व्यक्ति असमंजस में रहता है कि आख़िर उसकी 'सच्ची रक्षा' कौन करेगा और उसे स्थायी सुख व शांति कहाँ से-किससे प्राप्त होगी? तो, इसका वास्तविक उत्तर यही है कि **हमारे असली 'रक्षक' तो ईश्वर और पल-पल उनकी अस्मिता में जीते सच्चे संत हैं, जो कभी हमारा साथ नहीं छोड़ते।** गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों में गुणातीत स्वरूप अपने वरद् हस्तों से रक्षाबंधन की विधि जब संपन्न करते हैं, तो वो क्षण आश्रितों को एहसास कराती है कि परमात्मा स्वयं आत्मा को राखी बाँध कर, उसे नकारात्मक विचारों, व्यर्थ भावनाओं और आत्म-हीनता से मुक्त होने का सुरक्षा कवच प्रदान कर रहे हैं।

ऐसे शाश्वत् रक्षाबंधन का महापर्व **9 अगस्त 2025, शनिवार** के दिन सबने हर्षोल्लास से मनाया। दिल्ली मंदिर में भी **प.पू. गुरुजी** एवं **प.पू. दीदी** द्वारा रक्षा कवच प्राप्त करने हेतु सभी कल्पवृक्ष हॉल में सुबह 10:00 बजे एकत्र हुए। भगवा और पीले कृत्रिम पुष्पों से बड़ी राखियाँ बना कर सजावट की थी। गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज तथा गुरुहरि योगीजी महाराज की मूर्ति के पीछे लगी राखी पर **'सुहृदभाव'** लिखा था। इसी प्रकार, गुरुहरि काकाजी महाराज एवं गुरुहरि पप्पाजी महाराज की मूर्ति के पीछे लगी राखी पर **'प्राप्ति'** लिखा था। प.पू. गुरुजी के आसन के पीछे भी बड़ी राखी अंकित की थी, उसमें लगी चित्र प्रतिमा में **भगवान स्वामिनारायण** विराजमान थे और उनके समक्ष **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी** दासभाव से हाथ जोड़

कर बिराजे थे। 'राखी' के एक ओर **'सुहृदभाव'** और दूसरी ओर **'प्राप्ति'** लिखा था। **प.पू. गुरुजी** की निश्रा में **सेवक पू. अभिषेक** ने सबके लिए श्रेयस्कर **'महापूजा'** आरंभ की। **पू. मैत्रीशीलस्वामी** ने **प.पू. गुरुजी** की **'नित्य पूजा'** को भी कलात्मक राखी के रूप में सजा कर भक्ति अदा की थी। मंत्रपुष्पांजलि करके नित्य पूजा का लाभ लेते हुए सबने सामूहिक धुन की। महापूजा संपन्न होने के पश्चात् **पू. ऋषभ नरुला** ने हिन्दी भजन—'आज मेरी आतम खुशियों में गावत भगवन्' तथा **पू. पंकज रियाज़ी** ने 'श्रीजी की महिमा की शान है तू...' प्रस्तुत किया। प्रति वर्ष देश-विदेश में रहते मुक्तों को **प.पू. दीदी** एवं अक्षरज्योति की बहनों की ओर से दिव्य संदेश सहित महापूजा की प्रासादिक 'राखी' भेजी जाती है। भजन के बाद **पू. राकेशभाई शाह** ने वह संदेश पढ़ा—

राखी

9.8.2025, शनिवार

प्रिय आत्मीय अक्षरबंधुओं...

राखी के पावन पर्व पर अक्षरज्योति से

आपकी बहनों के भावभरे जय स्वामिनारायण!

गुरुहरि काकाजी महाराज ने 23 अगस्त 1980 को

रक्षाबंधन के पावन अवसर पर निम्न शुभाशीष दी है—

जिसका स्वभाव चुभता-लगता हो, जिससे पूर्वाग्रह दृढ़ हुआ हो

उसे बिलकुल भूल कर, दस मिनिट ज़रूर प्रभु स्मरण करके

नए सिरे से साक्षीभाव में रहना...

जिन्हें स्वरूप मानते हो, उन्हें स्वप्न में भी विवश नहीं ही करना।

उनकी आज्ञा में रहना और परिणाम सहर्ष स्वीकारना।

चिरंजीव स्वरूप गुरुहरि काकाजी महाराज अपने आश्रितों के लिए आज भी प्रगट ही हैं।

अतः वर्षों पहले उन्होंने उपरोक्त जो आशीर्वाद दिए, उन्हें विश्वासपूर्वक मान कर

भजन का उपाय लेकर जन्मों की ग्रंथियाँ पिघलाने के लिए तत्पर रहें।

इस अभ्यर्थना के साथ भेजा महापूजा की प्रसादी का

'रक्षाकवच' आपको सुरक्षित रखे और आप धन्य हों...

अक्षरज्योति से आपकी ही बहनों की ओर से—

आनंदी-स्मिता-स्वाति के रक्षाबंधन निमित्त जय स्वामिनारायण!

इस संदेश की गहनता समझाते हुए **प.पू. गुरुजी** ने निम्न आशीर्वाद दिया–

...ये बीमारी हर एक को लगी होती है कि किसी को भाई का, बहन का, भाभी का या सास का स्वभाव चुभता ही रहता है। इनके लिए काकाजी ने ये आशीर्वाद बरसाए हैं। ***जिसके प्रति पूर्वाग्रह दृढ़ हुआ हो; तो भजन करके उसे टाल दें, वो तो बहुत अच्छा है। कोई भी ऐसा नहीं कह सकता कि मुझे किसी के प्रति कोई पूर्वाग्रह नहीं है, होता ही है। लेकिन जिसे भगवान और संत की प्राप्ति हुई हो, वो उन्हें याद करके इनसे बल व माफ़ी माँगता है कि मैं फिर से ऐसा न होने दूँ, ऐसा मेरा मन कर दो। यूँ गद्‌गद कंठ से जो प्रार्थना करता होगा, उसके लिए ये आसान है।***

जिसके प्रति पूर्वाग्रह दृढ़ हुआ हो-गाँठ पड़ी हो, वो भूलना आसान नहीं है। लेकिन 'राखी' के संदेश में काकाजी ने लिखा है कि उसे बिलकुल भूल जाएँ। ये तो तभी संभव है जब भगवान और प्रगट संत; जिनकी छत्रछाया में हम रहते हैं, वे कृपा करें-आशीर्वाद दें-शुभाशीष बरसाएँ। सो, उनसे प्रार्थना करके बल मांगने की आवश्यकता हमें सदैव रहेगी।

इसके लिए काकाजी ने 10 मिनट प्रभु स्मरण करने के लिए कहा है। *भगवान स्वामिनारायण हमारे प्रभु हैं, उनका स्मरण करें। पर, उन्हें तो हमने देखा नहीं है, लेकिन स्वामिनारायण प्रगटाये हुए, उन्हें अखंड धारे हुए, उनकी consciousness में अखंड रहते हुए संतों के सान्निध्य में-उनकी स्मृति करके इनका स्मरण करके हम प्रार्थना करें।*

आज अभी तो यहाँ राखी का उत्सव है, तो 10 मिनट का समय हम नहीं निकाल पाएंगे। लेकिन मैं चाहता हूँ कि घर जाकर आज नहीं, पर जो regular धुन करते हों, तो कल से उसमें 10 मिनट add करके धुन जारी रख कर, साक्षीभाव में रहते हुए नए सिरे से शुरू करें। *'जब से जगे तब से सुबह' की तरह यूँ समझना कि कुछ बना ही नहीं। साक्षीभाव यानी क्या? तो, हमारे साक्षी प्रभु हैं। प्रभु के भाव में रहते हुए, प्रभु का स्मरण करते हुए, उनसे बल लेने की याचना करते हुए सारी प्रार्थना-पूजा में समय बिताना...*

जिनके द्वारा हमें भगवान प्रगट मिले हैं, उन्हें विवश-मोहताज़ नहीं करना। *केवल* ***'विवश नहीं करना'*** *नहीं लिखा, बल्कि* ***'नहीं ही करना'*** *लिखा है। उनके कहने का तात्पर्य यह है कि* ***खूब ध्यान रखना कि हमारी किसी भी क्रिया-प्रार्थना और कर्म से प्रभु विवश न हों।*** *ताकि प्रभु हमेशा natural-सहजभाव में हम पर राज़ी रहें।* ***उनकी आज्ञा में रहना। वे जो कहें वो ज़बरदस्ती नहीं,***

सहजभाव से उन्हें राज़ी करने के लिए करना कि मैं इनकी आज्ञा में रहूँगा, तो वे मुझ पर राज़ी होकर मेरा भीतर का गंद टाल देंगे।

उनकी आज्ञापालन के बाद जो परिणाम आए, उसे सहर्ष स्वीकारना। परिणाम क्या? तो ***हमने दिल की सच्चाई से कितनी प्रार्थना की है, वो जानने के लिए प्रभु किसी मुक्त में प्रवेश करके हमारे भीतर का तंत्र हिला देंगे। तब समझना कि ये तो प्रभु करा रहे हैं, सामने वाले व्यक्ति को हमें नहीं देखना है। यूँ समझ कर मुक्तों के अंदर प्रभु का भाव लाकर, प्रभु का दर्शन करके हमें अपनी प्रार्थना का परिणाम स्वीकार करना है।***

श्रीजी महाराज-काकाजी महाराज आज भी प्रगट हैं। इसलिए इन्होंने जो आशीर्वाद दिए हैं, वो भी आज ऐसे ही चरितार्थ हैं, ऐसे ही हम पर असर करते रहेंगे। *क्योंकि काकाजी स्वतः हाज़राहज़ूर हैं। काकाजी के इन आशीर्वाद में ऐसा नास्तिक भाव मत लाना कि ये तो काकाजी ने वर्षों पहले दिए थे, उनके पंसदीदा मुक्तों ने उस समय आत्मसात् कर लिए। बल्कि आस्तिकभाव से ऐसा मानना कि आज भी मैं गदगद कंठ से काकाजी से प्रार्थना करता रहूँगा, तो वे इन आशीर्वाद का भोक्ता मुझे भी बना देंगे। ऐसी आस्तिक श्रद्धा से हम इस आशीर्वाद को समझें। पर, ये केवल समझने से नहीं हो पाएगा, उसके साथ-साथ भजन करें कि हे काकाजी, हे पप्पाजी, हे स्वामीजी! मेरे भीतर का तंत्र आप ऐसा बना दो कि आपके आशीर्वाद में आत्मसात् कर पाऊँ।* ***महाराज जब हमारी ग्रन्थियाँ पिघालने के लिए operation करते हैं और मुक्तों की सहायता लेते हैं या किसी मुक्त द्वारा काम करने लगते हैं, तो हम विह्वल न हो जायें, परेशान न नज़र आएँ। आस्तिकभाव से महाराज को साथ दें कि हमने जो प्रार्थना की है, वो काकाजी ने सुनी है और वे काम कर रहे हैं।***

महापूजा की प्रासादिक राखी एक 'रक्षा कवच' के रूप में दी जाती है कि आप जहाँ कहीं भी हो, आपकी सदैव हर प्रकार से रक्षा होती रहे। ***ज़रूरी नहीं कि आप मंदिर-आश्रम में हों या संत के साथ ही होंगे तो रक्षा होगी। आप घर में या बाहर कहीं भी होंगे, धरती के किसी भी कोने पर होंगे, वहाँ प्रभु के आशीर्वाद पहुँच कर आपकी रक्षा करेंगे।***

ये बहनों ने अपने प्रभु को याद करके, भगवान-प्रगट प्रभु से प्रार्थना करके ऐसी भावना से 'राखी' भेजी है कि हमारे सब भाइयों की रक्षा करो। तो, सात्विक व आस्तिकभाव से 'राखी' स्वीकारना। आनंदी-स्मिता-स्वाति ये तीन बहनों के नाम लिखे हैं, लेकिन सभी बहनों के दिल

में ये भाव है कि हमारे सभी भाइयों की हर प्रकार से, हर जगह, हर पल, रक्षा होती रहे और वे सदैव सुरक्षित रहें। तो, ये राखी प्राप्त करके हम सच में अपने आपको धन्य हुआ मानें—यही प्रार्थना है।

अक्षरज्योति की बहनों ने प.पू. गुरुजी को अर्पण करने जो विशेष राखी बनाई थी, उस पर भी वही चित्र प्रतिमा अंकित की थी, जो प.पू. गुरुजी के आसन के पीछे लगी थी। सो, प.पू. गुरुजी के आशीर्वाद के बाद **सेवक पू. अभिषेक** ने उनकी कलाई पर बांधी और तभी **पू. राकेशभाई** ने बहनों की निम्न प्रार्थना पढ़ी—

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी ने अपने वर्तन से सही अर्थ में साधुता व दासत्वभक्ति सिखाई। इसी प्रकार, ***सभी गुणातीत स्वरूप न केवल श्रीजी महाराज और स्वामी के प्रति दासत्वभक्ति से जिए, बल्कि अल्प संबंध वाले मुक्तों के साथ उनकी कक्षा पर ओतप्रोत होकर दासत्वता से जी रहे हैं। प.पू. गुरुजी का पल-पल का जीवन हमें उनकी दासत्व भक्ति का दर्शन कराता है, परंतु हम अपने मन-बुद्धि, अहं के दायरों से घिरे होने के कारण ऐसा जीवन जीने की राह पर चल नहीं पाते।*** *सो, रक्षाबंधन के इस पावन दिन अंतर्मन से प्रार्थना करते हैं कि आप ही कृपा करके हमें हमारे दायरों से बाहर निकाल कर आपकी मरज़ी के अनुसार वर्ता लेना...*

तत्पश्चात् **पू. शशि यादवजी** की ओर से उनके पति **पू. विजयपालजी** ने **प.पू. गुरुजी** को राखी अर्पण करके आशीर्वाद प्राप्त किया। प.पू. गुरुजी से राखी प्रसादी की करवा कर संतगण हरिभक्तों को बांधते हैं। प.पू. दीदी भाइयों को तथा प.पू. दीदी की ओर से अक्षरज्योति की बहनें भाभियों को रक्षा कवच के रूप में प्रासादिक राखी बांधती हैं। पिछले वर्ष की भाँति अबकी बार भी राजकोट रहते **पू. कल्पेशभाई-पू. कल्पना भाभी ठक्कर** के सहयोग से **'सुहृदभाव'** एवं **'प्राप्ति'** लिखी विशिष्ट राखियाँ बनवाई थीं। जिन राखियों पर 'सुहृदभाव' लिखा था, वो सभी हरिभक्तों और भाभियों को बांधी जानी थी और जिन पर 'प्राप्ति' लिखा था, वो प.पू. दीदी स्वयं भाइयों को बांधने वाली थीं। **पू. राकेशभाई** ने इन विशिष्ट राखियों का दिव्य संदेश पढ़ कर सबको सुनाया—

'सुहृदभाव' लिखित राखी का मर्म

वर्षों पहले गुरुहरि काकाजी महाराज के हीरक महोत्सव पर ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी के नेतृत्व में **'सहृदयी'** पुस्तक प्रकाशित हुई थी। पुस्तक के नाम से प्रतीत होता है कि सुहृद सम्राट

गुरुहरि काकाजी स्वयं तो सबके सुहृद थे ही और अपने जीवन प्रसंगों द्वारा पूरे सत्संग के मुक्तों को इसी दिशा में अग्रसर होने के लिए प्रेरित किया और इसे जीवन का केन्द्र बनाने के लिए सबसे आग्रह भी रखा। इस पुस्तक के **11वें अध्याय** 'सुहृदभाव' में इसका खूब महत्व बताया है—

प्रकरण 3 की 70वीं बात में मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी ने कहा है—

जीव के मोक्ष हेतु महाराज ने अनंत बातों का प्रर्वतन किया है, उसमें चार बातें मुख्य हैं—

1. महाराज की उपासना
2. महाराज की आज्ञा
3. बड़े एकांतिक साधु के साथ प्रीति
4. भगवदी के साथ सुहृदभाव

इस अध्याय में यह भी लिखा है कि **सुहृदभाव तो जीव का जीवन है। आध्यात्मिकता के मार्ग पर चलने वालों के लिए यही सच्ची साधना है** और गुरु गुणातीत का तो गुण है। क्योंकि वे भगवान के सच्चे सहृदयी सेवक हैं। भले ही अन्य सभी कल्याणकारी गुण हासिल कर लें, परंतु साधक यदि सुहृदभाव की मंगलकारी भावना नहीं समझेगा, तो गुरु गुणातीत की दृष्टि में उसकी साधना अधूरी ही रहेगी...

देह का जीवन हवा, जल और अन्न है। इनके बिना देह जीवित नहीं रह सकता, इसी प्रकार साधना मार्ग में प्रत्यक्ष स्वरूप की प्रसन्नता के लिए, सच्चा स्वर्ण पात्र बनने के लिए, प्रभु की मूर्ति में लयलीन होने के लिए सुहृदभाव तो प्राण के समान है...

गुरुहरि योगीजी महाराज ने भी कहा है—

सुहृदभाव से जीएँगे तो सत्पुरुष हमें अपनी गोद में बिठाएँगे। भगवान के भक्त के प्रति सुहृदभाव तो सभी साधनों में श्रेष्ठ साधन हैं...

प.पू. गुरुजी की निश्रा में त्यागाश्रम और गृहस्थाश्रम में रह कर, प्रभु को राज़ी करने की राह पर अग्रसर मुक्त समाज अपनी-अपनी कक्षा पर साधना कर रहा है। सभी ने महसूस भी किया होगा कि **प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी के आशीवर्चनों में निरंतर एक बात सुनने को मिलती है और वह है—'आपस में मिलजुल कर सुहृदभाव से सेवा व आनंद करो...'** आज प.पू. गुरुजी और प.पू. दीदी की ओर से रक्षा कवच रूपी जो राखी बाँधी जाएगी, उस पर उनके आशीर्वाद

रूप **'सुहृदभाव'** लिखा है। भगवान स्वामिनारायण एवं सभी गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में प्रार्थना है कि कृपा करके आप हमें समय का मोल समझा कर, हमारी सभी ग्रंथियों को पिघलाने के लिए भजन करने का बल दें और 'सुहृदभाव' का जीवनमंत्र दृढ़ करवा कर अंतर से राज़ी हो जाएँ।

'प्राप्ति' लिखित राखी का मर्म

इसके द्वारा **प.पू. दीदी** हमें हर पल एक एहसास दिला कर, नित्य प्रार्थना करने की ये सूझ देना चाहती हैं कि

श्रीजी महाराज और उनके गुणातीत संत इस धरा पर मनुष्य तन धारण करके पधारे।

अपना अलौकिक स्वरूप छिपा कर वे हमारे जैसा बन कर रहते हैं।

सूर्य के तेज-रोशनी को किसी भी प्रकार ढक नहीं सकते

वैसे ही हमें मिले प्रगट प्रभु स्वयं भले ही अपना स्वरूप ढकने का प्रयास करें

परंतु, योगीबापा कहते—

भगवान और संत को दिल से हमेशा महाप्रतापी मानें

और ऐसा विचारें कि उनकी मरज़ी के बिना तिनका भी नहीं तोड़ सकते।

अनंत कल्प बीते और हमारे अनंत जन्म हुए, लेकिन ऐसे भगवान और संत हमें कभी मिले नहीं।

अनंत कल्प और जन्मों के बाद पहली ही बार में हमारा यह जन्म सुधर गया-सार्थक हो गया!

हमने कोई साधना या पुरुषार्थ या कोई संकल्प भी नहीं किया,

फिर भी घर बैठे ही पूर्ण पुरुषोत्तम-सच्चे संत की प्राप्ति हो गई।

हम सांसारिक दुःख-विषयों में डूबे हुए थे, लेकिन गुरुहरि काकाजी और प.पू. गुरुजी ने करुणा करके स्वयं हमारा हाथ पकड़ कर, उसमें से बाहर निकाल लिया और हमेशा के लिए सुखी कर दिया।

सो, ऐसी अनमोल प्राप्ति के कैफ़ से हम निर्भय-निश्चिंत रहें...

तत्पश्चात् राखी के रूप में अनमोल आशिष प्राप्त करने हेतु, सबने पंक्तिबद्ध होकर यह रक्षा कवच बंधवाया और महाप्रसाद लेकर प्रस्थान किया। जो मुक्त सुबह नहीं आ पाए, उन्होंने सायं आरती के समय आकर राखी बंधवाई। ऐसी अलौकिक स्मृतियों से यह पर्व संपन्न हुआ।

ब्रह्मविद्या शिविर
मसूरी 2025

FORT RESORT belongs TO Guruji

06.08.2025 Wednesday

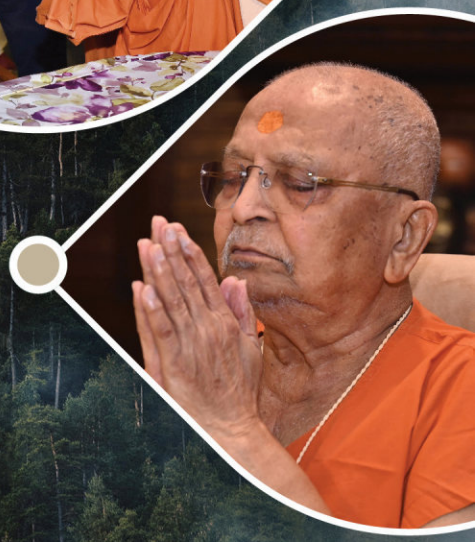

संध्या आरती, धुन एवं सभा...

माल रोड पर आनंद-किलोल...

शिविर की स्मृतियाँ...

6 अगस्त 2025 – पू. गौरव गर्गजी एवं उनके Staff को स्मृति भेंट...

मसूरी से प्रस्थान के बाद हरिद्वार में आचार्यश्री बालकृष्णजी को रक्षा कवच अर्पण...

'जहाँ पड़ें चरण संत के, वो बने तीर्थ धाम'
मसूरी में 3 से 6 अगस्त 2025 तक 'ब्रह्मविद्या शिविर'

प.पू. गुरुजी के स्वमुख से कई बार सुना है कि जब **आर्षदृष्टा गुरुहरि काकाजी महाराज** उन्हें दिल्ली भेज रहे थे, तभी उन्होंने आशीष देते हुए कहा था—

मुकुंद, ये तुम्हें मैं नहीं भेज रहा बल्कि बापा का संकल्प है और तुम्हें निष्ठा वाले मुक्त सामने से मिल जाएँगे...

दिल्ली के पंजाबी बाग में रहते, मसूरी के Royal Orchid Fort Resort के मालिक **पू.आई.एम.गर्ग साहेब** गुरुहरि काकाजी महाराज के उस आशीर्वाद की ही देन हैं। साथ ही पल-पल गुरुहरि काकाजी महाराज को धार कर एक सेवक की अदा से जीते प.पू. गुरुजी की सादगी-साधुता, अपनेपन और निःस्वार्थ प्रेम का सम्यक् दर्शन है। पू. गर्ग साहेब सपरिवार दिल्ली मंदिर-प.पू. गुरुजी से केवल जुड़े ही नहीं, बल्कि इस दिव्य कुटुंब का अभिन्न अंग बने हैं। इसलिए **पू. गर्ग साहेब** एवं उनके सुपुत्र **पू. गौरव गर्गजी** की आंतरिक इच्छा रहती है कि उनके Resort को तीर्थ समान बनाने वाले प.पू. गुरुजी वर्ष में एक बार संतों, सेवकों, बहनों तथा हरिभक्तों को लेकर मसूरी अवश्य पधारें। इतनी आत्मीयता से जुड़े ऐसे भक्तों की भावना के वश अपनी तबीयत और आयु की परवाह न करते हुए, प.पू. गुरुजी प्रति वर्ष मसूरी जाने का प्रयास करते हैं। पिछले वर्ष व्यस्तता के कारण यात्रा संभव नहीं हो सकी, लेकिन इस बार जुलाई मास की शुरुआत में मुंबई विचरण में जाने से पहले कई बार प.पू. गुरुजी ने सेवकों से मसूरी जाने की भी बात की। और... मुंबई से लौटने के पश्चात् **10 जुलाई** को **गुरुपूर्णिमा** के शुभ अवसर पर जब **पू. गौरव गर्गजी** गुरुपूजन करने मंदिर आए, तब उन्होंने प.पू. गुरुजी से मसूरी पधारने की प्रार्थना की। तो, सेवकों को एहसास हुआ कि उनकी इस भावना को ही पकड़ कर प.पू. गुरुजी कुछ समय से मसूरी जाने के लिए कह रहे थे। प.पू. गुरुजी ने मुंबई विचरण दौरान फ्लैट की चाबी खोने पर उसकी exact जगह बता कर, अपने अंतर्यामी स्वरूप की प्रतीति कराई थी; ठीक वैसे ही अनुभूति कराई कि वे भक्तों के अंतर के भाव बिना कहे जान लेते हैं और स्वयं ग़रज़ बता कर वे भाव ग्रहण करते हैं!

अतः इस बार मसूरी की **'ब्रह्मविद्या शिविर'** का कार्यक्रम **3 से 7 अगस्त 2025** तक निश्चित किया गया। अधिकांशतः प.पू. गुरुजी की अभिलाषा रहती है कि वे कहीं भी जाएं, तो अधिक से अधिक भक्त उनके साथ चलें। परंतु सीमित जगह होने के कारण कई बार संभव नहीं हो

पाता। फिर भी **प.पू. दीदी** का यही प्रयास रहता है कि निजी तौर से जुड़े सभी भक्तों को बारी-बारी से प.पू. गुरुजी के ऐसे सान्निध्य का लाभ मिले। सो, लगभग 148 मुक्तों की सूची तैयार हुई। पूर्व तैयारियों के लिए **1 अगस्त 2025** की शाम तक दिल्ली मंदिर से **6 मुक्त** मसूरी पहुँच गए।

3 अगस्त, रविवार की सुबह **10:30 बजे** प.पू. गुरुजी की आज्ञा से दो बसों में भक्तगण मसूरी के लिए रवाना हुए। **प.पू. गुरुजी** ने इन बसों को **'मेहर'** व **'कृपा'** नाम देकर, इन दो शब्दों द्वारा सबको संदेश दिया कि पूरे ब्रह्मांड में हम सब कितने भाग्यशाली हैं कि प्रगट प्रभु की हम पर अनुकंपा हुई। बस, इस आनंद में डूबे रह कर प्रभु की स्मृति में रहें। प.पू. गुरुजी के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए उनके लिए vanity van की व्यवस्था थी। सो, बसों के जाने के एक घंटे के बाद करीब 11:30 बजे vanity van में **प.पू. गुरुजी** तथा अन्य गाड़ियों में **पू. सुहृदस्वामीजी**, संत, कुछ सेवक, **प.पू. दीदी** व कुछ बहनें **'पहाड़ों की रानी'** कहलाती मसूरी जाने निकले।

पंजाब से आने वाले सत्संगी परिवार अपने वाहनों से शाम तक सीधा मसूरी पहुँच गए। जबकि प.पू. गुरुजी एवं उनके साथ गए मुक्त **खतौली** के 'बीकानेर वाला' रेस्तरां में दोपहर का भोजन करने के बाद रात्रि को लगभग 8:30 बजे मसूरी पहुँचे। **पू. गौरव गर्गजी** एवं उपस्थित हरिभक्तों ने पुष्प वर्षा और audio से ढोल बजा कर आनंद व्यक्त करते हुए प.पू. गुरुजी का भावपूर्ण स्वागत किया। रात को 9:30 बजे तक दोनों बस भी आ गईं। दो वर्ष पहले 2023 में **पू. गर्ग साहेब** एवं उनकी पत्नी **पू. इंदू आंटी** अपनी तबीयत के कारण मसूरी नहीं आ पाए थे। सो, सायं तक वे भी पहुँच गए थे। पू. गर्ग साहेब ने जब भी सभा में संबोधन किया है या उनसे रूबरू बात होती है, तब अपने Resort में प.पू. गुरुजी के आगमन के प्रति उनके मन के भाव निम्न एहसास कराते हैं—

गुरुचरण जहाँ पड़ें, धरती बने काशी समान,
कृपा दृष्टि जिस पर पड़े, वो हो जाए निहाल।

Resort के reception area से प.पू. गुरुजी सभी मुक्तों को लेकर हमेशा की तरह पुराने block की 7वीं मंज़िल के **'Tara Hall'** में गए। यहाँ सोफ़े पर विराजमान होने के बाद 7 मिनट की धुन करके रात्रि भोजन हेतु **'Winter Hall'** गए। वहाँ जब पू. गर्ग साहब आए, तो सभी ने खड़े होकर तालियाँ बजा कर उनका स्वागत किया। भोजन के पश्चात् प.पू. गुरुजी 'Tara Hall' गए। थोड़ी देर बैठने के बाद 3 मिनट धुन करके Room No. 7204 में विश्राम के लिए गए।

वर्षों से देखा है कि प.पू. गुरुजी किसी भी जगह जाते हैं, तो गुरुहरि योगीजी महाराज की आज्ञा का पालन करते हुए अधिकांशतः वहाँ के hall या drawing room में ही सोते हैं। परंतु, आज मसूरी में ठंड का मौसम होने के कारण, सेवकों-भक्तों की प्रार्थना स्वीकार कर कमरे में आराम करने गए।

4 अगस्त, सोमवार की सुबह जागने के बाद, प.पू. गुरुजी ने सबसे पहले 7 मिनट विशेष धुन करने के लिए कहा। 2012 में जब पहली बार प.पू. गुरुजी मुक्तों को लेकर यहाँ आए थे, तब 6:40 बजे की Fix Time Dhun करवाते थे। **पू. गर्ग साहेब** को वो रमणीय धुन इतनी स्पर्श कर गई थी कि उसके बाद उन्होंने उसे अपनी दिनचर्या में अपना कर जीवन परिवर्तन किया। सो, धुन के प्रति पू. गर्ग की अतिशय श्रद्धा को महत्ता देते हुए, **प.पू. गुरुजी ने 7 मिनट की बजाय 20 मिनट धुन करवाई और धुन संपन्न होने के पश्चात् भावुकतापूर्ण कहा—** ***जब भी मैं मसूरी आता हूँ, यह धुन अवश्य करता हूँ...***

दरअसल, पू. गर्ग साहेब resort में प.पू. गुरुजी को बुलाने का आग्रह इसलिए रखते हैं कि उनका मानना है कि इस resort में अलग-अलग प्रकार के लोग यहाँ आकर रहते हैं। सो, जब प.पू. गुरुजी जैसे प्रभुधारक संत यहाँ आते हैं और समवेत धुन करा कर सबको प्रभु में तल्लीन कर देते हैं, तब यहाँ की सारी नकरात्मकता समाप्त हो जाती है और वातावरण शुद्ध हो जाता है। धुन के बाद 9:00 बजे सभी नाश्ते के लिए Resort के Pinxx restaurant गए। लगातार बारिश के कारण कहीं बाहर जाने का कार्यक्रम नहीं बन पाया। सो, खुशनुमा मौसम में प.पू. गुरुजी के दर्शन का लाभ लेकर, दोपहर लगभग 1:30 बजे **'Winter Hall'** में दोपहर का प्रसाद लिया।

भगवान स्वामिनारायण की स्वाभाविक चेष्टा के पद-6 में उल्लेखित है—

अति दयाळु रे, स्वभाव छे स्वामीनो
परदुःखहारी रे, वारी बहुनामीनो।।
कोईने दुःखीयो रे, देखी न खमाय,
दया आणी रे, अति आकळा थाय।।

अर्थात्—सहजानंदस्वामी का स्वभाव अतिशय दयालु है। ऐसे बहुनामी पर बलि बलि जाएँ, जो सबके दुःख हरते हैं। किसी का भी दुःख सह नहीं सकते और उन पर दया करने अति आतुर होते हैं।

ऐसे श्रीजी महाराज ने अपने धारक संतों को भी अपने जैसी प्रकृति प्रदान की है। सो, दोपहर

को भोजन करते समय, पू. गर्ग साहेब की आयु व स्वास्थ्य के प्रति चिंतित होकर **प.पू. गुरुजी** ने मुक्तों से कहा— *मुझे बहुत दुःख हैं कि दिल्ली में रहते हुए हम गर्ग साहेब से मिलने उनके घर पंजाबी बाग नहीं जा पाए और अब हम यहाँ मसूरी आए हैं, तो हमारी वजह से गर्ग साहेब को यहाँ तक आना पड़ा।*

तब प.पू. गुरुजी का माहात्म्य सबको समझाते हुए **प.पू. दीदी** ने सेवक से कहलवाया— *गुरुजी से कहिए ऐसा नहीं है। बल्कि अब गर्ग साहेब की तबीयत ठीक हो जाएगी। वे इतने समय से मसूरी नहीं आ पा रहे थे और अब आपके लिए आए, तो गौरव भी खुश हो गया।*

दोपहर के भोजन के पश्चात् प.पू. गुरुजी आराम करने गए। सांय 7:00 बजे 'Tara Hall' में प.पू. गुरुजी की निश्रा में **पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी** ने श्री ठाकुरजी की आरती संपन्न की। इसके बाद धुन-भजन से सभा का शुभारंभ करते हुए **पू. राकेशभाई शाह, सेवक पू. विश्वास** ने भजन प्रस्तुत किए, तब **सेवक पू. नक्षत्र** एवं **पू. पुण्यम** ने ढोलक-तबला बजाया। गुरुहरि काकाजी महाराज के समय से दिल्ली मंदिर से जुड़े आत्मीय **पू. अमृतभाई पटेल साहेब** का कुटुंब वर्षों से भगवान स्वामिनारायण का आश्रित है और उनके पास भगवान स्वामिनारायण के चरणारविंद की छाप भी है। वे इस संप्रदाय से खूब परिचित हैं। अतः उन्होंने भगवान स्वामिनारायण के समय के **सद्. भूमानंदस्वामीजी** द्वारा रचित गुजराती भजन — **'सर्वे सखी जीवन जोवाने चालो रे...'** भावपूर्वक प्रस्तुत करके प्रासंगिक उद्बोधन किया।

उसके बाद पू. राकेशभाई शाह तथा सेवक पू. विश्वास ने गुजराती भजन **'रंग लाग्यो स्वामीजी मारा हैये...'** और हिन्दी भजन **'मन बुद्धि चित्त को साधु से है जोड़ना...'** प्रस्तुत करके वहां बैठे सभी को प्रभु की मूर्ति में लयलीन होने के लिए प्रेरित किया। दरअसल, संगीत ऐसी ध्वनि है, जो आत्मा को स्पर्श करती है। जब हम सुरम्य संगीत की गहराई में डूब जाते हैं, तब विचार थम जाते हैं, अहं विलीन होता है और मन वर्तमान में प्राप्त हुए प्रभु के अस्तित्व को महसूस करता हैं। भजन के पश्चात् **पू. गर्ग साहेब** ने अत्यंत भावुक होकर, प.पू. गुरुजी को धन्यवाद देते हुए कहा —

मेरी कमर में बहुत दर्द था, लेकिन मसूरी आने के लिए जैसे ही गाड़ी में बैठा तो रास्ते भर दर्द नहीं हुआ। यह गुरुकृपा ही है।

पू. गर्ग साहेब के इस वाक्य ने दोपहर को 'Winter Hall' में प.पू. दीदी द्वारा कही गई बात की पुष्टि की। पू. गर्ग साहेब की बात पूरी होने के पश्चात् **पू. मोतीलाल बाजवानजी** तथा **पू. भीखूभाई झोंसा** ने अपने-अपने स्वानुभवों से सबको अवगत कराया। सभा के बाद 'Winter

Hall' में रात का प्रसाद लेने के बाद सभी अपने कमरों में विश्राम करने गए। आज मौसम ठंडा नहीं था, सो प.पू. गुरुजी कमरे में सोने नहीं गए और 'Tara Hall' में पलंग लगवा कर आराम में गए। उनके आस-पास संत, सेवक व कुछ हरिभक्त भी बिस्तर लगा कर सोए।

5 अगस्त, मंगलवार की सुबह प.पू. गुरुजी की नित्य पूजा में धुन तथा नाश्ता करने के बाद करीब 11:00 बजे प.पू. गुरुजी सभी मुक्तों को साथ लेकर मसूरी के माल रोड पर भ्रमण करने गए। वहां प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में कुछ समय व्यतीत करके सभी Resort लौट आए और दोपहर का भोजन करने के बाद विश्राम में गए। सायं 7 बजे 'Tara Hall' में आरती के बाद **पू. अमृतभाई पटेल साहेब, पू. राकेशभाई** और **सेवक पू. विश्वास** ने सुंदर भजन प्रस्तुत किए। तत्पश्चात् नोएडा के **पू. मोहित महरोत्राजी** और **पू. गौरव गर्गजी** ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए प्रार्थना की। सभा के अंत में **पू. आनंदस्वरूपस्वामीजी** ने नित्य पूजा में निहित अनमोल पूँजी **'योगी गीता'** का पठन किया। जिसका **प.पू. गुरुजी** ने निम्न गूढ़ार्थ समझाते हुए आशीर्वाद दिया—

'गीताजी' तो हम पढ़ते हैं, जो भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को समझाई थी। वो 'कृष्ण गीता' ऐसे नहीं बोलते, वो तो universal है। जबकि योगीजी महाराज ने काकाजी को जो मुद्दे दिए, वो हमारे गुणातीत समाज के भक्तों के लिए जीवन में अपनाने योग्य प्रेरणादायी मुद्दे बन गए। उसका ये हिंदी अनुवाद हम समझने की कोशिश करेंगे।

श्रीजीस्वामी सत्य हैं...

*अक्षर— **'श्रीजी'** यानी सहजानंदस्वामी परमेश्वर और **'स्वामी'** यानी गुणातीतानंदस्वामी-मूल अक्षरब्रह्म। जीवन में भगवान और संत दो ही सत्य हैं, बाकी तो सब स्वार्थ के सगे हैं। भगवान और संत को जीव से कोई स्वार्थ नहीं है। इनकी सिर्फ एक ही चाहना है कि जीव कैसे प्रभु के सन्मुख हो जाए। उसकी आत्मा परमात्मा से केवल मिले नहीं; बल्कि आत्मा प्रभु की सेवा में अखंडित रह कर, अक्षररूप होकर गुणातीत स्वरूप बने और फिर ऐसे गुणातीत स्वरूप अपने संबंध में आते हुए हर एक मुमुक्षुओं को उनके चैतन्य के विकास के लिए अग्रसर करते रहें।*

वचनामृत में से पाँच बातें...

बापा ने वचनामृत में से सार निकाल कर सबको दिया है—

करना—संत समागम, मन-कर्म-वचन से...

देखो। करना क्या? व्यापार, नौकरी, घर और कुटुंबियों की परवरिश तो करनी ही है, लेकिन

प्राथमिकता पर संत समागम करना है। संतों के समागम से मतलब उनके पास जाकर हाथ जोड़ कर बैठे रहना सिर्फ वो नहीं है। वो तो स्थूल रूप से करते हैं, लेकिन 'समा' की 'गम' होना, अर्थात् प्रभु ने जिन संत के साथ हमें जोड़ के रखा है, जिनका समागम दिया है, इनके संबंध से ही हमारी चेतना प्रभु की ओर अग्रसर होगी-उनका मिलन कर पाएगी और ब्रह्मरूप हो सकेगी। ब्रह्मरूप होने के बाद और कुछ पाने या समझने की ज़रूरत नहीं पड़ती। ***अहं ब्रह्मास्मि, कृष्णस्य दासोऽस्मि।*** खुद को ब्रह्मरूप मानने के बाद भी हम तो भगवान के 'दास' ही हैं, ये हम कभी न भूलें। अहं ब्रह्मास्मि मानना सिर्फ हमारी ego बढ़ायेगा, वो हमें ख्याल नहीं आयेगा। लेकिन मैं कृष्ण का-परमात्मा का दास-सेवक हूँ। इनके चरणों में ही मुझे रहना है और जो-जो भक्त मेरे संपर्क में आएगा, उन सबको उन प्रभु के चरणों में अग्रसर करना है—वो संत समागम!

मन से संत को निर्दोष समझना और इनकी मरज़ी में रहना। वो जो चाहते हैं, उस ओर ही हम मन से अग्रसर रहें। हमारे संबंध-संपर्क में जो भी आए, उन्हें भी उसी दिशा में अग्रसर करें।

जानना—जड़ और चैतन्य का विवेक...

जड़-चैतन्य का विवेक जानना यानी ये अच्छा, ये बुरा वो तो सब लौकिक ज्ञान है। लेकिन यहाँ जड़ और चैतन्य के विवेक का अर्थ है कि भगवान, संत और सत्संगी चैतन्य स्वरूप हैं, बाकी सब जड़ता को पाए हुए हैं। वहाँ से हमें कुछ नहीं मिलने वाला है। इसलिए भगवान और संत के स्वरूप को जानना, वो ही करने जैसा है। जीवन का यही उद्यम होना चाहिए कि जिन भगवान स्वामिनारायण और गुणातीतभाव को पाए हुए संत के संपर्क में हम आए हैं, उन्हें तत्त्व से जानना। तात्विक रूप से वे ही जानने योग्य हैं, बाकी जगत की कोई चीज़ जानने जैसी नहीं है। क्योंकि जगत की चीज़ permanent रहने वाली ही नहीं है, जबकि भगवान और संत आख़िर-अंत तक हमारे साथ रहेंगे। एक जगह पर संत की definition बताई थी— 'संत' शब्द का संधि-विच्छेद स + अन्त है। जो भगवान के स्वरूप को अंत तक पाये, वो संत। इनके ज्ञान-स्वरूप को तत्त्व से पूरा पहचाने, वो संत। जैसे मैंने बताया, ***धाम धामी और मुक्त ही सत्य हैं, बाकी अन्य सब जड़ हैं।***

छोड़ना—पंचविषय, देहाभिमान, ग़लत पक्ष...

जिसमें प्रभु का संबंध न हो उन ***पंचविषयों*** यानी शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध का त्याग कर देना, ***ग्राम्यवार्ता नहीं करना।*** प्रभु की महिमा का गुणगान, उनके स्वरूप-ज्ञान का बोध कराने वाले शब्दों को सुनना। बाकी कोई शब्द पकड़ने जैसे नहीं हैं, उन्हें छोड़ दो।

ख़ुद की consciousness को छोड़ना ही देहाभिमान का त्याग करना है। *एक ही consciousness में रहना कि मैं प्रभु का सेवक हूँ, ब्रह्मरूप हूँ। ब्रह्मरूप होकर ही परब्रह्म की भक्ति कर सकते हैं। वर्ना आवागमन के चक्कर में से छूट नहीं पायेंगे। जब ब्रह्मरूप हो जाएँगे, तब आवागमन के चक्कर में से छूट जाएँगे और माँ के पेट में जाने से मुक्ति मिल जाएगी। फिर जब आना होगा, तो जगत कल्याण के लिए धरती पर direct ऐसे संत के द्वारा आयेंगे। ऐसे संत की कृपा से किसी स्वरूप के द्वारा प्रगट होंगे, जैसे कृष्ण भगवान देवकी से प्रगट हुए। देवकी को पहले प्रभु ने विराट स्वरूप में दर्शन देकर बताया था कि मैं तेरे द्वारा धरती पर प्रगट होऊंगा। इस तरह ऐसे संत और इनके स्वरूप को समझें...शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गन्ध, ये पंचविषय छोड़ देना यानी* ***जहाँ भगवान का संबंध नहीं हो वो छोड़ देना। पंचविषय-देहाभिमान यानी कि मैं राजा हूँ, मैं ये हूँ, मैं minister हूँ, मैं इतनी संपत्ति का मालिक हूँ—ये सब छोड़ देना।*** *बस ये मानना कि* ***मैं प्रभु का सेवक हूँ, ऐसे संतों की सेवा के लिए प्रभु ने ये सब मुझे दिया है, बस उन्हीं के लिए इस्तेमाल करता रहूँ।***

ग़लत पक्ष *यानी भगवान के सिवा कहीं भी पक्ष में खड़े रह जाएँ, वो ग़लत पक्ष है। भगवान और संत के सिवा अन्य किसी का पक्ष न रखें।*

समझना-पहचानना—भगवान का स्वरूप...

भगवान के स्वरूप को समझना-पहचानना क्या? यानी साकार-निराकार के विवाद-चर्चा में नहीं पड़ना। हमें जो मिले हैं वो साकार हों या निराकार, पर मेरे कल्याणदाता, भक्तों के और जगत के कल्याणदाता हैं, ऐसा समझना।

रखना—ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म...

मैंने पहले भी बताया कि परब्रह्म का संबंध अखंड होने के बाद-ऐसे संत मिलने के बाद एक ही उद्यम करने जैसा है कि ब्रह्म के संग से ब्रह्म कैसे बन जाएँ! अंग्रेजी में कहते हैं law of induction, तो इससे होता है। जैसे लोहचुम्बक को दूसरे लोहचुम्बक के साथ जोड़ा जाए, तो वो लोहा भी लोहचुम्बक बन जाता है। इसी तरह चेतना यदि गुणातीतभाव को पाए हुए संत के साथ सम्यक् रूप से जुड़ जाए, तो वो भी संत स्वरूप-गुणातीत स्वरूप बन जाती है।

भगवान की भक्ति करने में तीन बड़े विघ्न हैं...

भक्ति सेवा के रूप में होती है। तो भगवान की भक्ति करने में तीन विघ्न आते हैं।

1. ***दूसरों के दोष दिखाई दें...***

ख़ुद के दोषों को देखते नहीं, पर दूसरों के दोष देख कर अपने मन में भरें। हम ऐसे करते रहेंगे,

तो वो सारे दोष हमारे भीतर आकर रहेंगे। फिर हमारी प्रगति अटक जाएगी, हम जहाँ होंगे उससे आगे बढ़ नहीं पाएंगे।

2. भगवान के भक्तों से मन अलग हो जाए...

ये सारा समाज जो अपना है-अपना माना है, उसके प्रति ऐसा हो जाए कि इसमें कुछ नहीं है, ये लोग स्वार्थी हैं। इस तरह मन भटक जाए-अलग हो जाए, वो नहीं करना।

3. भगवान के प्रति लापरवाही हो जाए...

भक्तों के प्रति लापरवाह-बेपरवाह होने से उनकी महिमा न रहे, ऐसा नहीं करना। इनकी महिमा से सेवा करते रहना और इनके साथ का संबंध बढ़ाते रहना।

माहात्म्ययुक्त भक्ति उदय होने का क्या साधन है?

माहात्म्ययुक्त भक्ति यानी क्या? भक्तों के साथ भगवान की सेवा-भक्ति माहात्म्ययुक्त करनी है। भगवान की सेवा तो हर कोई करता है, लेकिन भक्त के साथ भगवान की सेवा करनी। जैसे गुणातीतानंदस्वामी के साथ महाराज की सेवा और इसी तरह जो भी गुणातीत स्वरूप संत हों, इनकी ऐसे मूल अक्षरब्रह्म के साथ सेवा करना माहात्म्ययुक्त सेवा कही जाए।

फिर किसी ने पूछा कि माहात्म्ययुक्त भक्ति किस प्रकार करें कि ऐसी भक्ति उदय हो।

उस समय गुणातीतानंदस्वामी उपस्थित नहीं होंगे, इसलिए शुक-सनकादिक का नाम लिया। लेकिन कहने का भाव यह था कि गुणातीतभाव को पाए हुए संत की सेवा करना माहात्म्ययुक्त भक्ति उदय होने का साधन है।

इनके संग से नहीं, बल्कि प्रसंग से माहात्म्ययुक्त भक्ति-सेवा उदय होती है। संग और प्रसंग में क्या फर्क़ है? तो, माला के मनकों को धागे से पिरो कर माला बनती है। तो, मनके का धागे के साथ जो संबंध है—वो संग है। लेकिन यदि धागे को ठीक से देखेंगे, तो ख्याल पड़ेगा कि धागे के सारे बल एक-दूसरे के साथ चिपके होते हैं और वो इस प्रकार चिपके होते हैं कि यदि धागे को जलायेंगे, तो इनकी जो राख बनेगी, वो भी एक-दूसरे से लिपटी-चिपकी हुई होगी। इस तरह हमारे मन, बुद्धि और चित्त की यदि राख भी बन जाए, तब भी हम संत से अलग न हों-उनसे दूर न हों, यह प्रसंग किया कहा जाए।

माहात्म्यरहित भक्ति क्षय रोग युक्त है...

यदि माहात्म्य न हों और हम भक्ति करते रहें, तो वो भक्ति क्षय रोग (T.B.) के समान है। उस समय TB असाध्य रोग था, जिसका कोई इलाज नहीं था। तो, ऐसी भक्ति अंततः हमें भगवान

से पृथक कर ही देगी। जैसे दस साल की किसी लड़की को क्षय रोग हो जाए, तो वो युवती होने से पूर्व मर जाती है, ऐसे ही माहात्म्य रहित भक्ति धीरे-धीरे भगवान के साथ का संबंध खो देती है।

निर्दोषबुद्धि हर एक में रखना...

बापा ने जो निर्दोषबुद्धि शब्द इस्तेमाल किया, वो काकाजी ने पकड़ा कि सारे समाज के अंदर निर्दोषभाव रखें। ***निर्दोषभाव यानी सारा समाज अक्षरधाम से आया हुआ है, वहाँ के सारे अक्षरमुक्त हैं—यूँ मानना वो निर्दोषभाव।*** *सब मुक्त इस लोक के नहीं हैं, अक्षरधाम से आये हुए है। अपने यहाँ बाहर से भी कोई मेहमान आते हैं, तो यही कहते-सोचते हैं कि भई, ये तो बाहर से आए हैं। उनकी सेवा में हम कैसे लग जाते हैं!* ***जैसे हम मसूरी आए हैं, तो गौरव कैसे सेवा में लगा है कि ये लोग दिल्ली से आए हैं।*** *बाहर से आए हैं, अपने यहाँ के-हमारे साथ के नहीं हैं, अलग से हैं। यूँ मानकर जो महिमा से सेवा करता है, वैसी हमें हर एक की करनी।*

भक्त का भक्त बनना...

भगवान का भक्त हर कोई बनता है, लेकिन भक्त का भक्त बनना। अक्षरपुरुषोत्तम की ये उपासना है कि महाराज का भक्त तो है, लेकिन साथ में गुणातीतानंदस्वामी, अक्षरब्रह्म, अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना करनी वो सच्ची सेवा है।

पक्का हरिभक्त किसे जानना, हरिभक्त के दास का दास होकर रहना...

पक्का हरिभक्त किसे कहा जाए? भगत तो सब हैं, ***लेकिन ठोस भक्त वो है कि कुछ भी करो, उसकी भक्ति क्षीण-कम नहीं होती।***

ऐसा भगत कौन?

तो, जो भक्त के दास का दास बने, भक्त के साथ के संबंध वाले भगत का दास बन कर, उसका भी दास बन कर जो रहे। गुणातीतानंदस्वामीजी के समय महाराज के संबंध वाला एक भगत था, उसे 'धूला भक्त' इसलिए कहते थे कि वो पागल जैसा था और धूल फांकता रहता था। तो, स्वामी ने कहा कि जो धूला भगत का दास बन कर रहे, वो सच्चा भगत है। इसकी भक्ति किया करे, इसके प्रति निर्दोषभाव रखे, वो सच्चा भक्त।

तीन अंग में से एक अंग रख कर, देहभाव छोड़ कर भगवान के धाम जाना...

तीन अंग यानी ***हेत, विश्वास और निष्कपटभाव।*** *इनमें कोई भी अपना एक अंग पकड़ कर चलें। हम प्रेमी होंगे, तो हेत से आगे जाएँगे। हम सेवक के दास जैसे होंगे, तो सेवकभाव से प्रगति*

करेंगे। हम ज्ञानी होंगे तो शास्त्रों का-संतों का ज्ञान पकड़-पकड़ कर चलेंगे। इन तीनों में से किसी एक के मुताबिक़ चलेंगे, तब देहभाव छूटेगा और गुणातीतभाव में सिर्फ प्रवेश मिलेगा।

आत्मनिष्ठा की उत्तम स्थिति पतिव्रतात्व-दासत्व...

आत्मनिष्ठा की उत्तम स्थित यानी क्या? आत्मा-परमात्मा में जुड़ जाए, परमात्मा स्वरूप बनकर अक्षररूप होकर भगवान की भक्ति करे, वो अति उत्तम स्थिति।

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरों न कोई रे... वो पतिव्रता भाव।

भक्तों का भक्त बनना वो सच्चा दासत्वभाव।

दासत्व में चार बात समझनी हैं...

इष्टदेव के दर्शन जँचे... *ये तो हर एक को होता है, अपने इष्टदेव का दर्शन करे, तो ऐसा हो कि ओहोहो आज मुझे कृष्ण परमात्मा के दर्शन हो गए। आज मुझे रामजी के दर्शन हुए या आज मुझे शंकरजी के दर्शन हुए।*

इष्टदेव के सान्निध्य में रहना जँचे... *यानी इष्टदेव की कृपा दृष्टि से इनके पास बैठने की रुचि कभी कम न हो। इनका प्रसाद और आशीष मिलते रहें।*

इष्टदेव की क्रिया जँचे... ***ऐसा न लगे इतना ठीक किया, इतना ठीक नहीं किया।*** *ऐसा न हो तो समझना कि हमें इष्टदेव की हर एक क्रिया पसंद आई।*

इष्टदेव के स्वभाव जँचे... *ये बहुत कठिन है। इसे हम समझ नहीं पाते कि* ***ये तो स्वभाव ग्रहण करते हैं।*** *लेकिन, हमें ऐसा होता है कि स्वामी ने ये ठीक नहीं किया, तो इसका अर्थ कि हमें उनका स्वभाव पसंद नहीं आया।*

एक-दूसरे की झंझट नहीं करनी...

देखो, हम यही करते रहते हैं। एक-दूसरे की कानाफूसी करते हुए दूसरे से कहते हैं कि आपको ख्याल है कि इसने आज ये किया। ये हमने झंझट करी कहा जाए, तो ऐसी झंझट न करें।

एक की बात दूसरे को कहना और दूसरे की बात अन्य को करना। यह स्वभाव साधुता के मार्ग में खोट लाएगा...

एक की बात दूसरे को करनी, दूसरे की बात तीसरे को करनी, वो साधुता नहीं है। ऐसा करने से हम साधुता के मार्ग से गिर गए, जगत के मार्ग पर चलने लगे। संत के मार्ग से हमारी गाड़ी उतर गई।

अतः जिसे मोक्ष चाहिए, उसे यह स्वभाव छोड़ देना चाहिए...

मोह का क्षय कर देना यानी वो मोक्ष। जिसे यह चाहिए, उसे ये छोड़ देना।

स्वामी जागास्वामी कहते थे कि दोष देखने का मन हो, तो अपनी देह, स्वभाव और जाति का देखना...

अपने आप का दोष देखना, ब्रह्मस्वरूप संत का मत देखना। भगवान और संत का नहीं देखना, वो जागास्वामी का परामर्श था।

योगी महाराज कहते थे कि actually दो ही जाति हैं— स्त्री और पुरुष। तो फिर कहाँ से दोष देखेंगे?

भगवान के साथ जो जुड़े हुए हैं, वो सब ब्रह्मस्वरूप हैं ही। आज नहीं तो कल ब्रह्मस्वरूप होंगे। पप्पाजी कहते कि भविष्य में उनके पैर छूनें, इससे अच्छा वर्तमान से ही वो शुरू कर दें।

सहनशक्ति ज़बरदस्त गुण है...

कोई कटाक्ष में कुछ कहे और उत्तर देने के बजाय सहन कर ले वो क्षमा गुण...

*भगवान और संत का तो सब कोई सहन करता है, जगत का भी हम सहन करते हैं। **पर, प्रभु को सबके कर्ता हर्ता मान कर सबका सहन करें।** उसे ऐसा न हो कि इनके द्वारा प्रभु मेरी testing कर रहे हैं। कोई टोना मारे, sarcastically कुछ कहे, तब भी समझें कि इनके द्वारा भगवान ने मुझे मेरे किसी दोष का दर्शन कराने का ठान रखा है।*

हम जवाब-प्रत्युत्तर न दें, इसे कहते हैं सहनशक्ति। वो क्षमा किया कहा जाए। क्षमा करने से हमारे जीव में शांति अखंड आती है। हमने क्षमा करी होगी तो भीतर में आनंद प्रगट हो जाएगा। भीतर में कोई disturbance नहीं आयेगा।

फिर बड़े संत अंतर से हम पर राज़ी हो जाएँगे, तो क्या फल मिलेगा? कि हमारे मन, बुद्धि, चित्त सब भगवान में जुड़ जाएँगे, गुणातीतभाव को पा जाएँगे। कोई भी दुःख नहीं रहेगा। गुण में दुःख निहित है, उससे परे उठ जायेंगे।

स्वामी मूल अक्षरब्रह्म कहते थे—देहांत हुआ उससे क्या?

गुणातीतानंदस्वामी कहते थे कि ये देह गिर गया यानी मर गए उससे क्या? फिर से दूसरा देह मिलेगा। पर, पिछले जन्म में जहाँ पूर्णाहुति-जितनी प्रगति की होगी, उससे आगे जाना है, मतलब जन्म-मरण का चक्कर ख़तम नहीं हुआ। हमें तो साधु होना है यानी गुणातीत होकर गुण से परे उठ जाना है, साधुता सीखनी है। मर गए तो सब कुछ समाप्त हो गया, ऐसा नहीं समझना।

स्वामी जागास्वामी कहते थे- पर क्रिया, पर आकार, पर दोष देखना नहीं...

दोष देखना हो, ख़ुद का देखो... कहीं बातें होती हों, तो अपने लिए जो ठीक लगें, वो ग्रहण करनी बाक़ी ये बात ग़लत है, ***ऐसी टीका- चर्चा में नहीं पड़ना।*** *तब ऐसा समझना कि ये बात मुझे समझ नहीं आती है, दूसरों के लिए होगी। फिर हम बात करने वाले का अवगुण नहीं ले पाएँगे, वो दोष हम पर नहीं आएगा।*

समूह में यदि कोई बात हो रही हो, हम से कोई बड़ा व्यक्ति वह कह रहा हो...

समूह में कोई बड़ा व्यक्ति बात कर रहा हो और हमें पसंद नहीं आती हो, fit नहीं बैठती हो तो उस समय उसे ये नहीं कहना कि तुम्हारी बात ग़लत है, चुप-मौन रहना। फिर जब एकांत मिले तब उनसे पूछना कि स्वामी आपने ये बात की थी, वो मेरे दिमाग़ में बैठी नहीं है, आप मुझे समझाओ। तो, महाराज उसके द्वारा हमें समाधान ज़रूर देंगे।

बड़े संत की बात सुन लेनी और उनके अंतर में जब हमारे प्रति लगाव हो तब बात करनी...

साधु को भी हमारे प्रति भरोसा-लगाव हो, तब बात करनी चाहिए कि मैं इसे समझाऊँगा, वो बात को समझेगा।

इसलिए भक्तों के साथ, उनकी प्रगति के लिए साधु को ऐसे भक्तों को पहले लगाव कराना चाहिए। उनको fit बैठना चाहिए कि ***स्वामी मेरे हैं, हम इनके हैं, वो कभी हमें ग़लत बतायेंगे नहीं। लगाव होने के बाद अपना सिद्धांत कहना...***

जगरांव के **पू. सनी जयस्वालजी** के छोटे पुत्र **पू. रियान का आज जन्मदिन था** तथा जगरांव के ही **पू. दलजीत सिंहजी** की बड़ी बेटी **पू. जसु का 6 अगस्त को जन्मदिन था**। इन दोनों को जन्मदिन की शुभकामनाएँ दिलाने हेतु श्री ठाकुरजी को केक अर्पण करके, सबको उसका प्रसाद दिया गया और फिर सब 'Winter Hall' में रात्रि का भोजन करने गए।

वैसे तो प.पू. गुरुजी ने **3 से 7 अगस्त तक** शिविर का कार्यक्रम बनवाया था। परंतु, उनकी प्रत्येक क्षण प्रभु प्रेरित है, सो सभा के दौरान उन्होंने सेवकों को 6 अगस्त की सुबह दिल्ली के लिए प्रस्थान करने का संकेत दिया। जब **पू. गौरव गर्गजी** को यह पता चला, तो वे **अत्यंत भावुक हो गए**। तब **प.पू. गुरुजी** ने समझाते हुए कहा— *हमें यहाँ कोई तकलीफ़ नहीं हुई है। पर, मंदिर में कुछ ज़रूरी सेवा के कारण एक दिन पहले लौट रहे हैं।*

अगले दिन दिल्ली के लिए रवाना होने की योजना बना कर, रात्रि को 'आनंदोब्रह्म' करने के पश्चात् 'तीन मिनट की धुन' के साथ प्रभु की स्मृति करते हुए सब अपने कक्षों में तथा प.पू.

गुरुजी व उनके साथ संत-सेवक 'Tara Hall' में रात्रि विश्राम में गए।

दिल्ली से लाई गई Vanity Van में कुछ technical issue होने के कारण, **6 अगस्त** की सुबह प.पू. गुरुजी को गाड़ी से दिल्ली में सफ़र कराने का तय किया गया। सुबह 9:00 बजे तक सभी अपना-अपना सामान बांध कर दिल्ली जाने के लिए तैयार हो गए। प.पू. गुरुजी की नित्य पूजा में धुन एवं नाश्ते के उपरांत सभी Resort के प्रांगण में एकत्र हुए। मसूरी में हुई **ब्रह्मविद्या शिविर 2025** की स्मृतियों संजोते हुए प.पू. गुरुजी के साथ संतों, सेवकों, हरिभक्तों व Royal Orchid के staff एवं प.पू. दीदी के साथ बहनों-भाभियों के group photos खींचे गये। तत्पश्चात् प्रति वर्ष की तरह इस बार भी प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी ने Resort के staff को स्मृति-चिन्ह भेंट देकर शुभाशीष दी।

करीब 11:00 बजे प.पू. गुरुजी दिल्ली के लिए रवाना हुए और देहरादून-मसूरी के रास्ते पर स्थित **'श्री प्रकाशेश्वर महादेव मंदिर'** में दर्शन करके आगे प्रस्थान किया। फिर हरिद्वार के मार्ग पर आकर प.पू. गुरुजी शाम को 5:30 बजे **पतंजलि योगपीठ में श्री आचार्य बालकृष्णजी** से मिलने गए। आचार्य बालकृष्णजी ने आदरपूर्वक उनका अभिवादन किया। **प.पू. गुरुजी ने उन्हें आगामी रक्षाबंधन पर्व के निमित्त राखी बांध कर अपना स्नेह व्यक्त किया।** यहाँ से भावभरी विदाई लेकर रात 9:30 बजे तक प.पू. गुरुजी दिल्ली मंदिर पहुँच गए। तब पता चला कि मसूरी के कुछ स्थानों पर हल्की भूस्खलन (land sliding) की घटनाएं हुईं हैं।

तुरंत ही **प.पू. गुरुजी** ने पू. गौरव गर्गजी को फोन लगवा कर पूछा— *सब कुछ ठीक है न?*

पू. गौरव गर्गजी ने बताया— *ईश्वर की कृपा से किसी को कोई हानि नहीं हुई।*

प.पू. गुरुजी हमेशा कहते हैं कि **सच्चे संत के जीवन की पल-पल प्रभु द्वारा प्रेरित है। सबको एहसास हुआ कि 5 अगस्त की सायं प.पू. गुरुजी का अगले दिन दिल्ली चलने के लिए कहना अनायास नहीं था, वरन् प्रभु उन्हें भीतर में संकेत दे रहे थे।**

ऐसी अध्यात्म शिविरों द्वारा **आनंद के मूर्तिमान स्वरूप प.पू. गुरुजी** का मूल उद्देश्य यही है कि सत्संग के माध्यम से मुक्त समाज आत्मचिंतन करके, मन-बुद्धि के तर्कों से ऊपर उठ कर, सुहृदभाव से जीते हुए आनंदोब्रह्म करते रहें। यदि हम उनके इस अथाग परिश्रम की गहराई समझ कर मन, वचन, कर्म से प्रभु भक्ति में तल्लीन हो जाएंगे, तो सही अर्थ में ऐसे शिविरों की सार्थकता होगी।

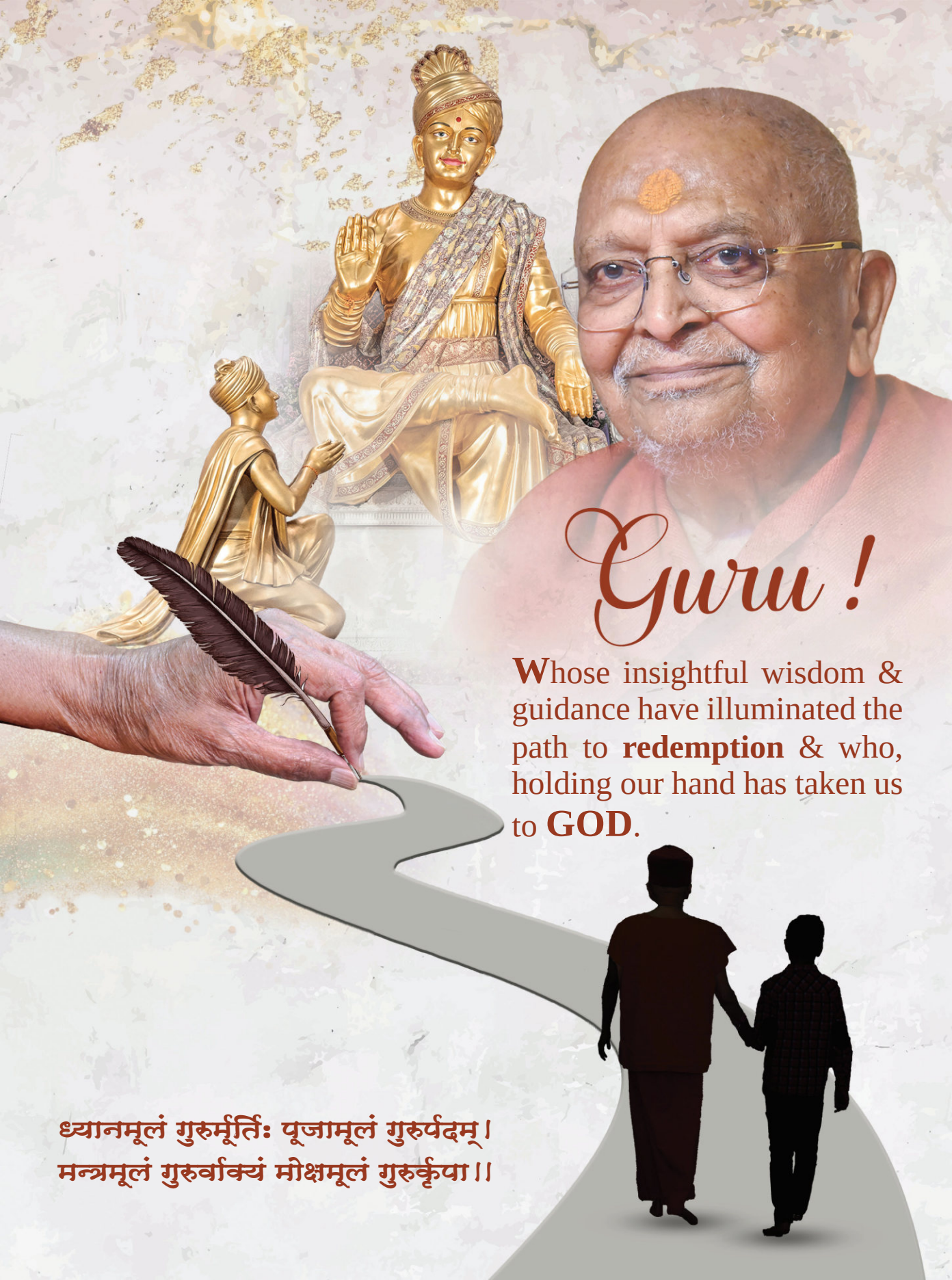

Guru !

Whose insightful wisdom & guidance have illuminated the path to **redemption** & who, holding our hand has taken us to **GOD**.

ध्यानमूलं गुरुर्मूर्तिः पूजामूलं गुरुर्पदम्।
मन्त्रमूलं गुरुर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरुर्कृपा।।

10 जुलाई 2025 – गुरुपूर्णिमा के महामंगलकारी दिन महापूजा एवं गुरुपूजन...

अक्षरज्योति में कई वर्षों से भगवान भजती पू. गंगा दीदी ने 13 मार्च 2018 में
प.पू. देवी बहन व प.पू. प्रेम बहन के वरद् हस्तों से 'सेविका' की dress ली थी।
गुरुपूर्णिमा के पावन दिन प.पू. आनंदी दीदी के करकमलों से उन्होंने भागवती दीक्षा प्राप्त की...

गुरु बिन ज्ञान अधूरा और उनके आशीर्वाद बिन जीवन सूना...

करोड़ों जन्मों से जीव मात्र अपने भीतर के तिमिर से घिरे होने से जन्म-मरण के चक्र की धुरी पर घूमता रहता है। अतः विनम्रभाव से अपनी जड़ता से मुक्त होकर, आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ने के लिए गुरु का होना अनिवार्य है। क्योंकि भगवान की प्रतिछाया गुरु ऐसा शाश्वत प्रकाश पुंज है, जो जीव के केवल आंतरिक तमस को दूर नहीं करता; बल्कि अपने संसर्ग, ज्ञान व मार्गदर्शन से उसे अपने जैसा प्रकाश पुंज बना कर, अनेकों के उद्धार हेतु एक दृष्टांत स्थापित करता है। 2014 की गुरुपूर्णिमा के महामंगलकारी दिन तो 'व्यास पूर्णिमा' का महत्व-सार संस्कृत की निम्न उक्ति द्वारा **प.पू. गुरुजी** ने बताया था—

व्यासशोच्छिष्टं जगत् सर्वम्।।

अर्थात् संपूर्ण सृष्टि व्यासजी के ज्ञान में ही समाविष्ट है।

बाह्य दृष्टि से गुरुपूर्णिमा केवल गुरु के मस्तक पर कुमकुम-चंदन का पूजन करने का पर्व मात्र नहीं; बल्कि आत्मबोध, श्रद्धा और आत्मा का परमात्मा से मिलन का पर्व है।

क्योंकि **प्रभु ने हमें**—

- ❖ दृष्टि दी, पर सही दृष्टिकोण गुरु ने दिया।
- ❖ जीवन दिया, पर जीने का उद्देश्य गुरु ने बताया ।
- ❖ प्रज्ञा दी, पर ब्रह्मज्ञान गुरु ने दिया।
- ❖ जन्म दिया, पर जन्म-मरण से मुक्ति गुरु ने दी।
- ❖ इन्द्रिय रूपी घोड़े दिये, पर उन घोड़ों की लगाम गुरु ने थामी।
- ❖ वैभव दिया, पर संतोष गुरु ने दिया।
- ❖ हमारे संचित कर्मों का ढेर दिया, पर उस ढेर को गुरु ने ख़ाक किया।
- ❖ देह रूपी धरती दी, पर आत्म आकाश गुरु ने दिया।
- ❖ मार्ग दिया, पर लक्ष्य तक गुरु ने पहुँचाया।

गुरुपूर्णिमा का ये पुण्यशाली दिन इस वर्ष **10 जुलाई 2025** को आया। सुबह 9:30 बजे सब 'कल्पवृक्ष' हॉल में एकत्र हुए। नीले व पीले फूलों से श्री ठाकुरजी का सिंहासन सुसज्जित किया था और श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की देरी के गुंबद पर भजन की निम्न पंक्ति प्रार्थना रूप लिखी थी।

'गुरु के कहने पर तू चलियो, जीतेजी सुखी कर देगा...'

प.पू. गुरुजी के आसन के पीछे भी नीले व पीले रंग का कलात्मक बोर्ड लगाया था। उसमें गोल frame के अंदर **गुरुहरि काकाजी महाराज** की हार पहनी हुई चित्र प्रतिमा लगाई थी, जो सभी

का मन मोह रही थी। **प.पू. गुरुजी** की निश्रा में सुबह 9:30 बजे **पू. मैत्रीशीलस्वामीजी** ने गुरुपूर्णिमा की महापूजा का शुभ आरंभ किया। **पू. डॉ. कैलाश सिंहजी, पू. दलजीत सिंहजी** मुख्य यजमान के रूप में महापूजा विधि का लाभ लेने शामिल हुए।

अक्षरज्योति में सेविका के रूप में कई वर्षों से भगवान भजती **पू. गंगा दीदी** ने **13 मार्च 2018** में **प.पू. देवी बहन** व **प.पू. प्रेम बहन** के वरद् हस्तों से **'सेविका'** की dress ली थी। गुरुपूर्णिमा के इस पावन अवसर पर उन्होंने **प.पू. आनंदी दीदी** के करकमलों से **'भागवती दीक्षा'** प्राप्त करने की प्रार्थना की। सो, महापूजा के दौरान विडियो के माध्यम से **प.पू. हंसा दीदी** का दर्शन तथा भागवती दीक्षा का संकल्प **प.पू. आनंदी दीदी** व प्रतिज्ञा **पू. गंगा दीदी** ने की। दीक्षा विधि की श्रृंखला में प.पू. दीदी ने दीक्षार्थी का पूजन करके, कंठी, चूड़ी, माला दी तथा **पू. स्मिता दीदी** ने पूजा दी। दीक्षा विधि संपन्न होने के उपरांत विडियो के माध्यम से ही **प.पू हंसा दीदी** का आशीर्वाद प्राप्त किया।

तदोपरांत **ब्रह्मप्रवाह** में निहित **गुरुहरि काकाजी महाराज** का आशीषरूपी निम्न पत्र **पू. राकेशभाई** ने पढ़ा–

शिकागो

12-5-77

...गुरु बहुत होते हैं, परन्तु सद्गुरु कम और सच्चा सद्गुरु तो शायद ही मिले
और मिल भी जाये तो– उसके जोग में रहना कठिन।
यदि रहें भी, तो– अखंड दिव्यभाव रखना कठिन।
वह भी रखें, तो– स्वभाव टालकर टिकना कठिन।
वह भी कर लें, तो–उसकी मर्जी में रहना कठिन।
वह भी हो जाये, तो– उसके अभिप्राय की भक्ति करनी कठिन।
और वह भी हो, पर–भिन्न-भिन्न प्रकार के–भिन्न रुचि वाले मुक्तों के साथ
दिव्यभाव ही रखकर–साधुता रखकर सरल वर्तना–सर्वोत्तम स्थिति है।
और तब–पूर्णता ही प्रगटे और Final stage सिद्ध हुई मानी जाये।
तो, यह एकता व समता दृढ़ करते जाना।
दूसरा क्या कर रहा है, वह ज़रा भी नज़र में नहीं लेना।
हमें प्रभु को याद करके उन्हें ही सब करने देना है।

प.पू. गुरुजी द्वारा निरुपण–

...अब सुनो नहीं, सोचो-बोलो नहीं, स्वीकार करके चलने लगो। कई बार हम स्वीकार करते हैं,

लेकिन उस रास्ते पर चलते नहीं हैं। पर, काकाजी ने ज़ोर देते हुए कहा कि अब ख़ाली स्वीकार करके बैठे न रहो, चलने लग पड़ो...

सद्गुरु वो जिसे प्रभु का एक दर्शन हो, प्रभु के ज्ञान को जो समझा हुआ हो। *भले उस पर चला हो या न चला, लेकिन समझा हुआ हो। कई बार तो कई चीज़ें समझते हुए भी उस रास्ते पर हम चलते नहीं हैं। पर, सद्गुरु वो जो इसकी राह को समझा हुआ है कि आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों, इस जन्म में नहीं, तो अगले जन्म में इस रास्ते चले बिना छुटकारा नहीं।*

सच्चा सद्गुरु कौन ? जिसने प्रभु का दर्शन किया हो। प्रभु के रास्ते पर चलने का इच्छुक बना हुआ हो, वो सच्चा साधु। सच्चे सद्गुरु की हूँफ में रहना कठिन है कि वो किस समय किस तरीके से व्यवहार करें, क्या आज्ञा दें। उनकी कोई एक line of action fix नहीं होती।

यदि उनके सान्निध्य में रह भी जाएँ, पर गुरु के अंदर दिव्यभाव रखना कठिन है। *मनुष्याकार में रहे हुए भगवान के अंदर दिव्यभाव रखना बड़ा कठिन है। रामचंद्रजी से लेकर, कृष्ण, श्रीजी महाराज जैसे जो-जो प्रभु के अवतार हुए, इनके अंदर अखंड दिव्यभाव नहीं रह पाया।* ***यदि दिव्यभाव रख भी पाएंगे, लेकिन अपने स्वभाव टाल कर वो अखंड नहीं रह पाएगा।***

क्योंकि वे हमेशा हमारे स्वभाव पर प्रहार करेंगे और वो हम छोड़ नहीं पाएंगे। *इसलिए इनके पास टिक नहीं पाएंगे। इसलिए कहते हैं कि स्वभाव छोड़ कर इनके साथ रहना कठिन है। कोई साथ में रहे भी, लेकिन उनकी मरज़ी के अनुसार वर्ते नहीं।* ***इनकी मरज़ी एक ही होती है कि दिव्यभाव रख कर उनके संबंध वाले मुक्तों के साथ हम मिल जुल कर रहें। पर, वो बड़ी कठिन चीज़ बन जाती है।***

दो चीज़ें हैं— ***अनुवृत्ति और अभिप्राय... वर्षों से उनकी अनुवृत्ति तो एक ही है कि उनके संबंध वाले मुक्तों के अंदर दिव्यभाव रखकर सुहृदभाव से रहो। लेकिन, अभिप्राय अलग भी होता है कि कोई लौकिक mission का कार्य लेकर आए हों। पर, उसको दिव्य समझ कर, उस कार्य में जुड़ जाना बड़ा कठिन है।*** *बड़ा कठिन नहीं, वो हो ही नहीं सकता। पर,* ***उनकी कृपा हो तो ही उस रास्ते हम चल पाएंगे।***

अपनी साधुता रखना मतलब प्रभु के साथ अपना संबंध छोड़े बिना करना, पर वो बड़ा मुश्किल हो जाता है। ***साधुता का एक ही लक्षण है कि भगवान साधे वो साधु।*** *ऐसे मुक्तों के संग में भगवान भजने की साधना करनी बड़ी कठिन है।* ***योगीजी महाराज जैसे समर्थ सद्गुरु-प्रभु का स्वरूप हों, वे ही वो करा सकते हैं।***

और... ***इनके पास सरल रह जाएँ, वो supreme कक्षा है।*** *हम सरल भी रहेंगे, लेकिन संत की रुचि के मुताबिक़ सरल नहीं रहेंगे। हम अपने ढंग से सरल रहेंगे। यदि इनकी रुचि के मुताबिक़*

सरल रह पाएंगे, तो ही प्रभु के साक्षात्कार को पाएंगे।

काकाजी ने ऐसी स्थिति प्राप्त करी थी। *अपनी साधुता छोड़े बिना समकक्षा के सब मुक्तों – छगनभाई, हर्षदभाई, दूसरे जो इनके साथ business करते थे, उन सबके साथ वे सरल रहे, साधुता रखी और भगवान का संबंध टूटने नहीं दिया। यही top कक्षा है।* ***अगर हम ऐसे सरल रहें, तब समझना कि हम पूर्णता की ओर अग्रसर हुए हैं।***

काकाजी बोलते थे – एकता ही एकांतिकभाव! हम सबको कहा था कि तुम जितने भी हो, आपस में एकता से रहोगे, वो तुम्हारी सर्वोच्च स्थिति है।

हम देखते नहीं हैं, लेकिन इन्होंने तो बोला कि किसी का ज़रा भी नज़र में नहीं लेना। सब प्रभु को करने देना है, हम अपना दिमाग़ लगा कर अपने ढंग से न चलें। कौन क्या कर रहा है, वो भी प्रभु को देखने दो...

आशीष प्राप्ति के बाद **पू. निशिथ मिश्राजी** ने गुरुपूर्णिमा निमित्त प्रार्थना की। इस विशिष्ट सभा के अंत में गुरुपूर्णिमा के उपलक्ष्य में सभी की ओर से पानीपत के **पू. पुनीत गोयलजी** एवं अमदावाद के **पू. उजास** ने प.पू. गुरुजी को हार अर्पण किया। भागवती दीक्षा प्राप्ति के लिए कृतज्ञ होते हुए **पू. गंगा दीदी** ने तथा सभी बहनों व भाभियों की ओर से **मोगा** की **पू. राधिका भाभी अग्रवालजी** ने मिल कर **प.पू दीदी** को हार अर्पण किया। श्रीजी महाराज को पसंद मोगरे के पुष्पों से हार बना कर, **पू. ओमप्रकाशजी** एवं **पू. राकेश चौहानजी** ने **प.पू. गुरुजी** को श्रद्धापूर्वक अर्पण किया। **प.पू. गुरुजी** ने अपनी प्रसादी का यह हार **पू. हेमंत वर्मा** (मोगा) को प्रसन्नता रूप पहनाया। तत्पश्चात् ऐसे दिव्य और पुण्यतम दिन पर पंक्तिबद्ध होकर संतों एवं भाइयों ने **प.पू. गुरुजी** का तथा बहनों एवं भाभियों ने **प.पू. दीदी** का पूज्यभाव से पूजन किया और प्रसाद व दिव्य स्मृतियाँ लेकर अंतर में दीन भाव से निम्न प्रार्थना करते हुए प्रस्थान किया...

हे गुरु!

आप ही हमारे लिए करुणा की मूर्ति हैं।
आप ही चैतन्य जननी, परमात्मा स्वरूप हैं।
आप ही ज्ञान-प्रज्ञान और मार्गदर्शक हैं।
आप ही संसार व परमार्थ हैं।
आप ही हमारे आध्यात्मिक पथ के दीप हैं।
आप ही धर्म, अर्थ तथा मोक्ष के स्वरूप हैं।
आप ही निर्भयता, सहनशीलता और हमारे लिए आनंद की मूर्ति हैं।

आप ही हमारे आराध्य – जीवन आधार – जीवन प्राण हैं।

1 जुलाई– मुंबई में
प.पू. गुरुजी का आगमन...

गुरुजी का इस आयु में इतना श्रम लेना एहसास कराता है कि वशीभाई और सब भाइयों के साथ उन्हें कितना प्रेम है...

–प.पू. भरतभाई

नासिक जिले के इगतपुरी Hill Station में 'आनंदोब्रह्म शिविर'की स्मृतियाँ...

पू. ओ. पी. अग्रवालजी के मित्र
पू. चंद्रशेखर पाटिलजी के Resort
The Vineyard Villas (TRE AQUA)
को पावन किया...

4 जुलाई 2025
पवई मंदिर में प.पू. गुरुजी के वरद् हस्तों से श्री ठाकुरजी के हॉल का विस्तार करते खंड का उद्घाटन

5 जुलाई 2025 – घाटकोपर में
'सेठ वीरचंद धनजी देवशी राष्ट्रीय शाला'
के auditorium में
प.पू. वशीभाई का
73 वाँ प्राकट्योत्सव...

दिल्ली मंदिर के पुराने सत्संगी
पू. प्रफुल्लभाई झवेरी के घर पधरावनी...

गुरुहरि योगीजी महाराज
गुरुहरि काकाजी महाराज व
प.पू. गुरुजी के प्रासादिक स्थल
के दर्शन पश्चात्
पू. हेतल कुमार-पू. निधि के
घर पधरावनी...

महाराष्ट्र के इगतपुरी में आनंदोब्रह्म शिविर एवं मुंबई-घाटकोपर में प.पू. वशीभाई का प्राकट्योत्सव

31 जनवरी 2025 को **प.पू. भरतभाई** के प्राकट्य पर्व निमित्त अचानक प.पू. गुरुजी ने मुंबई जाने का कार्यक्रम बनाया था। तब उन्होंने पू. दर्शन अमीन के एक प्रसंग से उजागर किया था कि प.पू. भरतभाई और प.पू. वशीभाई को हम सामान्य संत न समझें, उन्होंने गुरुहरि काकाजी महाराज को सांगोपांग धारण किया है। प.पू. गुरुजी अपनी जीवनशैली से ही सबको सिखाते हैं कि जो कुछ भी करो या बोलो, वो दिल की सच्चाई से करो। **6 जुलाई को प.पू. वशीभाई का प्राकट्य दिन होता है, उसे प.पू. गुरुजी यही मानते हैं कि प.पू. वशीभाई में बिराजे गुरुहरि काकाजी महाराज का ही प्राकट्य दिन है।** इसलिए प्रति वर्ष प.पू. वशीभाई के प्राकट्य पर्व के अवसर पर अधिकांश संतों-मुक्तों को साथ लेकर, मुंबई जाने के लिए प.पू. गुरुजी आतुर होते हैं। सो, इस बार **1 से 7 जुलाई 2025** मुंबई जाने का कार्यक्रम बनाया। **2 से 4 जुलाई** मुंबई से लगभग 3 घंटे की दूरी पर स्थित **नासिक जिले के इगतपुरी** Hill Station में **'वैतरणा झील'** के नज़दीक JayShin Lake Vaitarna Resort में **'आनंदोब्रह्म शिविर'** की गतिविधि समाविष्ट की। प.पू. गुरुजी के प्रति भक्ति अदा करने हेतु, मुंबई के आत्मीय हरिभक्त—**पू. ओ.पी. अग्रवालजी-पुत्र पू. दीपकजी, पू. अनिलभाई माणेक-पुत्र पू. मिलनभाई व पू. मेहुलभाई, पू. रमेशभाई त्रिवेदी-पुत्र पू. अभिषेकजी, पू. श्रेयसभाई व्यास, पू. सोहणी बहन शाह, पू. डॉ. केयुरभाई अध्वर्यु, पू. सनिल भिंडे, पू. हेतल कुमार** तथा **पू. राहुल शाह** इत्यादि सपरिवार व्यवस्थाएँ करने में जुट गए। इन मुक्तों को सहाय रूप होने के लिए **28 जून** को दिल्ली-अक्षरज्योति से **पू. नित्या दीदी, पू. गार्गी दीदी, पू. केसर दीदी** तथा **सेवक पू. निमाई** भी मुंबई पहुँचे।

1 जुलाई की सुबह करीब 11:30 बजे **प.पू. गुरुजी, संतों, युवकों, प.पू. दीदी, बहनों** तथा कुछ **हरिभक्तों** को साथ लेकर दिल्ली Airport T1 के लिए रवाना हुए और रास्ते में ही उनकी 'परहित योजना' आरंभ हो गई। 'काकाजी लेन' से बाहर निकलते ही 'स्वामिनारायण मार्ग' पर हरे नारियल बेचने वाले से नारियल खरीद कर उसका पानी पिया और भगवान स्वामिनारायण के आशीर्वाद अनुसार जिस पेड़ का वह नारियल उगा होगा और जिन-जिन व्यक्तियों द्वारा वह यहाँ तक पहुँचा, उन सबका कल्याण किया।

Airport पहुँच कर check-in करवा रहे थे कि उसी दौरान **प.पू. दीदी** की दिव्य आभा से प्रभावित होकर, एक **महिला अधिकारी** उनके पास आई और उसे कितना अपनापन लगा होगा कि अपनी निजी समस्या उनसे साझा की एवं प.पू. दीदी द्वारा प.पू. गुरुजी का माहात्म्य समझ कर दूर से उनका दर्शन करके धन्य हुई। इसी प्रकार, विमान की Pilot **पू. इशमित** को भी दर्शन करने की उत्सुकता हुई, तो प.पू. दीदी ने उन्हें भी आशीर्वाद रूप तुलसी पत्र दिया। भारत की संस्कृति से जुड़ा जनमानस सहज ही गेरुआ वस्त्र धारण किए संतों के प्रति नतमस्तक होकर आशीर्वाद की याचना करता है। सो, Flight जब Mumbai Airport पहुँची और सभी यात्री बाहर जाने लगे, तो Air Hostess **पू. अफ़साना** ने सेवक अभिषेक द्वारा प.पू. गुरुजी को कहलवाया— *मैं देहरादून से हूँ। मेरे पापा अस्पताल में भर्ती हैं, कृपया उनके लिए प्रार्थना करें।* स्वामिनारायण संप्रदाय के तत्त्वज्ञान के अनुसार प.पू. गुरुजी ने सेवक द्वारा प्रत्युत्तर में कहलवाया— *आंनदी दीदी को याद करके 'स्वामिनारायण मंत्र' का जाप करना।* यूँ, अल्प संबंध में आए मुमुक्षुओं को बिन मोल आशीष देते हुए, प्रासादिक स्थल मुंबई में प.पू. गुरुजी ने प्रवेश किया। सच, हम सब बहुत ही भाग्यशाली हैं कि ऐसे सत्पुरुष मिले हैं जो सभी के लिए 24x7 available हैं और अपनी कृपा बरसाते रहते हैं।

सायं करीब 5:00 बजे जब मुंबई के Airport T2 पहुँचे, तो **प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई** तथा मुंबई के स्थानीय मुक्तों ने पुष्प व मोतियों के हार से प.पू. गुरुजी और संतों-हरिभक्तों का तथा **प.पू. माधुरी बहन** व पवई की साधक बहनों ने प.पू. दीदी, बहनों व भाभियों का स्वागत किया। 1 जुलाई National Doctors' Day तथा National Chartered Accountants' Day था। दिल्ली मंदिर में प.पू. गुरुजी की आज्ञा से **पू. मैत्रीशीलस्वामी** ने Doctors व CA को सम्मानित करने एक स्मृति भेंट बनाई थी। **प.पू. वशीभाई, पू. ओ.पी. अग्रवालजी** तथा **पू. दीपक अग्रवाल** CA हैं, सो Airport पर ही **प.पू. गुरुजी** ने अपने करकमलों से उन्हें ये स्मृति भेंट दी। यहाँ से निकल कर करीब पौने छः बजे तक सभी घाटकोपर के Garodia Palace में रहते **पू. अनिलभाई माणेक** के घर पहुँच गए। अल्पाहार करने के पश्चात् प.पू. गुरुजी, प.पू. भरतभाई तथा प.पू. वशीभाई के सान्निध्य में धुन-भजन का सबने लाभ लिया। रात को प्रसाद लेकर सभी अपने-अपने ठहरने के स्थान पर गए। यूँ तो मुंबई जैसे महानगर में इतने सारे लोगों को ठहराना और उनके लिए वाहन की व्यवस्था करना चुनौतीपूर्ण है, लेकिन निष्ठावान भक्तों की भावना प्रभु स्वीकार करके सुविधा कर ही देते हैं। पू. अनिलभाई माणेक के मिलनसार स्वभाव के वश उनके भाई **पू. हेमेनभाई माणेक-पुत्र पू. वत्सल माणेक**, **पू. जयेश माणेक-पुत्र**

प्रतीक माणेक, मित्र पू. चेतनभाई परमार, पू. डॉ. मिलन सेठ, पू. हिमेन्द्र दुब्बल, पू. परेशभाई पारेख, जिगनेशभाई शाह-पुत्र पू. हितार्थ शाह ने दिल्ली के मुक्तों को अपने घरों में ठहरा कर एवं वाहन चलाने की सेवा करके, इस भगीरथ कार्य के पुण्य में भागीदार बने।

अगले दिन **2 जुलाई** की सुबह प.पू. गुरुजी की पूजा का दर्शन व धुन करने के बाद, सभी घाटकोपर से एक बस एवं कुछ गाड़ियों द्वारा तथा पवई से गाड़ी में **प.पू. भरतभाई, प.पू. राजुभाई ठक्कर, प.पू. माधुरी बहन, पू. आरती बहन** एवं कुछ मुक्त **इगतपुरी** के लिए रवाना होकर दोपहर 3:00 बजे तक JayShin Lake Vaitarna Resort पहुँच गए और सबने दोपहर का भोजन किया। **प.पू. गुरुजी**, संत, सेवक, **प.पू. दीदी** व कुछ बहनें दोपहर 12:00 बजे के करीब मुंबई से रवाना हुए। रास्ते में एक जगह रुक कर प.पू. गुरुजी ने सेंका हुआ भुट्टा ग्रहण करके पुनः एक अनजान व्यक्ति का सहज ही कल्याण किया। तत्पश्चात् दोपहर को **Hotel Grand Parivaar** (Take, Ghoti, Mumbai-Nashik Expy, Igatpuri) में भोजन करने के बाद, 8 किलोमीटर लंबी सुरंग से गुज़र कर सायं 5:30 बजे JayShin Lake Vaitarna Resort पहुँचे। **प.पू. भरतभाई, प.पू. राजुभाई ठक्कर** और अन्य सभी प.पू. गुरुजी के स्वागत हेतु उपस्थित थे। मूसलाधार बरसात व हरियाली से भरपूर वातावरण में सबने अल्पाहार किया। इसी दौरान मुंबई से **प.पू. वशीभाई** भी आ गए, तो सबने खड़े होकर तालियाँ बजा कर Birthday Song गाकर उनका स्वागत किया।

थोड़ी देर गुणातीत स्वरूपों के सान्निध्य में धुन-भजन का लाभ लेने के बाद, आध्यात्मिक रुचि वालों को आंतरिक शांति प्रदान करने वाले, प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर नासिक ज़िले के इस Hill Station को पावन करने पधारे प्रगट प्रभु की गहनता बताते हुए **पू. ओ.पी. अग्रवालजी** ने कहा—

गुरुजी जैसे गुणातीत संतों की कोई भी क्रिया एक objective के साथ और meaningful होती है। गुरुजी के मुंबई विचरण दौरान इगतपुरी के पास पहाड़ पर JayShin Resort में तीन दिन ठहरने का ये जो प्रोग्राम बना, तो किसी ने मुझसे पूछा कि यहाँ इतनी दूर इगतपुरी के interior के Resort में क्यों आए हैं? ***क्या इस स्थान पर काकाजी आए थे?*** *मैंने कहा—नहीं। तब तुरंत ही मुझे विचार आया कि* ***88 वर्ष की उम्र में गुरुजी अपने स्वास्थ्य को भी न देखते हुए आ रहे हैं, तो यह भी एक इतिहास ही बन रहा है-History in making. मुंबई से यात्रा करके गुरुजी इस Resort में आकर जहां-जहां भी उठेंगे-बैठेंगे, वो सभी जगह अब प्रसादी की बन जाएगी। भविष्य में जब भी कोई हरिभक्त यहाँ आने का प्रोग्राम बनाएगा, तो उसे मन में यही होगा कि***

हम गुरुजी की प्रसादी की जगह पर जा रहे हैं। *फिर यहाँ आकर याद करेगा कि गुरुजी यहाँ ठहरे थे, यहाँ बैठ कर सभा की थी इत्यादि।* ***हम जब कई स्थानों पर जाकर स्मृति करते हुए कहते हैं कि यहाँ भगवान स्वामिनारायण, यहाँ शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी महाराज आए थे, इस पेड़ के नीचे बैठे थे... और ऐसे प्रासादिक स्थलों का दर्शन करके प्रणाम भी करते हैं। ऐसे ही यह स्थान भी प्रसादी की भूमि बन रही है और गुरुजी यहाँ जो स्मृतियां देंगे, उन्हें याद करके खूब आनंद होगा।***

तत्पश्चात् रात का भोजन करके सभी विश्राम में गए।

3 जुलाई की सुबह दैनिक कर्म के बाद प.पू. गुरुजी की नित्य पूजा में धुन का सबने लाभ लिया। झमाझम बारिश के कारण dinning hall से बाहर जाना नहीं हो पा रहा था। तो, स्वाभाविक ही **प.पू. दीदी** बोले— *हे काकाजी, थोड़ी देर बारिश बंद करवा दो, ताकि सब थोड़ा बाहर तो घूम पाएँ।*

प.पू. दीदी का बस इतना कहना था कि बरसात कम होने के बाद ठहर गई और तकरीबन दो घंटे स्वरूपों के साथ यहाँ की नूतन स्मृतियों को सबने अपने-अपने कैमरे और मोबाईल फोन में संग्रहित किया। गुणातीत स्वरूप अकसर कहते हैं कि हमारे शुभ संकल्प प्रभु अवश्य सुनते हैं। प.पू. दीदी ने मुक्तों को आनंद कराने की भावना से जो प्रार्थना की, प्रभु ने उसकी अनुभूति कराई। दोपहर का प्रसाद लेने के उपरांत कुछ विश्राम करने गए और कुछ आस-पास टहलने गए। शाम को चाय-कॉफी, अल्पाहार के पश्चात् dinning hall में सभा का आयोजन था। सायं 7:00 बजे **प.पू. गुरुजी, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई तथा प.पू. राजुभाई ठक्कर** पधारे। प्रगट प्रभु की निश्रा में 20 मिनिट धुन के बाद, **सेवक पू. विश्वास** तथा **पू. ऋषभ नरूला** ने गुजराती भजन 'मळ्या हरि रे अमने...' और 'मारा देहभावने भुलाव...' तथा **पू. डॉक्टर पंकज रीयाज़जी** ने हिन्दी भजन 'काका तुम्हारे गुलशन के फूल बन कर खिलना है...' प्रस्तुत करके वातावरण दिव्यता युक्त बना दिया। तत्पश्चात् **प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों** ने निम्न आशीर्दान दिया—

प.पू. वशीभाई (पवई)

...मैं मन में विचार कर रहा था कि यहाँ किसी ने बहुत बड़ा पुण्य, खूब तप किया होगा कि गुरुजी, भरतभाई, अश्विनदादा, आनंदी दीदी, माधुरी बहन और सब दिव्य मुक्त आत्माएँ यहाँ आकर बैठीं हैं। *भरतभाई के birthday पर मुंबई आकर गुरुजी ने surprise दिया था और इस बार without surprise ही surprise है।* ***दिव्य पुरुष जब पृथ्वी पर विचरण करते हैं, तो हमें***

स्मृति देने के लिए ये सब कार्यक्रम arrange करते हैं... गुरुजी का कोई भी action बहुत far reaching और long term होता है...

यहाँ तक आने के लिए धन्यवाद है ओ.पी. व अनिल मासा को और उससे भी ज़्यादा मिलन और दीपक को। *हम देख रहे हैं कि किसी कार्यक्रम में शामिल नहीं हैं, सेवा में लगे हैं। यहाँ तक कि किसी कमरे में फर्श गीला हो गया, तो उसे वो साफ़ कराने की जिम्मेदारी निभा रहे हैं। दीपक एक chartered accountant है and vice president in citi bank. पर, सेवकभाव का उदाहरण है... लोनावाला में अब इतनी buildings और crowd हो गया है कि एक साथ इतने सारे लोगों के लिए जगह नहीं मिलती। वहाँ सबको अलग-अलग ठहरना पड़ता। बंगले के लिए हमारे किरीटभाई से भी बात की, पर कुछ हो नहीं पाया। एकदम tension की बात थी, लेकिन मैंने देखा की मिलन और दीपक कहीं भी गुस्सा नहीं हुए। शांति और प्रेम से सब कुछ accept किया। फिर मुंबई घूमने की बात आई, तो उसमें भी कई changes हुए, पर दोनों एकदम balanced रहे कि भगवान कर रहे हैं।* ***हम अकसर कहते हैं कि सब भगवान कर रहे हैं, वो मैंने इनमें live देखा। तो, इसके लिए दीपक और मिलन खूब अभिनंदन!***

...गुरुजी जैसे बड़े पुरुष भक्तों को दर्शन कराने-स्मृति देने के लिए जहाँ-जहाँ जाते हैं, वहाँ संजोग ambience, वातावरण अपने आप बन जाता है। ये दिव्य स्मृति आध्यात्मिकता का बहुत बड़ा गहरा संदेश है, इसे याद रखें। जो प्रकृति-हठीले स्वभाव स्वयं जीत नहीं सकते, वो ऐसे बड़े पुरुषों की दिव्य स्मृति से हो जाता है। काकाजी ऐसी स्मृति देने के लिए लोनावाला, गणेशपुरी, नासिक, देवलाली, विहार लेक, उत्तर भारत में कुरुक्षेत्र, मसूरी ऐसी अलग-अलग जगह ले जाते थे।

हमारी जो growth है, वो soul की growth है। पर, ***एक एकांतिक बनना बहुत मुश्किल है... तो, महाराज पृथ्वी पर जब अपने गुणातीत संत को साथ लेकर प्रगट हुए हैं, तो ऐसे संतों के साथ जाना, उन्हें follow करना, उनकी आज्ञा पालना, उनकी अनुवृत्ति समझना।*** *समाधि से जो नहीं होता, उससे ज़्यादा काम होता है।* ***काकाजी ने अपने जीवन काल में ऐसे एकांतिकों को तैयार करके prove कर दिया। इसका मैं proof देता हूँ। जब मैं कल गुरुजी के पास आया और उनसे कहा कि आपने दोपहर को आराम नहीं किया, तो थोड़ा आराम करेंगे? वे बोले—नहीं-नहीं, इन सब मुक्तों का दर्शन किया, वो ही मेरा आराम है। सबके दर्शन करने से मैं fresh हूँ। उन्होंने यह formality से नहीं कहा, वे ऐसा जीते हैं। अपना मन छोड़ कर जीना, वो करोड़ों-अरबों राज्यों को छोड़ने से भी ज़्यादा है...***

*गुरुजी के संबंध वाले बच्चे भी कैसा ऐसा जीवन जीते हैं! कल रात को सब बच्चे swimming pool नहाने गए। बात तो बहुत छोटी है, पर ये एकांतिक की बात है कि प्रसंग पर अपना दोष देखना। **सुबह वरुण यादव ने गुरुजी से कहा कि I am sorry, आपसे पूछे बिना हम रात को swimming pool में स्नान करने चले गए। ये कोई बड़ी बात नहीं है और गुरुजी भी समझते हैं। पर, गुरुजी ने उससे कहा कि तुम भरतभाई को बताओ और वो तुम्हें जो प्रायश्चित दें, वो कर लो। भरतभाई ने उसे कहा कि आधा घंटा धुन करो। तो उसने धुन करके 25 उठक-बैठक की। ये बात छोटी है, पर हम नहीं कर पाएंगे। हमें ऐसा होगा कि I am right... where I am wrong? But He said sorry that it was his mistake. तो ये lateral growth है कि जहाँ तुम्हारी चेतना का विकास हुआ...***

***ओ.पी. अग्रवाल भी इतना पढ़ा-लिखा है, सब कर सकता है, पर वो छोड़ कर भक्तों की सेवा करता है। अनिल मासा का घाटकोपर में खूब दबदबा है, लेकिन सब छोड़कर भक्तों की सेवा करते हैं।** ये काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, साहेब, अक्षरविहारीस्वामीजी, गुरुजी, दिनकरदादा, भरतभाई का कमाल है कि ऐसे पात्र तैयार किए...*

*भजन की पंक्ति है—पोकारूं त्यां आवे तू... तो पल-पल ऐसा भजन-प्रार्थना करके बल लें कि अपने आपको सुधारना है, प्रगति करनी है, ब्रह्मरुप होना है। दरअसल, **महाराज ने पृथ्वी पर अपने प्राकट्य का हेतु बताते हुए कहा है कि सब अवतार तो कार्य कारण से अवतरित हुए हैं, मेरा प्रगटीकरण तो जीवों को ब्रह्मरुप करने के लिए है...***

आज अक्षरधाम की सभा है। ओ.पी. अग्रवाल के ज़रिए इस resort का कल्याण हो गया। यहाँ ऐसी पधरावनी, सभा, अक्षरधाम की बातें होना कहाँ possible है। यहाँ जो भी आयेगा उसका कल्याण होगा...

हे गुरुजी, हम आपकी मरज़ी-रुचि समझ कर पल-पल ऐसा जियें, भूल न जायें। आपका style है सबको आनंद कराना, सुखी करना... *सुखपाल में बिठा कर अक्षरधाम का सुख आपने दिया है। **ऐसा सुख लेते हुए सब मिल कर काकाजी-पप्पाजी का काम आगे बढ़ाते रहें, क्योंकि उससे ही काकाजी की पहचान है। 'हमें देख के हर कोई सोचे, कैसे होंगे काकाजी!'** ऐसा हमारा जीवन बने-काकाजी का प्रकाश बन कर हम जिएँ, वही प्रार्थना।*

प.पू. गुरुजी

हमें जो काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, साहेबजी और अक्षरविहारीस्वामीजी जैसे गुणातीत स्वरुपों की eternal security की गोद में बिठा दिया है, उससे बढ़कर कोई आनंद नहीं है और ये परंपरा आज तक जारी है। आगे भी इसी तरह फली-फूली जारी रहेगी। हमारे बाद भी जो

generation होगी, वो भी इसी गोद का आनंद-security लेती रहेगी, ये बात हम भूलें नहीं। *काकाजी हमें बार-बार कहते थे—ये constant and continuous process है। Niagara का जो प्रवाह बहता रहता है। लाखों टन पानी कहाँ से-कैसे आता है, कोई समझ नहीं पाता, पर वह चलता ही रहता है। इस तरह* ***हमें भी प्रभु का आनंद, ऐसे संतों-भगवत्स्वरूप संतों द्वारा continuously मिलता रहता है और लगता है कि ये कभी ख़त्म होने वाला ही नहीं है। ये भरोसा नहीं, क्योंकि वह तो टूट भी सकता है। पर, ये मन से परे का विश्वास है, जो हमें काकाजी, पप्पाजी और स्वामीजी देकर गए हैं। उसे हम संजोए रखें और वो आगे जो generation आ रही है, इनके जीवन को भी उस विश्वास से पूरिपूर्ण करें कि महाराज ने जो स्वयं आशीर्वाद दिया है कि भरतखंड के अंदर वे स्वयं या अपने गुणातीत संत द्वारा मानव स्वरूप में अखंड विचरते रहेंगे। गुणातीत भाव में रहते हुए संतों और मुक्तों के द्वारा आज तक वो परंपरा जारी है।*** *हमें जो अनुभव हो रहा है, वो continuous रहेगा, तो ब्रह्मानंद करते रहे। एक दूसरों के सुहृद बनकर चलते रहें। यही समझदारी रखते हुए, सभी क्रिया-कलाप करते हुए हम ब्रह्मानंद करें, करायें और इसे continuous रखने का mechanism set जो हुआ है, उसे और तेजस्वी बना कर speedy-fast बनायें... साहेब तो अभी ये process लेकर ही बैठे हैं। तो, वो हमारे जीवन के अंदर नई रोशनी ले आएँ। नई रोशनी क्या? तो, सूर्य समान रोशनी हमें बख़्शीश में दिलवाएँ।* ***ऐसे स्वरूप एक-एक सूर्य हैं। वे चंद्र नहीं हैं, जिनकी कला बढ़ती-घटती रहती है। सूर्य समान यानी जो भी उनके सामने आए, उसे अपना गुण देकर अपने अंदर समाहित कर लें। मैं केवल सूर्य समान विभूति नहीं कह रहा, पूरा समाज ही एक सूर्य का समाज है, तो उसमें हम निमग्न-ओतप्रोत होकर एक-दूसरे के पूरक बन जाएँ,*** *यही प्रार्थना।*

प.पू. भरतभाई (पवई)

सौम्या के birthday celebration की जय... इतनी ही बात समझनी है कि जो गुणातीत संत-पुरुष हमें मिले हैं, उनमें दिव्यभाव और निर्दोषबुद्धि रख कर, उनके वचन से हमारा जीवन सुख, आनंद और मस्ती में बीते। ***काकाजी भी nutshell में 3 बात बताते थे कि ये तीन बात पहले होनी चाहिए...***

1. ***दुनिया-universe का कोई controller है, जो हम भगवान स्वामिनारायण को मानते हैं।***
2. ***वे हमें ऐसे गुणातीत स्वरूपों के द्वारा मानव स्वरूप में मिले।***
3. ***वे जो मिले हैं, वे दिव्य, निर्दोष और कल्याणकारी हैं।***

ये जब माना जाए, तो उसके बाद सब साधन काम आते हैं। अगर ये नहीं माना, तो आप कितनी भी सेवा-सत्संग करो, उसका कोई फ़ायदा नहीं है...

ऐसे गुणातीत संत मिले हैं, वे हमसे जो कराएँ उसमें सब कुछ आ गया... वो कुछ भी करें, उसमें हमें कुछ भी दुविधा न हो कि क्या होगा? कैसे होगा? ऐसा क्यों कर रहे हैं? हम पर करुणा करके वे दृढ़ कराएँगे... ***हम अपना हठ, मान, ईर्ष्या का भाव छोड़ कर केवल वे किसमें राज़ी होते हैं, यूं संप, सुहृदभाव, एकता और कुटुंबभाव से जीवन जिएँ।*** *ये करते रहेंगे, तो वे राज़ी, राज़ी और राज़ी ही हैं।*

ऐसी ***प्रसन्नता के पात्र हमारे वशीभाई का birthday है। जब से वे काकाजी के पास आये, तब से जीव में बैठ गया कि काकाजी मेरे लिए सब कुछ है। वे जो कहें वो करना है... उनके छोटे से छोटे वचन का उन्होंने पालन किया।*** *वे जो कहें वो सत्य... बड़े संत पुरुष कुछ बोले— हाँ, हो जाएगा, ऐसे सेवक के सेवक बन कर वे रहते हैं। सेवा-भावना बहुत उत्तम है। कोई भी भक्त बोले कि मेरा ये काम करना है, तो तैयार हो जाते है कि कर देंगे।* ***काकाजी ने हमें ऐसा precious रत्न दिया है। हम उनके साथ अपना संबंध बनाये रखें, उनको राज़ी कर लें... ऐसे गुणातीत संत हमारे में कोई कसर रहने नहीं देंगे, तो हम निश्चिंत होकर हमेशा आनंद करते रहें*** *यही प्रार्थना।*

सभा का समापन करते हुए **पू. ओ.पी. अग्रवालजी** ने निम्न आशीष याचना की—

आज जो भी आनंद हमें महसूस हो रहा है, उसका मैंने analyse किया, तो उसके चार कारण हैं—

1. *काकाजी ने खूब परिश्रम से जो constant and continuous ecosystem develop किया, वो इन स्वरूपों द्वारा काम कर रहा है, उसका आनंद है।*
2. *आज गुरुजी यहाँ विराजमान है।*
3. ***सुहृदभाव-मिलजुल कर काम करने का सिद्धांत गुरुजी को बहुत पसंद है। जो भी आनंद आ रहा है, वो उसका है। जो कमी रह गई होगी, वो हमारे मिलजुल कर न करने की कसर के कारण हो रही होगी। तो प्रार्थना है कि हम हमेशा ही मिलजुल कर सुहृदभाव से सेवा करें।*** *काकाजी भी कहते थे— ये कोई अकेले हाथ का काम नहीं हुआ, सब साथीदारों ने मिल कर किया।* ***वशीभाई ने भले मेरा नाम बोला, पर joint effort है। किसका नाम लें और किसका न लें। ख़ास धन्यवाद तो गुरुजी को कि इतनी आयु में इतने भक्तों को लेकर न केवल मुंबई तक आए, लेकिन एक ऐसी जगह पर आए, जहाँ ऊबड़ खाबड़ रोड और traffic के कारण कितना टाइम लगता है। जितना भी धन्यवाद करें वो कम है।***
4. *दिल्ली से advanced team में* ***गार्गी, नित्या, केसर, निमाई*** *जो आए, उसके कारण हम सबको एक ऐसा वातावरण मिला है। उनका क्या धन्यवाद करें, वे ख़ुद हमारे part हैं।*

हम सब मिल कर काकाजी-गुरुजी का धन्यवाद करें कि हमें आपने ऐसा संबंध दिया।

आज अक्षरनिवासी **पू. पुरी अंकल** की छोटी पोती, **पू. ओ.पी. अग्रवालजी** की छोटी नाती, **पू. आशिष-पू. प्रियंका पुरी** की छोटी बेटी **प्यारी सौम्या** का जन्मदिन था। इस बाला को जीवनभर के लिए स्मृति देने हेतु श्री ठाकुरजी को केक अर्पण करके, **प.पू. दीदी** के सान्निध्य में आनंद किया। फिर रात्रि का भोजन करके सब विश्राम करने गए।

कार्यक्रम के अनुसार **4 जुलाई** की सुबह नाश्ता करने के बाद सबको मुंबई के लिए रवाना होना था। नित्य पूजा में धुन व नाश्ता करके प.पू. गुरुजी, संतगण, कुछ सेवक, प.पू. दीदी व कुछ बहनें पू. ओ.पी. अग्रवालजी के मित्र **पू. चंद्रशेखर पाटिलजी** के Resort The Vineyard Villas (TRE AQUA) Igatpuri गए तथा बस से जाने वाले मुक्तों को सीधा **Hotel Grand Parivaar** पहुँचने के लिए कहा क्योंकि वहीं सबको दोपहर का भोजन करना था। परंतु, पू. चंद्रशेखर पाटिलजी का अत्यधिक भाव और उनके Resort के आस-पास की सुंदरता व शांत वातावरण को देख कर प.पू. गुरुजी ने बस वाले मुक्तों को भी वहाँ बुला लिया। यहाँ चाय और फल का प्रसाद लेकर सब Hotel Grand Parivaar पहुँचे और दोपहर का भोजन करके मुंबई-पवई के लिए रवाना हुए। करीब साढ़े पाँच बजे पवई पहुँचे। प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, योगेश्वर संतों तथा हरिभक्तों ने हर्षोल्लास से प.पू. गुरुजी एवं सभी का स्वागत किया। थोड़ी देर सबको दर्शन देने के उपरांत **श्री ठाकुरजी के हॉल का विस्तार करते खंड का उद्घाटन** करके, **प.पू. गुरुजी** ने यात्रा की थकान के कारण घाटकोपर-पू. अनिलभाई माणेक के घर के लिए प्रस्थान किया। परंतु, **पू. सुहृदस्वामीजी** के साथ संतों-मुक्तों ने संध्या आरती का लाभ लेकर अल्पाहार किया। तत्पश्चात् छोटी सभा हुई, जिसमें **पू. सुहृदस्वरूपदासस्वामीजी** ने निम्न माहात्म्यगान किया, **प.पू. भरतभाई एवं प.पू. वशीभाई** ने आशीर्वाद दिया तथा संतों के जाने के बाद **प.पू. दीदी** ने आशीष याचना की...

पू. सुहृदस्वरूपदासस्वामीजी (दिल्ली)

*1981 के ऑगस्ट में मैंने पहली बार ताड़देव का दर्शन किया। तब से **काकाजी तथा कांति काका की गोद में रहे और आज भरतभाई-वशीभाई की गोद में, उनके सान्निध्य में रहने और आशीष प्राप्त करने का मौका मिला।** मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ। ताड़देव के प्रथम दर्शन करने के बाद, भरतभाई, वशीभाई, बापू, राजूभाई भट्ट, रमेशभाई—ये सब जब दिल्ली आते थे, तो उनके दर्शन-समागम का लाभ मिलता था। उनका हमेशा प्रयास था कि उनकी बातों से काकाजी की महिमा हमारे जीवन में कैसे दृढ़ हो जाए। उन बातों से मेरे जीवन का परिवर्तन हुआ। **ऐसे ही आशीर्वाद हमेशा हम सब पर जीवनभर बरसायें और हम सबको अंतर से गुणातीतभाव वाले साधु बना कर, हमारी कसर पूरी करके आगे ले जाएँ**—यही भावना।*

प.पू. भरतभाई (पवई)

आज का दिन बहुत बढ़िया। गुरुजी ने ऊपर हॉल का उद्घाटन किया। पिछली बार गुरुजी आए थे, तो आज जहाँ हम बैठे हैं, उसे connect करते हॉल का उद्घाटन उन्होंने किया था...

पवई मंदिर का ये जो नया project चल रहा है, वह सामान्य बात नहीं है, पर प्रभु के बल से सब होगा। *अपने डॉ. महेन्द्र मर्चंट दादर मंदिर गए थे, उन्हें वहाँ कोठारीस्वामी से मिलना था। 1-2 घंटे वे वहाँ रहे और फिर निकलते समय book stall से* ***'लिखितन् योगीजी महाराज'*** *पुस्तक ली। Car में बैठ कर घर जाते हुए वह सहज ही खोली, तो जो पन्ना आया उसमें लिखा था—* ***पवई में बड़ा केंद्र बन रहा है, पानी की टंकी बन रही है, संस्कृत की पाठशाला होगी... वह जान कर हमें ऐसा हुआ कि हमें यह करना है और भगवान ही करेंगे।*** *सबका सहयोग और शुभ भावना है। तो, मेरा कहना है कि* ***यदि और कोई सेवा न हो सके तो कोई बात नहीं, पर एक माला फिराना कि ये केन्द्र अच्छी तरह से हो जाए।*** *इस भाव से माला करेंगे, तो भी प्रभु ग्रहण करेंगे...*

3 february 2027 में इसका उद्घाटन करना है। *हम शायद होंगे कि नहीं होंगे, पर ये काम तो आगे चलने ही वाला है, ये बात पक्की है। इसका आरंभ करने से पहले वशीभाई, मितेशभाई हम सब दिल्ली गए थे, तब साहेब, गुरुजी और संतों ने भी ईंटों का पूजन किया। फिर यहाँ आकर भी संतों ने पूजन किया था।* ***भक्तों का भजन काम करता है। उस भजन में हमें 'स्व' का भाव छोड़ना है कि हे महाराज, आप ही उपायभूत होना।*** *सबको बल मिले, कोई भी मुश्किल, तकलीफ़, problem है, तो वो उदासी दूर हो जाए। सब सुखी हों ऐसी महाराज और सभी गुणातीत स्वरूपों से वशीभाई के प्रागट्य दिन पर प्रार्थना करते हैं... हमसे कोई ग़लती हो जाए, तो हे महाराज आप माफ़ करना और उसे सुधार लेना...*

प.पू. वशीभाई (पवई)

...गुरुजी इगतपुरी का सफ़र करके आए और थके होने के बाद भी कहा कि ये भक्तों का दर्शन करके मैं फ्रेश हूँ...

पवई मंदिर का जो project चल रहा है, इससे भी बड़ा जो project है, वो कल गुरुजी ने इगतपुरी में आनंदोब्रह्म शिविर में बताया कि हमारे जीवों को ब्रह्मरूप करना है। ये बहुत ज़रूरी बात हुई थी कि करोड़ शास्त्र पढ़ना या करोड़ों रुपिया कमाना भी कुछ नहीं है। पर, अपने मन को मार कर सत्पुरुष के चरणों में रहना, वो मुश्किल है। *आप सब लोग ये करते हैं, इसलिए आपको धन्यवाद है...* ***हमारे सुहृदस्वामी भी परिपक्व साधु हैं...***

वचनामृत में महाराज के समय का सब पढ़ते हैं, गुरुजी की style भी ऐसी है... दिल्ली मंदिर के पुराने हरिभक्त बच्छराज जब धाम में गए, तो एकदम सेवकों से बोले मुझे उसे अंतिम विदाई देने जाना है और घाट पर जाकर उन्हें खुद अग्नि दाह दिया। ***स्वामिनारायण भगवान की 'भक्त सहित भगवान'-अक्षरपुरुषोत्तम doctrine की जो philosophy है, उसे शास्त्रीजी महाराज, योगी बापा, काकाजी ने विकसित किया।*** *पर, एकदम छोटे भक्त का महिमा समझने का बहुत मुश्किल है। जैसे गुरुजी भीखूभाई की महिमा समझ कर उन्हें अहमियत देते हैं। काकाजी के पास ऐसे ही छोटा-सा भक्त किशोर दरबार आता था। पर, काकाजी उसका भी सेवक बन जाते थे। एक बार वो काकाजी की फोटो खींचने आया, पर उसमें रोल नहीं था। तो काकाजी बोले—कोई बात नहीं, कल कैमरे में रोल डाल कर आना। ये बोलना आसान है, पर इस level पर आना बहुत मुश्किल है।* ***प्रगट सत्पुरुष की मरज़ी के मुताबिक जीवन जीना साधना मात्र का सार है। शास्त्रीजी महाराज से किसी ने कहा कि एक वाक्य में श्रीजी महाराज के वचनामृत का सार बताओ, तो उन्होंने कहा कि यथार्थ स्वरूपनिष्ठा समझ कर आज्ञा का पालन करो यानी सर्वप्रथम आज्ञा है। दिल्ली मंडल के सब सुबह-शाम गुरुजी की आज्ञा के लिए ऐसे ही तत्पर रहते हैं...***

काकाजी ने सचमुच हम पर बहुत बहुत कृपा करके ऐसे गुरुजी, दिनकरभाई और भरतभाई की भेंट दी। *ये हम पर उनका सबसे बड़ा उपकार है। महाराज ने अपने प्राकट्य के चार उद्देश्य बताए—मंदिर, साधु, आचार्य और शास्त्र। उसमें साधु द्वारा बताया कि एक साधु अन्य चार साधु बना सकता है और* ***काकाजी-पप्पाजी ने तो ऐसे साधु बनाने की factory खोली, जो most-most-most difficult बात थी। सत्संग तो मिल जाता, पर हम कितने भाग्यशाली हैं कि प्रकृति का रूपातंर करने वाले ऐसे प्रगट का जोग दिया...***

...जो भक्त मानव स्वरूप में रहते भगवान को पहचानता है, उनकी आज्ञा का पालन करता है, अनुवृत्ति पालता है, सेवन करता है—वो भक्त बहुत-बहुत बड़ा है। आप सब ऐसे मुक्त आये हैं, तो आशीर्वाद देकर जाना कि काकाजी का काम उनकी तरह, उनकी रीत से, उन्हें राज़ी करने के लिए होता ही रहे, होता ही रहे...

प.पू. दीदी

बहुत सालों से मैंने देखा है कि भरतभाई और वशीभाई दोनों के प्रागट्य दिन के लिए गुरुजी बहुत ज़्यादा excited होते हैं... गुरुजी की भावना ये रहती है कि वो ख़ुद तो इन दोनों पुरुषों

में काकाजी का दर्शन करते ही हैं कि काकाजी उनके द्वारा प्रगट है, लेकिन हम सबको जो साथ में लाते हैं, वो वही महिमा का दर्शन कराने के लिए लाते हैं। *तो, उस महिमा में वे तो अखंड रहते ही है, लेकिन हमें भी रखना चाहते हैं।* ***बड़े सत्पुरुषों का तो केवल एक ही उद्यम होता है कि तुम महिमा समझते हो जाओ। हम में जो महिमा की कसर है, वो वे टालना चाहते हैं।*** *भरतभाई ने पवई मंदिर के जिस project के बारे बताया, उससे कइयों के मन में ऐसा होता होगा कि ये बनाना क्यों ज़रूरी है? लेकिन* ***जब-जब सत्पुरुष मानव स्वरूप में धरती पर आते हैं, तब-तब कुछ तो ऐसा project खड़ा करते हैं कि जिसमें जीव का दिमाग़ काम ही न करे।***

भगवान कृष्ण को हम सब अब पूजते हैं, लेकिन जब उन्होंने पांडवों और कौरवों के बीच कुरुक्षेत्र का युद्ध करवाया होगा, तब कितनों ने उन्हें दिव्य माना होगा? यही कहा होगा कि इतनी हिंसा कराने की क्या ज़रूरत थी? लेकिन जितनों ने उन्हें उस समय दिव्य माना, वे भवसागर तर गए। ऐसे ही ***ये मंदिर का काम तो होना ही है, क्योंकि काकाजी का संकल्प है।***

ब्रह्मप्रवाह में काकाजी ने गुरुजी को दिल्ली मंदिर के बारे में भी लिखा है कि ये तो देखते ही देखते हो जाएगा और देवी-देवता कर जाएँगे। इसलिए ये काम हम यदि मायिक दृष्टि से देखेंगे, तो ऐसा होगा कि ओहो, कैसे होगा? कैसे करेंगे? लेकिन ये काकाजी का काम है, यदि हम नहीं करेंगे तो देवी-देवता आकर कर जाएँगे। तो हम यदि अहो, बहुत अच्छा काम हो रहा है, कितना बढ़िया काम हो रहा है—ऐसा सद्भाव भी रखेंगे, तो भी काकाजी हमारी प्रगति करा देंगे। हमारे इतने प्रयत्न के बाद भी हमारे जो स्वभाव टलते नहीं होंगे, वे टल जाएँगे...

मन में दिव्यभाव का एक संकल्प करके जाएँ कि हमें रोज़ ये बात याद करनी है कि ये बहुत भव्य काम हो रहा है और हमें इसमें भजन करके अपनी सेवा देनी है...

गुरुजी का कार्य तो दिल्ली में हम रोज़ देखते ही हैं कि एक second भी वे काकाजी की मूर्ति से अलग नहीं होते। *हमें ऐसा होता है कि सचमुच हम कभी अपने गुरु को ऐसा जीवंत रख पाएंगे?* ***ऐसे भरतभाई-वशीभाई को देखकर काकाजी बहुत राज़ी होते होंगे कि सच में मेरे बच्चों ने मेरा वारसा रखा।*** *आज ख़ास प्रार्थना करनी है कि हमारा स्त्री का देह है। हमें अपनी स्त्री प्रकृति का ख्याल भी है। लेकिन आप लोग पूर्ण मिले हैं, तो आप हमारे लिए संकल्प करना कि इसी जन्म में हमारी पूर्णाहुति हो जाए और आप लोग जो कराना चाहते हो, वैसा करके हम काकाजी, पप्पाजी, गुरुजी—आप सबका नाम रोशन कर पाएँ...*

सभा संपन्न के उपरांत महाप्रसाद लेकर कुछ वहीं अपने गंतव्य स्थान पर गए और जो पू. अनिलभाई माणेक के घर या उनके घर के आस-पास ठहरे थे, वे घाटकोपर लौट आए। आस-पास रहने वाले मुक्तों में से आठ बहनें पू. अनिलभाई के मित्र पू. डॉ. मिलन के खाली फ्लैट में ठहरी थीं। इगतपुरी जाते हुए उन बहनों ने पू. अनिलभाई के बड़े सुपुत्र पू. मिलन माणेक को फ्लैट की चाबी सौंपी, ताकि रास्ते में कहीं खो न जाए। अब जब उन्हें फ्लैट में जाना था, तो पू. मिलनभाई से चाबी मांगी। इतनी सारी व्यवस्थाएँ करने में पू. मिलनभाई भूल गए कि चाबी कहाँ रखी थी। सो, करीब आधा-पौने घंटे तक उन्होंने घर में हर जगह और गाड़ियों में भी चाबी ढूँढी, पर नहीं मिली। आख़िर सोचा कि चाबी बनाने वाले को बुला कर किसी तरह खुलवाते हैं या ताला तोड़ते हैं। रात के साढ़े बारह बजे तक पू. मिलनभाई इसी उधेड़बुन में रहे कि किस तरह इन बहनों के लिए रुकने की व्यवस्था करें। फिर जिस Shree Kutchi Visa Jain Sanatorium में कुछ मुक्तों को उन्होंने रुकवाया था, वहाँ अक्षरज्योति की चार बहनों के ठहरने की व्यवस्था की। जगरांव की पू. जसु व पू. चारु को नज़दीक के एक होटल के कमरे में ठहराया और अक्षरज्योति की दो बहनों को अपने घर लेकर आए। प.पू. गुरुजी कुछ संतों-सेवकों-हरिभक्तों तथा प.पू. दीदी व कुछ बहनों के साथ यहीं पर ठहरे हुए थे।

1 से 4 जुलाई के दौरान अधिकांशतः प.पू. गुरुजी ने सफ़र ही किया, इसलिए थकान होनी स्वाभाविक थी, परंतु भक्तों को आनंद-ज्ञान गोष्ठी द्वारा 'ब्रह्म' में निमग्न रखने के लिए वे कभी भी अपनी आयु या देह नहीं देखते। सो, जब पू. मिलनभाई दो बहनों को लेकर घर पहुँचे, तब प.पू. गुरुजी मुक्तों के साथ बैठ कर दादर मंदिर-अक्षरभुवन इत्यादि की पुरानी स्मृतियाँ कर रहे थे।

एक मुक्त ने सहज ही प.पू. गुरुजी से पूछा— *कल सुबह आप कितने बजे जागेंगे?*

तुरंत ही **प.पू. गुरुजी** बोले— *जब आँख खुल जाएगी।*

और फिर... भजन की महत्ता बताते हुए गुरुहरि काकाजी महाराज ने भक्ति मार्ग पर चलते साधकों को जो मार्गदर्शन दिया है, उसे स्मरण करते हुए बोले— ***काकाजी ने सब साधकों को सिखाया कि रात को सोने के बाद बीच में अगर washroom जाने के लिए उठो, तो 15 मिनट बैठ कर धुन करो। फिर यदि नींद आती हो, तो सो सकते हो। लेकिन सुबह जब स्वाभाविक रूप से आँख खुल जाए, तब समझना कि उतनी ही नींद शरीर के लिए पर्याप्त है। यदि फिर दोबारा सोओगे, तो वह आलस्य है...***

यह बात पूरी होने के बाद जब प.पू. गुरुजी को चाबी खोने के बारे में बताया, तो उन्होंने सेवक से कहा कि ये प्रसंग पत्रिका में लिखना। फिर नई चाबी बनवाने के बारे में कल सुबह सोचेंगे, ऐसी बात करके सब सोने जाने लगे कि एकदम **प.पू. गुरुजी** बोले– ***गाड़ी के अंदर डॉईविंग सीट के पास जो खांचा होता है, वहाँ पर देखो उसमें है।***

सबने कहा– *मिलनभाई ने सारी गाड़ियों में देख लिया है, कहीं नहीं मिली।*

लेकिन, **पू. मिलनभाई** बोले– *गुरुजी कह रहे हैं, तो एक बार देख आता हूँ।*

पू. मिलनभाई पार्किंग में गए व दस मिनिट बाद ही हाथ में चाबी लेकर लौटे और बताया– *दो एक जैसी Ertiga Cars में से जिस गाड़ी में उन्होंने नहीं देखा, वहीं से उसी जगह पर चाबी मिली जहाँ गुरुजी ने बताया था।*

सबने खुशी से शोर मचाते तालियाँ बजाईं और किसी ने कहा– *गुरुजी ने अंतर्यामी रूप से बता दिया।*

तब परभाव अवस्था में **प.पू. गुरुजी** बोले– ***प्रतीति तो कितनी कराई हैं, लेकिन अंतर्यामी मानते कहाँ हो तुम!***

उसी समय मोगा के पू. हेमंत की घड़ी खोने की बात चली, तो वह भी तभी मिल गई। प.पू. गुरुजी के लिए बनाए भजन की पंक्ति है– **हंसी-खेल में जीव ब्रह्मरूप बना दें, दिए हमको ऐसे गुरु काकाजी ने**... ये एहसास करवा कर और फिर सबकी प्रार्थना सुन कर देर रात को करीब 1:40 पर विश्राम करने गए।

5 जुलाई की सुबह पू. अनिलभाई माणेक के घर नाश्ता करके कुछ मुक्त आस-पास खरीदारी करने गए तथा उनके ही द्वारा आयोजित **'सेठ वीरचंद धनजी देवशी राष्ट्रीय शाला'** में दोपहर का भोजन करने गए। इसी दौरान, **प.पू. दीदी** कुछ बहनों के साथ, गुरुहरि काकाजी महाराज के संबंध वाले पुराने जोगी अक्षरनिवासी **पू. गोरधन कापड़िया** की सुपुत्री **पू. पुष्पा बहन** के घर पधरावनी करने गए। यहाँ धुन-प्रार्थना करके पू. अनिलभाई के घर लौटीं। आज शाम को **'सेठ वीरचंद धनजी देवशी राष्ट्रीय शाला'** के auditorium में ही **प.पू. वशीभाई के 73वें प्राकट्य दिन का पर्व** मनाने वाले थे। सायं 5:30 तक वहाँ पहुँच कर अल्पाहार करने के पश्चात् auditorium में जाकर सब बैठे।

करीब छः बजे सभा की शुभ शुरुआत **पू. हितेनदासजी** तथा **पू. कुशभाई** ने धुन-भजन से की। **पू. मननदासजी** ने सभा का संचालन करते हुए सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत

किया। तत्पश्चात् प्रासंगिक उद्‌बोधन की श्रृंखला में निम्न मुक्तों ने प.पू. वशीभाई द्वारा हुए दिव्य अनुभवों को बता कर भक्ति अदा की—

पू. विलयभाई (दक्षिण गुजरात-कलगाम)

*...मेरे मुंह से किसी के आगे सहज ही निकल गया कि **यह दोनों (भरतभाई-वशीभाई) बहुत बड़े संत हैं और इनका साथ कभी छोड़ना नहीं है। दरअसल, तो उन्होंने कभी भी हमारा साथ नहीं छोड़ा और न ही छोड़ेंगे**...*

*हमारी पात्रता नहीं थी फिर भी वशीभाई ने मुझे, ओम, संदीप को spiritually आगे बढ़ाने के लिए ख़ुद महापूजा सिखाई। रोज़ रात को बारह-बारह बजे तक बैठ कर धुन, भजन, सुनृत (योगी गीता) का पठन, काकाजी की पसंद के वचनामृत के मुद्दे इत्यादि बोलते और हमें भी बुलवाते, ताकि याद हो जाएँ। आज प्रार्थना है कि वे इतनी मेहनत करते हैं, तो हम वैसा जी सकें। **वशीभाई हर पल काकाजी का प्रकाश बनकर ही जीते हैं, हम जुगनू बनकर आपका प्रकाश फैलाते रहें**...*

पू. समाधानभाई (संभाजी नगर)

*...कई बार ऐसा लगता है कि वशीभाई हमें भूल गए, पर ऐसा नहीं है। वो पूछते रहते हैं कि कैसा-क्या चल रहा है? **मुझे उन्होंने कहा कि तेरा काम हो जाएगा, तो वो सच में हो गया। हमें बस 'हाँ' में 'हाँ' करनी है**...*

***अपनी कोई भी परेशानी उन्हें बताएँ, तो positive energy automatically आ जाती है, motivation मिलता है।** चिंतामणि से जो माँगोगे वो देगी, चाहे भला हो या बुरा। पर, **ये संत चिंतामणि से अधिक हैं। हमारे हित में जो होगा, वे सिर्फ़ वो ही देंगे।** तो, हमारी कोई मंशा संत जब पूरी न करें, तो सोचना कि वो मेरे श्रेय में नहीं होगी। स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना है कि हम तो बालक हैं, हम में कोई समझ नहीं है। आप जैसा चाहो, वैसा हमसे वर्ता लेना।*

पू. अक्षतदासजी (संभाजी नगर मंदिर के सेवक)

*सभी संतों, भक्तों व मुक्तों का दर्शन करके बहुत आनंद हो रहा है... **गुरुजी आ गए तो आनंद में चार चांद लग गए। कई बच्चों और युवकों के जीवन में वशीभाई ने बहुत काम किया। कठिनाइयों में ऐसे स्वरूपों और भगवदी का संपर्क हो जाए, तो तुरंत ही हम दोबारा आनंद में लौट सकते हैं**... वशीभाई से जब मेरा संपर्क हुआ, तो उन्होंने motivate करते हुए कहा—हमें छोटी सोच नहीं रखनी, बहुत पढ़ना है। वशीभाई हमारे सभी बच्चों और युवाओं की शैक्षणिक*

*और व्यावहारिक प्रगति पर बहुत focus करते हैं और साथ ही उनका आध्यात्मिक level कैसे बढ़े, उसकी भी प्रेरणा देते रहते हैं... **वशीभाई जो बीज डाल रहे हैं, वो आगे जाकर वृक्ष बनेंगे।** हम भाग्यशाली हैं कि संतों का ऐसा संबंध मिला... अब जो उसका ज़्यादा लाभ उठा लेगा, वो ज़्यादा सुखी हो जाएगा। आज ये प्रार्थना है कि हम ऐसी भावना रखें और स्वरूपों के अनुग्रह से सर्वोच्च आध्यात्मिक स्थिति पा सकें...*

मुक्तों द्वारा संबोधन के दौरान प.पू. गुरुजी auditorium में पधारे। तब सबने खड़े होकर तालियों से उनका अभिवादन किया। तत्पश्चात् **पू. हेमंतभाई मर्चंट** ने अपनी अलंकारिक भाषा में पवई के सभी मुक्तों की ओर से निम्न प्रकार भाव अर्पण किया—

परम पूज्य वशीभाई

सभी गुणातीत स्वरूपों के लाड़ले,
सभी संतों और संत भाइयों के सखा,
सभी संत बहनों और भाभियों के प्रिय,
सभी हरिभक्तों और बालकों के प्यारे,
*ऐसे वशीभाई! **सबसे निराले, सबसे न्यारे**...*

एक देह में अनेक प्रतिभा,
चलती-फिरती नहीं, बल्कि दौड़ती-उड़ती,
ज़मीन पर नहीं, पर आकाश को छूती,
एक जीवन में अनेक जीवन जीती,
***साधुता के वैभव वाली, प्रभावशाली प्रतिभा**...*

एक चेष्टा में अनेक चेष्टाएँ, एक दृष्टि में अनेक दृष्टियाँ,
एक कंकड़ से एक नहीं, अपितु अनेक पक्षियों का कल्याण करते,
पक्षी तो एक प्रतीक है, लेकिन अनेक इंसानों को महात करते,
ऐसे बहुयामी, बहुमुखी, बहुगामी व्यक्तित्व के धनी,
मानसरोवर के राजहंस समान, नीरक्षीर विवेकी,
***मोती का चारा चुगने वाले**...*

एक पल में अनेक पलों का जीवन,

एक बात में अनेक बातों का दोहन,
एक दृष्टि में अनेकों को नाप लें ऐसा जीवनदर्शन,
और तब भी सबके साथ, सबके जैसे, सबके होकर रहते,
जैसे छलछल बहता पानी, मधुर कलकल नाद करती,
सब में घुलती, हँसती हँसाती, आनंद और उल्लास कराती,
जीवन के पाठ सिखाती, हमेशा ताज़गी, स्मृति देती,
कभी उग्र तो कभी सौम्य, मगर नितांत वे नखशिख धौम्य,
*ऐसी **पावनकारी गंगा जैसी, शीतलता देती सरिता**...*

एक साथ कितने ही सत्कर्म करते,
72 की उम्र में भी 27 जैसा जोश रोम-रोम में प्रगटे,
पवई मंदिर की आर्थिक व्यवस्था का भार किसी को न बताते,
अकेले ही हँसते हुए सहते,
आँखों पर पट्टी बाँध, किसी का कुछ भी न देखते,
***पेट पर पट्टा बांध कर सारा बोझ उठा लेते**...*

चलने से अधिक दौड़ते और उससे भी अधिक उड़ते,
कभी आराम की क्षण नहीं,
पालती मार कर बैठे ऐसी कोई क्षण नहीं,
फिर भी कोई कार्य कभी भी विफल नहीं,
क्योंकि उनके कार्य नहीं, सत्कर्म हैं,
एक ही 'स्व' में अनेकों स्वधर्म हैं...
आर्थिक, प्रशासनिक, सामाजिक या फिर व्यावहारिक,
सभी जिम्मेदारियों का गोवर्धन पर्वत,
लगभग अकेले हाथ उठाएँ फिर भी,
लौकिकता में अलौकिक और आध्यात्मिक जीवन खोजते,
***चिदाकाशी गगन में वे उड़ते सक्षम पंखों से**...*

जीवन शुद्ध पारदर्शक, बातें स्पष्ट एवं धारदार,

वर्तन सबके लिए उपकारदर्शक, यूँ बीते 7 दशक,

पर अभी भी छोटे बालक जैसे, हृदय से परिपक्व तोरी जैसे,

दिल से सबको मिलते सालस स्वभाव से, रुई से भी मुलायम और हल्के...

महापूजा या भजन करें, धुन या कथा करें,

शिबिर, उत्सव, सभा करें,

कर्मयोग करें, धर्मयोग करें, स्वरूपयोग करें,

कभी पूर्वयोजित करें, तो कभी योगानुयोग करें,

मगर कभी प्रभु से पलभर भी वियोग न करें,

भक्तों के साथ सहिष्णु, साथीदारों संग सहचर्य का,

शाश्वत सुखद सहयोग करें...

धन कमाते खूब, मगर अपने लिए करें इस्तेमाल कम,

पुण्य कमाते खूब, मगर जगत के लिए खर्चते कम,

सारी कमाई सत्कर्मों में समाई,

जीवन ऐसा जीते कि जैसे पल पल का त्योहार...

ऐसे प्यारे वशीभाई!

आपकी प्रीति सबसे सवाई,

काकाजी के संबंध वालों में आप खो गए,

व्यक्तित्व मिटाया, अस्तित्व पिघलाया,

हम सब में खो गए,

हम आप में समा जाएँ, हम आप में समा जाएँ...

प्रासंगिक उद्‌बोधन क्रम के अंतर्गत ही दिल्ली मंदिर के **पू. अक्षरस्वरूपदासस्वामी** ने प.पू. वशीभाई का निम्न माहात्म्यगान **'अमी की वृष्टि'** के रूप में किया—

...गुरुजी, भरतभाई और वशीभाई का जो आपसी प्रेम है, वो दिल्ली के हम सब संत-मुक्त बहुत क़रीब से देखते हैं। इतनी दूर होकर भी वे गुरुजी के इतने पास हैं, जितने हम गुरुजी के पास होकर भी नहीं हैं...

हमारी दृष्टि से हम वशीभाई के कुछ ही गुण बता पाते हैं। पर, वे इतने गुणवान हैं कि गुणातीत

स्वरूपों के दर्शन उनमें हमेशा होते हैं... ***वशीभाई का ख़ास गुण ये है कि हर एक के जीवन को प्रभु से तो भरते ही हैं, पर अध्यात्म के साथ मुक्तों की सांसारिक सुख-सुविधा को भी बढ़ाया है। अल्प शब्दों में कहें तो वे हँसते हुए बालक की तरह हैं, चाहे उनकी आयु जो भी हो। बहुत ही विवेकी, हसमुख हैं कि जो एक बार मिले वो भूल न पाए।*** *ये उनका ऐसा गुण है, जो शायद ही सब में हो। गुरुजी के साथ की उनकी प्रीति-सखाभाव ऐसा है कि वे उनके darling हैं।* ***भरतभाई-वशीभाई की जोड़ ऐसी है कि एक तेज़ भागता हुआ और दूसरा brake लगाये। पर, फिर भी साथ में चलते हैं।*** *वशीभाई तुरंत करने में मानें और भरतभाई ठहराव-शांति से चलें। लेकिन उनका उद्देश्य भक्तों को अध्यात्म मार्ग में आगे ले जाकर केवल काकाजी को राज़ी करना है। सभी स्वरूपों को भरतभाई और वशीभाई ने ऐसा राज़ी किया है कि वे उनके वश में हो गए। हम सबको इन दोनों को ऐसे ही आगे रखकर, महिमा से सेवा-भक्ति करनी हैं। उनसे ज्ञान लेकर जीवन में आगे बढ़ना है। हम भी इनके जैसी प्राप्ति कर पाएँ, यही प्रार्थना।*

प.पू. गुरुजी की आज्ञा से **पू. राकेशभाई शाह-पू. नित्या दीदी** ने **प.पू. वशीभाई** के जीवन की झांकी कराते हिन्दी भजन—**'जीवन काकामय जिनका, हैं काका की माला का मनका...'** रचित किया था। **पू. ऋषभ नरूला** तथा **सेवक पू. विश्वास** ने वह प्रस्तुत करके भक्ति अदा की। तत्पश्चात् हरिधाम के **पू. योगीस्वरूपस्वामीजी** ने संक्षिप्त में प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों से प्रार्थना की—

...वशीभाई के 73वें प्रागट्यदिन के लिए हम इकट्ठे हुए हैं। आज इस सभा का दर्शन करके इतना आनंद हो रहा है कि अक्षरधाम की सभा इससे कुछ अलग नहीं होगी। कल जब से गुरुजी के दर्शन हुए, तब से बहुत आनंद आ रहा है...

प्रेमस्वामी, कोठारीस्वामी का जीवन हम सबने निहारा है। मगर एक चीज़ मेरे जीवन में ऐसी हुई है कि जब भी स्वामीजी मुझे गुरुजी की सेवा में दिल्ली भेजते, तो वे एक वाक्य ज़रूर कहते कि तू वहाँ जाके फ़ारिग़ मत रहना, गुरुजी के जीवन को निहारना। भगवान के साथ गुरुजी ने जो संबंध पक्का किया और काकाजी के प्रति उनकी जो वफ़ादारी है, उसका ख्याल पड़ा...

वशीभाई-भरतभाई के हम दर्शन करें, तो ऐसा लगता है कि ये दोनों अलग हैं। मगर जैसे गुजराती में उक्ति है—हो एक, मगर दिखते दो हो... उसका मर्म कुछ ही वीर पुरुष जानते हैं।

मेरे जीवन में जैसा माहात्म्य काकाजी का है, वैसा ही माहात्म्य गुरुजी, भरतभाई, वशीभाई, दिनकरभाई, प्रेमस्वामी, कोठारीस्वामी का रहे, ऐसी मेरे लिए सब प्रार्थना करना।

तदोपरांत गुणातीत स्वरूपों द्वारा निम्न आशीष प्राप्त करके सभी कृतार्थ हुए—

प.पू. दिनकर अंकल (शिकागो)

...वशीभाई का birthday 7 जुलाई, काकाजी की तारीख़ है। ***काकाजी जब पहली बार अमेरिका शिकागो में आये, तो 7 जुलाई शनिवार का दिन था और हमने काकाजी का दर्शन किया था।*** *1986 में वशीभाई का जब अमेरिका में आना हुआ, तो हम जहाँ भी जाते थे वहाँ बहुत आनंद किया था...*

वशीभाई means महापूजा... उनकी महापूजा इतनी famous है कि हरिप्रसादस्वामीजी भी उनका महिमा गान करते और संतों के संग श्रीजी स्वयं प्रगट होते हैं। निर्मानी, सरल, सर्वदेशीय वशीभाई सब संतों के हृदय में हैं। भरतभाई के परम सखा और ऊर्जा का स्रोत हैं। सच्ची साधुता वाले हमारे वशीभाई बहुत बड़े officer है... पर, उनके action में दासभाव झलकता है। *सच ऐसी साधुता हृदय में लानी है। काकाजी स्वरूप वशीभाई को हम हृदय से ऐसा नमन करते हैं...*

प.पू. भरतभाई (पवई)

...गुरुजी का इस आयु में इतना श्रम लेना एहसास कराता है कि वशीभाई और सब भाइयों के साथ उन्हें कितना प्रेम है। *इतना ही नहीं, वशीभाई का 73rd birthday है, तो वे 73 भक्तों को साथ लेकर आये हैं।* ***वशीभाई really सबको आनंद देते हैं और 55 साल से उनके साथ में जीवन जीने का सौभाग्य हमें मिला हुआ है। काकाजी के वचन से वे CA बने, पर हमने उनके जीवन की ऐसी बहुत सारी बातें note करी है, जिससे उनकी साधुता का दर्शन होता है। यहाँ-वहाँ, ऐसा-वैसा सब चला लेना, वशीभाई के जीवन में सहज है। इतने बड़े officer होने के बावजूद भी ताड़देव में कपड़े धोते, झाड़ू लगाते और बर्तन भी साफ़ करते। उन्होंने कभी ऐसा नहीं सोचा कि मैं बहुत पढ़ा-लिखा officer हूँ, ये काम नहीं कर सकता।***

दूसरी बात, ***वशीभाई सेवक के सेवक बन के रहे।*** *कोई उन्हें कुछ भी पूछें-कहे तो कहेंगे—हाँ, हो जाएगा। भगवान उनके साथ ऐसे जुड़े हैं कि वे किसी को बोल दें कि तेरा वो काम हो जाएगा, तो वाक़ई हो जाता है...* ***किसी बाग़ में जाते हैं, तो ख़ुशबू महसूस होती है। इसी तरह से वशीभाई के पास जाएँगे, तो उनके द्वारा सत्संग की सुवास सहज प्रसरेगी...***

वो मेरी जोड़ हैं... काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, गुरुजी, दिनकर दादा सब ने बहुत प्रेम से उनके साथ की आत्मीयता बढ़ाई है। ***वशीभाई की जो आध्यात्मिक स्थिति है, तो वे हमेशा positivity से भी ऊपर रहते हैं... जहाँ हमेशा चमत्कार दिखाई देता हो, तो समझना उसे negativity या ऐसे कोई भी भाव, किसी के भी अभाव-अवगुण का भाव कभी उसे छू नहीं सकता है।***

स्वामिनारायण भगवान के चरणों में आज प्रार्थना और सभी स्वरूप हमें बल, बुद्धि, प्रेरणा दें कि हमें वशीभाई जैसे संत, उनके जैसा प्रभावशाली व्यक्तित्व, ***उनके जैसे precious रत्न जो प्राप्त हुआ है, उन्हें हम हमेशा प्रसन्न-राज़ी रखें और वे हमेशा स्वस्थ रहते हुए बहुत लंबे समय तक हमारे साथ रहें।*** *हम सब ने मिल कर अभी जो ये project शुरू किया है, उसमें भी वशीभाई एकदम आगे रह कर बहुत मेहनत कर रहे हैं... अगर आप सब सुहृदभाव से जिओगे, तो ये सब कार्य देवता आकर कर जाएँगे...*

प.पू. वशीभाई (पवई)

...सबने मेरा गुणगान किया, वो गुण मुझमें आ जाएँ ऐसी प्रार्थना करता हूँ... गुरुजी का तो क्या कहना, at the age of 88 दिल्ली से flight में इतने सारे भक्तों को लेकर आए। उन्हें खड़ा होना होता है, तो भी दो सेवकों का हाथ पकड़ कर फिर खड़े हो पाते हैं। पर, उनके अंदर क्या भाव होगा, काकाजी से कितनी प्रीति होगी? हम में वे देखते हैं कि ये काकाजी के हैं...

काकाजी का सूत्र है कि किसी भी संजोग, परिस्थिति, कोई प्रसंग, कोई व्यक्ति, आपको disturb न कर जाए...1945 में London School of Economics से वे पढ़ कर आए और यहाँ पप्पाजी ने उनका साथ दिया। काकाजी-पप्पाजी ने जो ज़बरदस्त कार्य किया है, उसके लिए हम सदैव, सदैव, सदैव, सदैव ऋणी रहेंगे...

काकाजी की बात को गुरुजी जो importance देते हैं और उसे एकदम height पर रखते हैं, वो बात हम उनसे सीखें। काकाजी-पप्पाजी का जो भी principle है, उसे गुरुजी एकदम बढ़िया-perfect बना देते हैं... *ये एक चमत्कार कहा जाए कि सिर्फ पाँच दिन में संगमरमर की मूर्ति अमदावाद से बन कर लुधियाना में प्रतिष्ठित हुई। It will be a record or चमत्कार... जो कोई भी उसकी knowledge वाला आदमी होगा, उससे पूछना कि मूर्ति को cut करके उस पर work करना, shape देकर polish करके रंगना इतनी जल्दी संभव है और मूर्ति इतनी हुबहू लगती है कि जैसे अभी काकाजी बोलेंगे। तो वो गुरुजी का भगवान में भाव है।* ***आज हम सब काकाजी के जीवन से सीख कर जाएँ कि In the joy of others lies my own. किसी को खुश करने में मेरा जीवन है...***

अब की बार का जो calendar है उसमें गुरुजी ने लिखवाया है— ***गुणातीत भाव प्रगट करके महाराज को अखंड रखें और उन्होंने अभी भी कहा कि हम काकाजी की पहचान बनें...***

हे काकाजी, हे पप्पाजी, आपने जिस project-सेवा का हमें मौक़ा दिया है, तो आप सबसे

प्रार्थना है कि खूब-खूब आशीर्वाद देना कि सहजता से, बहुत अच्छी तरह से हो जाए...

हे महाराज, हे स्वामी, हे काकाजी, हे गुरुजी आप आशीर्वाद दो कि संप, सुहृदभाव, एकता से मिलजुल कर काकाजी- पप्पाजी की खूब-खूब शोभा बढ़ाएँ, उनकी पहचान देते रहें और उनका प्रकाश बन कर जीते रहें, वो ही प्रार्थना।

प.पू. गुरुजी

...मेरे लिए कहा गया कि गुरुजी आशीर्वाद देंगे। तो, मुझे एक प्रसंग याद आ रहा है, मेरे ख्याल से ***पप्पाजी ने कहा था कि आशीर्वाद दिए नहीं जाते, आशीर्वाद तो फिसल जाते हैं और आशीर्वाद खींचे जाते हैं। हम अपना जीवन ऐसा बनाएँ-जिएँ कि काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, भरतभाई, वशीभाई के दिल से हमारे लिए आशीर्वाद फिसल जाएँ*** *और... वो आशीर्वाद पाने का एक तरीका भी स्वरूपों ने अपनी बातों में बता दिया।* ***स्वामीजी ने अलग शब्दों में एक बार बात की थी कि कोई ऊर्ध्वरेतस् ब्रह्मचारी हो अर्थात् उसने ब्रह्मचर्य का ऐसा व्रत धारण किया हो कि कैसे भी संजोगों में ब्रह्मचर्य का भंग न होने दे। परंतु इससे भी अधिक, विशिष्ट और कठिन है साथी-मुक्तों के साथ सुहृदभाव से जिएँ। काकाजी ने भरतभाई, वशीभाई, हरखचंद, राजू भट्ट, राजू ठक्कर, अश्विन वगैरह ऐसे चैतन्य stars तैयार किए कि जहाँ प्रकृति का मेल न बैठता हो, ऐसे मुक्तों के साथ भी सुहृदभाव से ओतप्रोत होने की एक कला-art जीवनशैली के रूप में इन्होंने हमारे समक्ष, समाज के सामने प्रस्तुत की। ऐसे समाज में ओतप्रोत होकर-पूरक बनकर, केवल इस समाज-भारतवर्ष में से ही नहीं, बल्कि विश्वभर में ये जो ज्ञान सक्रिय और साकार है, उससे ऐसी दृष्टि प्राप्त करें।*** *साकार इसलिए कि इस ज्ञान को धारण करने वाले पुरुष इस धरा पर अखंड रहेंगे, ऐसे महाराज के वरदान-आशीर्वाद हैं।* ***वचनामृत में महाराज ने लिखा है—भगवान को धारण किए हुए विभूति स्वरूप भरतखंड में अखंड विचरते रहेंगे। उन्होंने ये सिर्फ लिखा है ऐसा नहीं, हमने देखा कि गुणातीत स्वरूपों द्वारा वो hierarchy हमेशा continuous रही।*** *भगतजी महाराज, जागास्वामी, कृष्णजी अदा, शास्त्रीजी महाराज, जोगी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी और आज भरतभाई, वशीभाई, हरखचंद, राजूभाई ये* ***सब विभूतियों द्वारा सुहृदभाव के सिद्धांत से समाज में जो कार्य हो रहा है, वो सच में एक दिन सबको चकित कर देगा। एक दिन क्या, आज ही सब चकित हैं।*** *अभी सबने सेवकभाव से जीने की बात की। आज ऐसे भाव से जीता हुआ एक पूरा समाज तैयार हो गया।* ***एक समाज के अंदर***

ये बीज के अंकुर दिखते हैं। सिर्फ अंकुर ही नहीं, अब तो वो बीज के स्वरूप काम करते दिखते हैं। *बस इसमें हम हाँजी-हाँजी करते हुए आनंद में झूमते रहें, उसके लिए बड़े विभूति स्वरूप ही हमें आशीर्वाद-बल दें और हम में रुचि जगाएँ यही प्रार्थना।*

स्वरूपों के आशीर्वाद से सरोबार होने के बाद, **पू. हितेनदासजी** एवं **पू. कुशभाई** ने गुजराती भजन—**'एवा संत हरिने प्यारा रे...'** गाकर भाव अर्पण किया। प.पू. वशीभाई की भावना रहती है कि प्रति माह या दो माह के अंतराल पर, समाज के उत्कर्ष के लिए किसी क्षेत्र में कार्य कर रहे हो, ऐसे गणमान्य प्रतिनिधियों को **'योगी डिवाइन सोसाइटी'** की ओर से सम्मानित किया जाए। सो, ऐसी विशेष अतिथि **श्रीमती सुवर्णा जोशी खन्डेलवालजी** (Joint Charity Commissioner, Nagpur), **श्रीमती नीता दोशीजी** (जहाँ प.पू. वशीभाई कार्यरत हैं, उस MESO कंपनी की Chartered Accountant) तथा MESO के board of directors में से एक **श्री केतन सेठजी** की धर्मपत्नी **श्रीमती सेजल बहन** को **प.पू. माधुरी बहन** व **प.पू. आनंदी दीदी** ने स्मृति भेंट देकर अभिनंदन किया।

शुरुआत से ही प.पू. गुरुजी का प.पू. वशीभाई के साथ सखाभाव का संबंध है और वे उन्हें प्यार से Darling कहते हैं। ऐसे अनूठे नाते से प.पू. गुरुजी ने उन्हें विशिष्ट स्मृति भेंट दी। जिस पर श्री ठाकुरजी सहित **गुरुहरि काकाजी महाराज के विभिन्न चित्रों का collage** बनाया था। CA की पदवी हासिल करने के उपरांत **युवावस्था के प.पू. वशीभाई** का चित्र लगा कर, उसके नीचे जुलाई मास का Calendar बना कर **6 तारीख** को लाल रंग में दिल के आकार में दर्शाया था। साथ ही प.पू. वशीभाई के इस प्राकट्य वर्ष को बताते हुए **73 अंक** लिखा था। तो, उसके दूसरी ओर **प.पू. गुरुजी** ने स्वहस्त से अंग्रेजी में—

Darling VASHI, yours Guruji... 6th July 2025...

Jay Swaminarayan -Jay Bharat *लिखा था।*

और... फिर **प.पू. भरतभाई** व **प.पू. वशीभाई** ने मिल कर प.पू. गुरुजी को भी स्मृति भेंट देकर आशीर्वाद प्राप्त किया। तत्पश्चात् केन्द्रों के मुक्तों ने मंच पर विराजमान स्वरूपों को हार अर्पण करके भावना व्यक्त की। दिल्ली मंदिर के मुक्तों की ओर से **पू. कौशिकभाई जानी** और **पू. अनिलभाई माणेक** ने प.पू. वशीभाई को विशिष्ट हार अर्पण किया। पवई की **साधक बहनों** ने **प.पू. दीदी** को हार अर्पण किया। छत्रपति संभाजी नगर के मुक्तों ने एक विशिष्ट बड़ा हार स्वरूपों को एक साथ अर्पण किया, जिस पर लिखा था— **'काकाजी का प्रकाश'** लिखा था।

दरअसल, **प.पू. वशीभाई की जीवनभावना** को दर्शाते हुए इस पर्व का सूत्र भी ऐसा ही था—

काकाजी का प्रकाश हूँ मैं, जीवन में किया निर्धार

काकाजी की इच्छा ही प्रारब्ध, यही सभी शास्त्रों का सार

अंत में केक अर्पण और गुणातीत स्वरूपों के जयनाद से पर्व का समापन हुआ और सबने महाप्रसाद लेकर प्रस्थान किया।

6 जुलाई को ताड़देव मंदिर और दक्षिण मुंबई में प.पू. गुरुजी के प्रासादिक स्थलों के दर्शन करने जाने का कार्यक्रम था। सुबह पू. अनिलभाई माणेक के घर नाश्ता करने के पश्चात् हरिभक्त तो करीब सुबह 10:00 बजे वहाँ जाने के लिए रवाना हो गए। फिर 11:00 बजे **पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी**, संत व कुछ सेवक तथा **प.पू. दीदी** के साथ बहनें, गुरुहरि काकाजी महाराज के समय में दिल्ली में रहते मंदिर से जुड़े पुराने सत्संगी **94 वर्षीय पू. प्रफुल्लभाई झवेरी** से मिलने घाटकोपर में उनके घर गए। उनके सुपुत्र **पू. चेतनभाई** तथा पुत्रवधू **पू. पूर्वा भाभी** ने आवभगत की। चेतनभाई ने दिल्ली मंदिर, गुरुहरि काकाजी और प.पू. गुरुजी के साथ की पुरानी स्मृतियाँ कीं। यहाँ धुन-भजन करने के उपरांत सभी ताड़देव जाने के लिए निकल गए। थोड़ी देर बाद, **प.पू. गुरुजी** की गाड़ी भी उनके घर के बाहर आई, तब उनका दर्शन करने **पू. प्रफुल्लभाई** वहाँ आए। अधिक आयु के कारण वे बोलने में असमर्थ थे, लेकिन उनके चेहरे के भाव उनकी खुशी ज़ाहिर कर रहे थे। पू. प्रफुल्लभाई को दर्शन देने के बाद प.पू. गुरुजी भी दक्षिण मुंबई के लिए रवाना हो गए। अक्षरधाम का तख़्त-गुरुहरि काकाजी महाराज का प्रासादिक स्थल ताड़देव-6D Sonawala Buildings चौथी मंज़िल पर है, सो प.पू. गुरुजी वहाँ नहीं आने वाले थे। परंतु, **पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी**, संतगण, सेवकों, **प.पू. दीदी**, बहनों तथा हरिभक्तों ने गुरुहरि काकाजी महाराज के प्रसादी के इस महातीर्थ पर दर्शन-धुन करके, **पू. श्रेयसभाई व्यास-पू. अनुपमा भाभी** द्वारा आयोजित प्रसाद यहीं पर लिया। प.पू. वशीभाई विशेषतः सबको दर्शन देने के लिए आए। आज उनके प्राकट्य दिन की वास्तविक दिनाँक थी, सो उन्हें केक अर्पण किया गया। उन्होंने स्वयं अपने हाथों से सबको केक का प्रसाद खिलाया। यहाँ से सर्वप्रथम सभी **'भाटिया अस्पताल'** का दर्शन करने गए, जहाँ **गुरुहरि योगीजी महाराज** तथा **गुरुहरि काकाजी महाराज** ने अक्षरधामगमन किया था। ऐसे प्रासादिक स्थल को नमन करके, ग्रांट रोड पर स्थित मायकर बिल्डिंग-**प.पू. गुरुजी के पूर्वाश्रम के घर** का बाहर से दर्शन

करते हुए, उनकी गाड़ी के पीछे पंक्तिबद्ध होकर प्रासादिक स्थानों को देखने निकले। मोबाइल फोन की whatsapp सुविधा आज खूब उपयोगी सिद्ध हुई। प.पू. गुरुजी ने अपनी गाड़ी में बैठे-बैठे ही अपने बचपन-युवावस्था के समय की जगहों को देखते हुए जो विवरण दिया, उसे whatsapp पर group call के ज़रिए सभी लोगों ने अपनी-अपनी गाड़ी में सुना। सभी जगहों को देखते हुए जब Parsi Dairy Farm के बाहर पहुँचे, तो पुराने दिन याद करके वहाँ की कुल्फी इत्यादि ग्रहण की और वहीं घूम रही एक बिल्ली को रसमलाई खिलवा कर कल्याण किया। रविवार की छुट्टी और बरसात का मौसम होने के कारण सड़कों पर शाम तक काफ़ी भीड़ हो गई, सो रात करीब आठ बजे अमदावाद के **पू. कनुभाई दवे** की बेटी-दामाद **पू. निधि** व **पू. हेतल कुमार** के घर पधरावनी करने पहुँचे। इनकी बिल्डिंग के हॉल में ही **पू. श्रेयसभाई व्यास-पू. अनुपमा भाभी** ने सबके लिए रात के भोजन की व्यवस्था की थी। थोड़ी देर सबको दर्शन का सुख देकर, थकान होने के कारण प.पू. गुरुजी घाटकोपर पू. अनिलभाई माणेक के घर लौट गए। वहाँ पहुँच कर भोजन किया और करीब ग्यारह बजे तक आनंदोब्रह्म करने के पश्चात् विश्राम में गए।

7 जुलाई की शाम को flight व train से प.पू. गुरुजी एवं सभी दिल्ली के लिए रवाना होने वाले थे। **10 जुलाई** यानी दो दिन बाद ही **गुरुपूर्णिमा** का पावन अवसर नज़दीक होने के कारण, मुंबई के हरिभक्तों-भाभियों ने प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी का विशेष पूजन करके आशीर्वाद प्राप्त किया। 14 जुलाई को **पू. दीपक अग्रवाल** का जन्मदिन भी था, सो प.पू. गुरुजी की निश्रा में जन्मदिन की स्मृति प्राप्त करने हेतु उनकी पत्नी **पू. मानसी** केक बना कर लाई थीं। केक अर्पण विधि के बाद, मुंबई Airport के लिए रवाना हो रहे थे कि तभी प.पू. गुरुजी ने gesture किया—*कोई तो हमें दिल्ली तक छोड़ने आए...* यह सुन कर **पू. ओ.पी. अग्रवालजी** ने भक्ति अदा करते हुए तुरंत अपनी टिकट बुक करा ली और साथ में दिल्ली आए। धन्यवाद है गुरु के प्रति ऐसे भक्तों की भक्ति को! Airport पर पवई से **प.पू. भरतभाई** के साथ **प.पू. माधुरी बहन, पू. मीना बहन** तथा स्थानिक हरिभक्त विदा करने आए थे। गुणातीत स्वरूपों को सदैव दंडवत् प्रणाम से प्रार्थना करने की प.पू. गुरुजी की जीवनशैली को अपनाते हुए, संतों-सेवकों ने प.पू. भरतभाई को दंडवत् प्रणाम किया। पूरे एक सप्ताह की नूतन स्मृतियों को संजो कर flight वाले रात को 9:00 बजे तक मंदिर पहुँचे और train वाले मुक्त **8 जुलाई** की सुबह दिल्ली पहुँचे।

12 जून, सायं– गुरुहरि काकाजी महाराज का 107वाँ प्राकट्योत्सव...

केवल भजन (नाम रटण) महाराज को नहीं पहुँचेगा, इसलिए काकाजी ने ख़ास कहा कि संतों की स्मृति के साथ भजन करना और... एक समझदारी रखना कि जैसे संत के अंदर मूर्तिमान स्वरूप से अखंड विराजमान हैं, वैसे मूर्तिमान प्रभु संत के संबंध वाले मुक्तों में भी विराजमान हैं...

-प.पू. गुरुजी

12 जून 2025 - गुणातीत समाज के आद्य सर्जक गुरुहरि काकाजी महाराज की 107 वीं जयंती

गुणातीत समाज के सृष्टा... आत्मीयता की गंगोत्री... निर्दोषबुद्धि के क्षितिज... शूरवीर सहृदयी गुरुहरि काकाजी महाराज जैसी प्रभुधारक विभूति के जीवन दर्शन से ज्ञात होता है कि बचपन से ही वे अत्यंत बुद्धिमान, निडर, चंचल और प्रेरणादायी थे, इससे भी अधिक उनका प्राकट्य मानो श्रीजी महाराज की ही योजना थी। इसीलिए तो मात्र 7 वर्ष की आयु में तो अपने बड़े भाई गुरुहरि पप्पाजी के साथ मिलकर ठान लिया था कि वे दोनों मिल कर स्वर्ग का आनंदमय धाम पृथ्वी पर लाएँगे। फिर गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज का अनन्य आश्रय करते हुए, दिव्यता की अनुभूति करने हेतु 11 वर्ष की आयु में ही गुरु शास्त्रीजी महाराज के समक्ष अहंकार रहित होने की प्रार्थना की।

भगवान स्वामिनारायण और अपने गुरु शास्त्रीजी महाराज के प्रति अटूट श्रद्धावान, आत्मसम्मानी व स्वावलंबी गुरुहरि काकाजी महाराज ने युवावस्था में शिक्षा पूरी करने के उपरांत इंग्लैंड जाकर काम करने का निर्णय लिया, परंतु गुरु शास्त्रीजी महाराज की आज्ञा को सर्वोपरि मान कर भारत-मुंबई में ही रहकर व्यवसाय शुरू किया। यहाँ भी **गुरु शास्त्रीजी महाराज की आज्ञा से ब्रह्मस्वरूपीणी सोनाबा एवं उनके परिवार से आत्मीय संबंध बनाया और गुरु के वचन से ही प.पू. कांतिकाका के साथ भ्रातृभाव प्रगाढ़ किया।** अतिशय कठिन परिस्थितियों को नज़रअंदाज करके, गुरु को राज़ी करने की भावना से सत्संग की हर प्रकार से सेवा की। **गुरु शास्त्रीजी महाराज के अंतर्ध्यान होने के उपरांत गुरु योगीजी महाराज में ही उन्हें प्रत्यक्ष मान कर-सेवन करके इतना प्रसन्न किया कि गोंडल मंदिर में 72 घंटे की समाधि द्वारा भगवान स्वामिनारायण का साक्षात्कार करवा कर गुरुहरि योगीजी महाराज ने उन्हें प्रकृति-पुरुष के भावों से परे कर दिया।** श्रीजी महाराज पूर्णतः गुरुहरि योगीजी महाराज में निवास करते हुए इस अवनि पर विचर रहे हैं, ऐसी अपूर्व अनुभूति साक्षात्कार दौरान करने के पश्चात् उन्होंने संपूर्ण सत्संग समाज को इस तथ्य से न केवल अवगत कराया, बल्कि देश-विदेश में गुरुहरि योगीजी महाराज का अतिशय माहात्म्य सबके जीव में भर दिया।

अनोखी प्रतिभा के धनी होने के बावजूद भी एक सेवक की भाँति अत्यंत विनम्रता और सेवाभाव से योगीजी महाराज तथा सत्संग के बहुआयामी विकास के लिए अपना जीवन होम कर दिया। गुरुहरि योगीजी महाराज की आंतरिक अभिलाषा को नया आयाम देते हुए, उन्होंने प्रभु को पूर्णतः समर्पित संतों-व्रतधारी भाइयों-व्रतधारी बहनों और समर्पित गृहस्थों का चार

पखुंड़ी का गुणातीत समाज की स्थापित किया। शास्त्रों का सार व्यक्त करते लेखों, पत्रों, पुस्तकों तथा प्रवचनों द्वारा उन्होंने जन सामान्य को आध्यात्मिकता व श्रद्धा का सही अर्थ और जीवन में प्रभुधारक संत की शरण की अनिवार्यता का महत्व समझा कर निहाल किया।

भगवान स्वामिनारायण के आश्रित मुमुक्षुओं के सच्चे हितैषी बने गुरुहरि काकाजी महाराज की अनमोल प्राप्ति को दिन-प्रतिदिन दृढ़ करने की भावना से कई वर्षों से मई-जून माह में **'अनुष्ठान शिविर'** आयोजित होता है। संयोगवश अब की बार यह नहीं हो पाया, परंतु 12 जून-गुरुहरि काकाजी महाराज के प्राकट्य पर्व और उस दिन प्राप्त होने वाले **'आम रस'** के महाप्रसाद की सभी पूरे वर्ष आतुरता से प्रतीक्षा करते हैं। अतः **12 जून 2025, गुरुवार** की सायं कल्पवृक्ष हॉल में उनकी **107वीं जयंती** के उपलक्ष्य में सभी सायं 6:30 बजे कल्पवृक्ष हॉल में एकत्र हुए। संध्या आरती-स्तुति वंदना के पश्चात् स्वामिनारायण धुन से सभा की शुभ शुरुआत हुई। सुंदर कृत्रिम पुष्पों से श्री ठाकुरजी का आसन सुशोभित किया था। श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की डेरी के ऊपर गुजराती भजन की निम्न पंक्तियों द्वारा प्रार्थना लिखी थी—

बीजा उपायो मूकी दईने, एक तुजने संभारुं
चोवीस कलाकनी एक पळ पण ना तुजने विसारुं रे
तेथी अखंड रहूं जाग्रत के मन मारुं बीजे न थाय प्रवृत्त
के रहेवुं छे मूरतिमां रत, मळया प्रत्यक्ष भगवान...

अर्थात्— अन्य उपायों को छोड़ कर, केवल आप (प्रभु) को याद करूँ
चौबीस घंटों में एक पल भी आपको विस्मृत न करुँ
इसलिए अखंड जाग्रत रहूँ कि मेरा मन कहीं और प्रवृत्त न हो
बस आपकी मूर्ति में निमग्न रहूँ, मिले हैं प्रत्यक्ष भगवान...

उपरोक्त प्रार्थना के प्रतीक रूप प.पू. गुरुजी की मूर्ति के चारों ओर एक बड़ी घड़ी बनाई थी। ऐसी ही छोटी घड़ी इसी प्रार्थना के साथ प.पू. गुरुजी के सोफे के पीछे पृष्ठभूमि पर लगाई थी। आवाहन धुन के पश्चात् गुरुहरि काकाजी महाराज से उनके मंगल प्राकट्य दिन पर प्रार्थना करते हुए, **पू. पंकज रियाज़जी, पू. ऋषभ नरुला, पू. ऋषभ गोयल, सेवक पू. विश्वास, सेवक पू. नक्षत्र** तथा **पू. पुण्यम्** ने निम्न नूतन भजन प्रस्तुत किया—

काका, काका—मेरे काका...
दरारें हमारे इन स्वभावों से पड़तीं
निजात इन स्वभावों से करवा दो काका...

तत्पश्चात् 1967-68 से गुरुहरि काकाजी महाराज व प.पू. गुरुजी के जोग में आए **पू. राजेश वर्माजी** (भोला भइया) तथा गुरुहरि काकाजी महाराज के नौ योगेश्वरों में से एक मुंबई-पवई से पधारे **पू. राजूभाई ठक्कर** ने गुरुहरि काकाजी महाराज के स्मृति प्रसंगों से सबको सराबोर किया।

तदोपरांत आज की सुसज्जा के विषय में बताते हुए **पू. राकेशभाई** ने भाव प्रकट करते हुए कहा— *हमें जो प्रत्यक्ष स्वरूप मिले हैं, उनकी स्मृति में स्थित रहने से हमारा मन अन्य प्रवृत्तियों में नहीं भटकेगा। हमें मूर्ति में ही स्थिर रहना है और जो प्रत्यक्ष संतस्वरूप मिले हैं, उनकी स्मृति में लीन रहना है। गुणातीत संत के रूप में हमें प्रत्यक्ष भगवान मिले हैं। हमारी अक्षर-पुरुषोत्तम उपासना की यही सजीव फिलॉसफी है कि भगवान आज भी हमारे साथ हैं। यदि हम उनकी स्तुति करके स्वामिनारायण मंत्र का भजन करें, तो हमारे समस्त दुःख दूर हो सकते हैं।*

फिर पू. राकेशभाई ने बताया कि **प.पू. वशीभाई** के कहने पर, गुरुहरि काकाजी महाराज को वंदन करते हुए भजन—**'स्मृति काकाजी की, आनंद में ले आए...' पू. नित्या दीदी** ने बना कर भेजा था। पवई मंदिर के मुक्तों ने **7 जून 2025** को **माणावदर** में आयोजित हुई 'भजन संध्या' में वह प्रस्तुत किया था। उसी भजन को **पू. राकेशभाई** ने गाकर सबको भावविभोर किया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संप्रात कार्यवाहक **श्रीमान उत्तम दाधीचजी** श्री ठाकुरजी के आशीर्वाद हेतु आए थे। मंदिर-प.पू. गुरुजी का प्रतिनिधित्व करते हुए **पू. जयप्रकाश मल्होत्राजी** ने उन्हें हार पहना कर सम्मानित किया। तत्पश्चात् सभा को अपने सकारात्मक विचारों से संबोधित करके पू. उत्तमजी ने विदाई ली।

इसके उपरांत ध्वनि मुद्रण द्वारा गुरुहरि काकाजी महाराज की सिंहगर्जनारूपी परावाणी से आशीर्वाद प्राप्त करके सब धन्य हुए। गुरुहरि काकाजी महाराज के आशीर्वचन सुनते हुए **प.पू. गुरुजी** ने उनके वचनों की निम्न महत्ता समझाई—

काकाजी ने बताया कि आध्यात्मिक विभूतियों की कक्षा खूब ऊँची होती है। लेकिन वे इतने अपनेपन से हमारे साथ रहते हैं कि हम भूल जाते हैं कि वे इतने बड़े हैं, प्रभु का स्वरूप हैं। *आज अक्षरधाम से कोई महाराज का दर्शन कराए, तो विशेषता लगेगी कि ओहो, हमने अक्षरधाम के महाराज का दर्शन किया। महाराज ने वचनामृत में लिखा है कि वे ऐसे संत के रूप में विचरण करते रहते हैं। पर, जब तक कोई समझाए नहीं, तब तक धरती पर उन्हीं*

महाराज को मानवस्वरूप में देख कर वैसी महिमा नहीं हो पाती... ***काकाजी कहते हैं कि सबके मनोरथ पूरे हो जाएँ, नौकरी नहीं मिलती हो वह मिल जाए, ये सब चमत्कार बचपने जैसी बात है। सच्ची प्राप्ति तो यह है कि हमारे स्वभाव टल जाएँ, हम हठ, मान, ईर्ष्या के भावों से ऊपर उठ जाएँ...***

हमारी प्रार्थना-भजन भगवान सीधा नहीं सुनते, गुणातीत संत के माध्यम से सुनते हैं। भगवान को तत्त्व से जानना यानी जैसे प्रभु संत में हैं, ऐसे ही मुक्तों में भी बसे हुए हैं। हमें वो ख्याल नहीं है, उसे समझाने के लिए सत्संग शिविर करते हैं। केवल भजन (नाम रटण) महाराज को नहीं पहुँचेगा, इसलिए ख़ास कहा कि संतों की स्मृति के साथ भजन करना और... एक समझदारी रखना कि जैसे संत के अंदर मूर्तिमान स्वरूप से अखंड विराजमान हैं, वैसे मूर्तिमान प्रभु संत के संबंध वाले मुक्तों में भी विराजमान हैं... इसके लिए भावात्मक बुद्धि प्रधान रखना। वो भावना क्या कि मैं प्रभु का हूँ और प्रभु मेरे हैं... काकाजी कहते हैं कि मुक्तों के साथ मैत्री रखें। ***मैत्री चैत्सिक है—चित्त से-चेतना से है। वह मन से नहीं है, मानसिक बुद्धि में कभी मनमुटाव हो जाता है। चेतना से जो जुड़ गया है, वो permanent हो जाता है।*** *उसमें फिर कोई और चीज़ें असर नहीं करतीं... आत्मबुद्धि-प्रीति वाला नया जीवन शुरू हो जाएगा, जो कभी नष्ट नहीं होता... प्रार्थना करें कि हे प्रभु! अक्षरधाम का, प्रकृति-पुरुष से परे का ज्ञान दे दो...*

जयंती निमित्त सभा के आरंभ में ही गुरुहरि काकाजी महाराज की मूर्ति को कृत्रिम पुष्पों से बनाया एक सुंदर हार अर्पण किया था। गुरुहरि काकाजी महाराज आज भी दिल्ली मंदिर से जुड़े मुक्तों को पल-पल अनुभूति कराते हैं कि प.पू. गुरुजी के रूप में वे सबकी वैसी ही परवरिश कर रहे हैं। आज **सेवक विश्वास** का भी संत सेवक दीक्षा दिन था, अतः गुरुहरि काकाजी महाराज की प्रसादी का हार उन्होंने सभी की ओर से प.पू. गुरुजी को अर्पण किया।

30 मई 2025 को **पू. हंसा बहन संघवी** अक्षरनिवासी हुई थीं। **गुरुहरि पप्पाजी महाराज, प.पू. जसुबहन** एवं गुणातीत ज्योत की बहनों से उनका विशिष्ट संबंध था। इसलिए 11 जून को उनकी त्रयोदशी में प्रार्थना करने के लिए **प.पू. हंसा दीदी** की आज्ञा से **पू. नीना बहन** तथा **पू. गीता बहन** दिल्ली मंदिर पधारी थीं। गुरुहरि काकाजी महाराज के प्राकट्य पर्व निमित्त वे भी विशिष्ट हार लेकर आई थीं। सो, गुरुहरि काकाजी महाराज को वह अर्पण किया गया। साथ ही वे एक और विशिष्ट हार इस भावना से लाईं थी कि प.पू. गुरुजी ने गुरुहरि काकाजी महाराज को सांगोपांग धारण किया हुआ है। **पू. दीपक अग्रवाल** ने उनकी ओर से प.पू. गुरुजी को हार

अर्पण किया। मुंबई-पवई से पधारे गुरुहरि काकाजी महाराज के लाड़ले **पू. राजुभाई ठक्कर** का अभिवादन करते हुए **सेवक पू. निमाई** और **सेवक पू. नक्षत्र** ने उन्हें हार अर्पण किया। **संतभगवंत साहेबजी** के संपर्क से भगवान स्वामिनारायण के प्रासादिक स्थल अयोध्या के हनुमान गढ़ी मंदिर के **मंहत श्री कल्याणदासजी महाराज** पधारे थे। **पू. आनंदस्वरूपस्वामी** ने पूजन, शाल व हार अर्पण करके उनका स्वागत किया। तत्पश्चात् **प.पू. दीदी** के हृदयाकाश में विराजमान गुरुहरि काकाजी महाराज का दर्शन करते हुए, गुणातीत ज्योत की **पू. गीता बहन** ने उन्हें भी एक विशेष हार अर्पण किया। हार विधि संपन्न होने के उपरांत, **पू. अजय तनेजाजी** ने **पू. राजीव शर्माजी** के साथ मिल कर पंजाबी भाषा में सुंदर भजन— **दिल दियां गल्लां करा तेरे नाल, तू होवे सामने मैं होवां चरणां नाल**... प्रस्तुत किया। 11 जून को **पू. अजय तनेजाजी** का जन्मदिन था, सो **सेवक पू. विश्वास** ने उन्हें प्रसादी का हार पहना कर श्री ठाकुरजी से आशीर्वाद दिलाए। 12 जून के अनुसार आत्मीय स्वजन पू. आर.पी. गुप्ताजी का भी जन्मदिन था। कार्ड के रूप में प.पू. गुरुजी के प्रति उनका भाव व्यक्त हुए, उनकी पौत्री **पू. प्रिशा गुप्ता** ने निम्न प्रार्थना लिखी थी, जो पू. राकेशभाई ने पढ़ी—

राज़ी हैं हम उसमें ही, जिसमें तेरी रज़ा है
जिस हाल में आप रखें, उस हाल में मज़ा है
तेरा साथ है तो मुझे क्या कमी है
अंधेरों से भी मिली रोशनी है
तेरी कृपा की छाँव में पल रहे हैं हम
आप दिखा रहे हो रास्ता और चल रहे हैं हम
दुनिया की ठोकरों से वाकिफ़ नहीं थे हम
आपने दिया सहारा, तभी तो संभल रहे हैं हम
मेरा सहारा भी गुरुजी, मेरी भक्ति भी गुरुजी
मेरा विश्वास भी गुरुजी, मेरी शक्ति भी गुरुजी
बस आप नयनों में मेरे रहना, सांसों में बसे रहना
बस इतनी है गुज़ारिश, आप साथ सदा रहना...

ये प्रार्थना भले ही पू. आर.पी. गुप्ताजी ने अर्पण की, लेकिन सभी मुक्तों के अंतर की पुकार थी और इसी के साथ **गुरुहरि काकाजी महाराज की 107वीं जयंती** का समापन हुआ। **'आम रस'** के प्रसाद से सभी तृप्त होकर अपने गंतव्य स्थान पर गए।

24 मई 2025

ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की 133वीं जयंती एवं

प.पू.गुरुजी की भागवती दीक्षा तिथि की 64वीं वर्षगाँठ

❖❖❖

संप—यानी साथ में मिलकर-एकता से जो काम करे।

सुहृदभाव— यानी एक-दूसरों का सहन करके जो काम करे और

एकता—यानी सामने वाले मुक्त का दोष अपना ही मान कर जो काम करे। वह दूसरे को कभी ऐसा न बोले कि तेरे कारण ये काम बिगड़ गया। बल्कि वो यूँ ही माने कि मैंने इसके साथ मिल कर काम नहीं किया, इसलिए गड़बड़ हो गई।

जिसे हमेशा अक्षरधाम में रहना हो, उसे ये भावना रखते हुए जीवनभर बरतना ही पड़ेगा...

-प.पू. गुरुजी

ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की 133 वीं जयंती एवं प.पू. गुरुजी की भागवती दीक्षा तिथि की 64 वीं वर्षगाँठ

हम पर अनहद कृपा करके, हमारे जीव के श्रेय हेतु भगवान स्वामिनारायण इस धरती पर आए। इससे भी विशेष बात यह कि वे अकेले नहीं आए बल्कि जिनमें अखंड रह कर वे भक्तों का भाव ग्रहण करते हैं, ऐसे गुणातीत संत को अपने साथ लेकर आए। **वचनामृत जेतलपुर-4** में तो **भगवान स्वामिनारायण** ने स्वमुख से अपने अखंड धारक गुणातीत संतों को निम्न आशीर्वाद देकर आश्रितों को ना केवल निहाल किया है, बल्कि सच्चे संत को पारिभाषित करके प्राणी मात्र को सही मार्गदर्शन दिया है—

हे संतों! तुम्हारी तो बात ही अलग है (तुम्हारी विशेषता ही अद्‌भुत है)—
जो तुम्हें भाव से भोजन कराएगा, उसे करोड़ों यज्ञ करने जितना पुण्य और मोक्ष प्राप्त होगा।
जो भाव से तुम्हारे चरण स्पर्श करेगा, उसके करोड़ों जन्मों के पाप खाक हो जाएँगे।
जो भाव से तुम्हें वस्त्र अर्पण करेगा, उसका परम कल्याण निश्चित है।
तुम जिस नदी-तालाब इत्यादि में अपने पाँव धोओगे, वे सभी तीर्थ रूप बन जाएँगे।
जिस वृक्ष के नीचे तुम बैठोगे और जिस वृक्ष के फल ग्रहण करोगे, उन सभी का हित होगा।
जो भाव से तुम्हारा दर्शन करते हैं और तुम भी जिन्हें भाव से नमस्कार करते हो, उन के सभी पापों का क्षय होता है
और
तुम जिससे भगवान की वार्ता करते हो तथा जिसका धर्म के प्रति निश्चय दृढ़ कराते हो, उसका मोक्ष होता है।
धर्म-नियम वाले संत की सभी क्रिया कल्याण रूप है...

इसी प्रकार, पुस्तक **'स्वामी की बात'** के **प्रकरण 3** की **तीसरी बात** में **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी** ने भगवान स्वामिनारायण द्वारा संतों को मिली आशीष का स्मरण करते हुए बताया है—

...कोई अल्प जैसा जीव हो और आप (गुणातीत संत) यदि संकल्प करें कि वह जीव आठ आवरण पार अक्षरधाम में चला जाए, तो वह तत्काल चला जाता है। जैसे गुलेल से पत्थर को दूर तक फेंकते हैं, उसी प्रकार आपकी कलाई में बल है। परंतु आप उसे जानते नहीं हैं। ***ऐसी महत्ता आप में किस प्रकार आई है, उसका कारण बताता हूँ। सर्वोपरि अक्षरधाम में जो भगवान***

विराजमान हैं, उनका आपको साक्षात् संबंध हुआ है...

उपरोक्त वर्णित गुणातीत संतों की परंपरा को शाश्वत रखते हुए **संवत 1948** की **बैसाख कृष्ण 12** को भगवान स्वामिनारायण के साधर्म्य को प्राप्त किए, उनके चौथे आध्यात्मिक वारिसदार **ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज** का आविर्भाव ग्राम **'धारी'** में हुआ। इस पृथ्वी पर सामान्य पुरुष व महापुरुष दोनों ही जन्म लेते हैं। सामान्य पुरुष व महापुरुष में यह फ़र्क है कि सामान्य मनुष्य अपने प्रारब्ध के कर्मों को भोगने के लिए पृथ्वी पर आते हैं तथा **महापुरुष जन सामान्य को उनके प्रारब्धों से मुक्त कराने स्वइच्छा से पृथ्वी पर मनुष्य तन धारण करके आते हैं।** फिर अपना अभिप्राय-आध्यात्मिक कार्य संपन्न होने के उपरांत स्वतंत्र रूप से अक्षरधामगमन करते हैं।

गुरुहरि योगीजी महाराज ने भी जीवों को अपना दिव्य संबंध देकर, उन्हें सर्वोपरि प्रभु का आश्रय दृढ़ करवा कर कलियुग की कालिमा से मुक्त कराया। विशेषतः तो **11 मई 1961** को अपनी प्राकट्य तिथि के पावन अवसर पर, 51 शिक्षित युवाओं को बऱ्शीश में साधुता प्रदान करके प्रभु प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर किया। फलस्वरूप इन संतों ने अपने संसर्ग से रूढ़िवादी विचारधाराओं तथा केवल कर्म के आधीन सामान्य जीवन जीते मुक्तों को जन्म लेने का सही हेतु बता कर, परब्रह्म की भक्ति करके चेतना के शुद्धिकरण की सच्ची सूझ दी। **गुरुहरि काकाजी महाराज ने उत्तर भारत के मुक्तों से कैसी अनहद् प्रीति की होगी कि उनके जन्मों की जड़ता रूपी लौह को शुद्ध कंचन में परिवर्तित कराने के लिए अपने प्रिय पात्र प.पू. गुरुजी जैसी पारसमणि से संबंध करवा दिया, जो प्रथम शिक्षित 51 संतों में से एक हैं।**

इस वर्ष **गुरुहरि योगीजी महाराज की 133वीं जयंती** के संग **प.पू. गुरुजी की भागवती दीक्षा तिथि 24 मई 2025, शनिवार** को थी। **प.पू. गुरुजी** की नित्य पूजा को **पू. मैत्रीशीलस्वीमी** ने मोगरा व गुलाब के फूलों से सुशोभित किया। 'मीडियम डेंसिटी फाइबरबोर्ड' (MDF) पर गुरुहरि योगीजी महाराज की चित्र प्रतिमा अंकित करके गुजराती भजन की निम्न पंक्ति लिखी थी—

'जुगो जुग जीवजो प्यारा, योगी मारी आँखना तारा...'

इसके पिछले भाग पर गुरुहरि योगीजी महाराज के साथ प.पू. गुरुजी की चित्र प्रतिमा अंकित करके सबकी ओर से प्रार्थना लिखी थी—

हे गुरुजी! जैसी बापा और आपकी गुणग्राहक दृष्टि है, वैसी हम सब की बना दीजिए...

ऐसे निर्मल दिन सायं 7:30 बजे से मंदिर के 'कल्पवृक्ष' हॉल में प.पू. गुरुजी की निश्रा में धुन-भजन से सत्संग सभा आरंभ हुई। **पू. राकेशभाई** ने प.पू. गुरुजी की भागवती दीक्षा दिन

के उपलक्ष्य में भजन— 'सब के दिल में बसी मनोहारी छवि...' प्रस्तुत किया। **भद्रायुभाई जानी**, **पू. जयप्रकाश मल्होत्राजी** तथा **पू. सनी जयस्वाल (जगरांव)** ने माहात्म्यगान करके प्रार्थना की। गुरुहरि योगीजी महाराज के दिव्य जीवन पर आधारित **'योगी चरितम्'** पुस्तक में से **पू. आनंदस्वरूपस्वामी** ने कुछ प्रेरणादायी प्रसंगों का पठन किया और तकरीबन बीस मिनिट **प.पू. गुरुजी** ने उसका निरूपण करके निम्न मार्गदर्शन दिया—

योगी चरितम् *के इन दिव्य प्रसंगों द्वारा योगीजी महाराज की जीवन भावना का दर्शन होता है कि जीवन जीना है, तो ऐसा जिएँ...*

- *योगीजी महाराज जूनागढ़ रहते थे। संवत् 1969 में शास्त्रीजी महाराज ने उन्हें अपने पास बुला लिया और संवत् 2007 में शास्त्रीजी महाराज स्वधाम पधारे।* ***शास्त्रीजी महाराज स्थूल देह से जब तक धरती पर रहे, तब तक योगीजी महाराज ने उनकी कोई भी आज्ञा नीचे गिरने नहीं दी।*** *योगीजी महाराज बताते थे कि मैंने मुंह में भोजन का एक निवाला रखा हो और यदि शास्त्रीजी महाराज ने पुकारा हो तो दूसरा निवाला खाने की बात ही नहीं; बल्कि जो मुँह में होता उसे भी पूरा चबाने में समय न गवाँ कर, हाँ बापा! कहते हुए शास्त्रीजी महाराज के पास पहुँच जाता। जनरली अगर हम खाना खाते हों और बड़े संत हमें बुलाएँ तो हम कहेंगे—आता हूँ, आ रहा हूँ। सेवक 'न' नहीं करते, पहुँच भी जाते हैं। लेकिन योगीजी महाराज की शास्त्रीजी महाराज के प्रति ऐसी तत्परता कि उन्हें क्षणभर भी राह न देखनी पड़े। ये बात साधारण लगती है, लेकिन* ***दर्शन होता है कि बापा को अपने गुरु के प्रति कैसा आकर्षण-खिंचाव था, उनकी कैसी महिमा थी। बापा कहते—मुझे तो एक रोटी खाने को मिल जाए, इतना ही काफ़ी है। मैं उससे आगे और कोई demand नहीं करूँगा। लेकिन, जो भी कुछ भागदौड़ या परिश्रम करता हूँ, वो तो शास्त्रीजी महाराज की अक्षरपुरुषोत्तम बोचासणवासी संस्था का नाम-कार्य आगे बढ़ाने हेतु ही करता हूँ।*** *इसीलिए इतना घूमता-विचरण करता हूँ, सभाओं में बात करता हूँ और रात को जाग-जाग कर सेवकों को आनंद करवाता हूँ...*
- ***बापा अपने हृदय-मानो भीतर की ये भावना बताते थे कि भगवान और संत के दर्शन से आधि-व्याधि-उपाधि टल जाती है। अकेले भगवान नहीं, उनके साथ संत भी अनिवार्य हैं। हमारी युगल उपासना है।*** *जैसे राधा-कृष्ण, सीता-राम, शिव-शक्ति हैं, वैसे स्वामी और नारायण। जिसका उच्च आध्यात्मिक कक्षा पर ये भी अलग अर्थ होता है कि जो स्वामी हैं, वे ही नारायण का स्वरूप हैं। उनके द्वारा नारायण धरती पर विचरण करते हैं। ये हमें भरोसा है कि* ***स्वामी ने अखंड नारायण धारे हैं। इनके द्वारा पुरुषोत्तम नारायण-सहजानंदस्वामी-***

स्वामिनारायण भगवान धरती पर विचरण करते हैं, उसकी पूरी ख़ातिरी है। ऐसी प्रतीति होने के बावजूद भी महिमा होनी चाहिए। वो महिमा यह कि ये इस लोक के पुरुष नहीं हैं, अक्षरधाम से आई हुई दिव्य विभूति-अक्षरधाम की विभूति हैं। यदि ऐसी महिमा हो, तो अक्षरधाम की विभूति जहाँ-जहाँ जाएँ वहाँ अक्षरधाम खड़ा करते हैं, ऐसी अनुभूति हो, जिससे हमें अक्षर का सुख मिलता है। *तो, वे हमें अक्षरधाम में रख ही देते हैं-अक्षररूप बना देते हैं। परंतु इस हेतु 'संप, सुहृदभाव, एकता' से चलें।*

संप—*यानी साथ में मिलकर-एकता से जो काम करे।*

सुहृदभाव— *यानी एक-दूसरों का सहन करके जो काम करे*

और

एकता—*यानी सामने वाले मुक्त का दोष अपना ही मान कर जो काम करे। वह दूसरे को कभी ऐसा न बोले कि तेरे कारण ये काम बिगड़ गया। बल्कि वो यूँ ही माने कि मैंने इसके साथ मिल कर काम नहीं किया, इसलिए गड़बड़ हो गई।*

जिसे हमेशा अक्षरधाम में रहना हो, उसे ये भावना रखते हुए जीवनभर बरतना ही पड़ेगा। *वर्ना महाराज दंड क्या देंगे कि हमारी प्रगति रुक जाएगी। पीछे नहीं चले जाएँगे, मैंने एक बार कहा था कि पीछे का रास्ता तो बंद ही है, पर हमारी प्रगति रुक जाएगी। जैसे signal पर खड़ी रह कर कई गाड़ियाँ हॉर्न मारती ही रहती हैं कि भई, जाने दो आगे-जाने दो आगे। इसी तरह हमारी (आध्यात्मिक) गाड़ी वहाँ रुकी रहेगी।*

❖ ***महेळाव गाँव का प्रसंग—*** *योगीजी महाराज के हाथ पर फोड़ा हुआ था। युवक उनके हाथ पर वैद्य की दी हुई दवाई लगा रहे थे। एक युवक ने स्वामी से कहा कि कोई political leader बीमार होते हैं या तनिक बुखार भी आ जाए, तो प्लेन से भी डॉक्टर उन्हें देखने आ जाते हैं और आपके लिए तो कोई आता ही नहीं। हम जैसे बच्चों के द्वारा treatment चलती रहती है। स्वामी ने कहा—हम कहाँ नेता हैं? देखो,* ***बापा की ये जीवनभावना थी और आख़िर तक वही रही कि मैं तो शास्त्रीजी महाराज का सेवक हूँ। स्वामी से कोई भी उनका परिचय पूछता तो वे कहते—मैं योगी, शास्त्रीजी महाराज का सेवक हूँ। हम जैसे हों तो खाली 'योगी' बोल कर रुक जाएँ। पर नहीं, उन्हें तो ऐसा कि जैसे full name पूछते हैं, तो फाधर का नाम साथ में लगाते ही हैं। इसी तरह वे हमेशा शास्त्रीजी महाराज का नाम साथ में रख करके ही अपना परिचय देते थे। यह दर्शाता है कि स्वामी को गर्व था कि मैं शास्त्रीजी महाराज का सेवक हूँ।*** *वे ऐसे ही नहीं बोल देते थे, जैसे हम नाम बोल देते हैं।* ***इसके पीछे उनकी ये भावना थी कि मैं फलां कुटुंब का-शास्त्रीजी महाराज का मैं सर्जन हूँ।***

आगे हमेशा ये कहने की इनकी लगन रहती थी। यदि इन्हें (शास्त्रीजी महाराज-योगीजी महाराज) साथ में न रखें, तो हम एक मज़दूर-मुंबई में बर्तन साफ़ करने वाले घाटी जैसे हैं। मतलब अगर हमारी कोई value है, जो भी कुछ value बनी है, वो शास्त्रीजी महाराज के कारण बनी है। भजन है 'नीची टेल मळे तो माने भाग्य जो...' तो, ***स्वामी दिल से मानते थे कि छोटी सेवा मिले वो बड़ा भाग्य है।*** बाकी साधारणतया तो ऐसा मानते हैं कि सभा में बात करने को मिले तो अच्छा, ताकि सब जानें कि मैं कैसी बातें करता हूँ। समाज में मेरा एक प्रभाव रहे। बर्तन धोयेंगे तो कौन जानेगा? पर, स्वामी को उसकी परवाह नहीं थी। उन्होंने तो शास्त्रीजी महाराज की संस्था की हल्की से हल्की सेवा करने में ही अपना बड़प्पन माना। Toilet साफ़ करना, झाड़ू-पोंछा लगाना वगैरह में उन्हें आनंद आता था।

उन्हें इस बात का ख्याल था इसलिए ***एक आदर्श स्थापित किया कि हम मंदिर में यदि झाड़ू या पोंछा लगायेंगे, हमारा अंतःकरण साथ-साथ साफ़-निर्मल होता जाएगा। हमारे भीतर में जब झाड़ू लग जाएगी, पोंछा लग जाएगा, तो साफ़ होने के बाद प्रभु उसमें वासित रहेंगे।*** प्रभु विराजमान होकर निवास करेंगे और हमारी देह प्रभु का मंदिर बन जायेगी। सब प्रार्थना करते हैं न कि ***मेरे घर और देह को मंदिर बनाना,*** वो इस तरह बनता है।

- ***अमदावाद का प्रसंग—*** मुंबई के भारतीय विद्या भवन से English में Bhavan's Journal 15 दिन में प्रकाशित होती थी। उसमें रमण महर्षि, रामकृष्ण परमहंस वगैरह के ऐसे articles आते थे— ***How God came into my life...*** सबको ऐसा हुआ कि उसमें बापा का भी ऐसा एक article आए। हर एक को ख्याल आए कि बापा ऐसे हैं जिन्हें भगवान का साक्षात्कार हुआ है। तो, संतों ने बापा से प्रार्थना की कि आप गुजराती में बात करो कि आपको भगवान का साक्षात्कार कैसे हुआ? हम उसकी अंग्रेज़ी करके Bhavan's Journal में छापने के लिए भेज देंगे। ***बापा ने फट् से जवाब दिया कि हमें कहाँ साक्षात्कार करना है? हमें तो अखंड भगवान का दर्शन है। मानो साक्षात्कार हुआ और भगवान के दर्शन हुए ऐसा नहीं है, पहले से ही भगवान का दर्शन ही है। उनका कहने का तात्पर्य था कि मैं स्वयं भगवान की मूर्ति बन गया हूँ।***
- सोरठ काठियावाड़ में जूनागढ़ के पास माणावदर गाँव में एक रात को चेष्टा बोलने के बाद युवक बापा की चरण सेवा कर रहे थे। स्वामी को घुटने पर advanced stage का दाद जैसा हुआ था। उस पर दवाई लगाते हुए एक युवक ने बापा से पूछा कि आपको त्वचा का असाध्य रोग जैसा लगता है, भगवान को होता है? ***बापा ने तुरंत कह दिया कि हम कहाँ भगवान हैं,***

हम तो सेवक हैं। भगवान को नहीं होता, पर संत को होता है। संत भगवान का सेवक है, भगवान का स्वरूप नहीं है। *लोग उसे भगवान का स्वरूप ज़रूर मानेंगे, लेकिन जैसे स्वामी को पूछते थे—आप कौन? तो हमेशा कहते— मैं 'योगी' शास्त्रीजी महाराज का सेवक! ये एक चिंतन - constant contemplation हमेशा रहा। स्वामी के मुँह से कभी सुना नहीं होगा कि मैं 'योगी' कह दिया हो। अभिषेक से भी मानो कोई पूछे—भाई तू कौन? तो सहज बोला जाएगा—मैं अभिषेक। पर, एकदम ये निकलना बड़ा मुश्किल है कि मैं 'अभिषेक', काकाजी का सेवक!*

दाद पर दवाई लगवाते हुए बापा बोले—ऊपर से हम बहुत अच्छे, निरोगी-निरामय लगते हैं, लेकिन भीतर तो काफ़ी दर्द रहता है। तब दूसरे युवक ने पूछा कि दवाई क्यों लागू नहीं पड़ती? ***बापा*** *ने इसका भी अलग उत्तर दिया कि* ***ये मेरी सेवा करने का लाभ कई वैद्यों को मिले इसलिए।*** *वर्ना हम तो कहें—महाराज की जैसी इच्छा। हमने देखा था कि बापा बीमार हुए, तो कितने डॉक्टर इनका इलाज करने के लिए आते थे और इसीलिए* ***बापा आराम करते थे। वर्ना उनकी प्रकृति नहीं थी कि सोए रहें। सबको सेवा देने के लिए वे बीमारी का नरनाट्य करते थे।*** *युवकों को ये सब बताते हुए ख़ुद भी हँसे। वर्ना अपनी बीमारी पर कोई हँसेगा? नहीं हँसेगा। फिर बाद में दूसरे ब्रह्मांड में काम करने गए। शास्त्रीजी महाराज जब सो जाते थे, तो* ***बापा कभी ऐसे नहीं कहते थे कि शास्त्रीजी महाराज सो गए हैं। वे कहते कि शास्त्रीजी महाराज अन्य ब्रह्मांडों में काम करने गए हैं। अर्थात् वे हमेशा सदा जाग्रत हैं। भगवान का स्वरूप कभी सोता नहीं है, सदा जाग्रत रहता है।***

❖ *बापा ने सरसवणी गाँव से काग़ज़ post करने के लिए कहा। तब कइयों ने कहा कि साथ वाले गाँव से post करेंगे तो काग़ज़ जल्दी पहुँच जाएगा, क्योंकि वहाँ से post जल्दी रवाना होती है। स्वामी बोले—वहाँ से तो पहले भी post करते ही हैं, पर यहाँ के post office को भी प्रसादी की होने दो। मानो* ***बापा को अपनी महिमा का भी पूरा ख्याल था कि उनका लिखा काग़ज़ इस post office से जाने से वह प्रसादी का हो जाएगा। सिर्फ बापा का काग़ज़ वहाँ से जाने से वहाँ के कर्मचारियों इत्यादि का संतों से संपर्क होने से संस्कार उदित हों और संतों के प्रति भावना जाग्रत हो, तो बापा की तो बात ही क्या! यह कितना बड़ा magnetic flux-induction कहा जाए, तो बापा की विशेषता कितनी होगी!***

आज जगरांव के पू. सनी जयस्वाल का जन्मदिन भी था, अतः **पू. सनी** व उनके अनुज **पू. जिम्मी जयस्वाल** ने **प.पू. गुरुजी** को भागवती दीक्षा तिथि निमित्त सभी की ओर से हार अर्पण किया और उत्सव पूरा होने के पश्चात् प्रसाद लेकर सभी ने प्रस्थान किया।

अलविदा-सांकरदा के संतवर्य पूज्य अक्षरप्रियस्वामीजी

मुंबई महानगरी कांदिवली के निवासी एकांतिक महामुक्त **पूज्य शारदा बहन हीराभाई ठक्कर** के घर तीन सुपुत्रों का जन्म हुआ। अपने तीनों पुत्रों को साधुता प्राप्त करने के मार्ग पर अग्रसर करके, उन्होंने **गुरुहरि पप्पाजी महाराज** के हृदय में विशेष स्थान पाया। गुणातीत स्वरूपों की निश्रा में **सांकरदा मंदिर** के सात युवकों ने भागवती दीक्षा ली, जिसमें उनके छोटे **सुपुत्र बिपिनभाई** ने भागवती दीक्षा प्राप्त करके **'साधु अक्षरप्रियस्वामी'** शुभ नाम पाया। सांकरदा मंदिर में **ब्रह्मस्वरूप अक्षरविहारीस्वामीजी** के सान्निध्य और बड़े संतों की आज्ञा में रहकर, प्रभु से प्राप्त अपनी दक्षता, बुद्धिमत्ता के अनुसार विभिन्न कलाओं से विविध विभागों में निपुणता युक्त सेवाएँ करके वे सबकी खूब प्रसन्नता पाते गये। फलस्वरूप **ब्रह्मस्वरूप अक्षरविहारीस्वामीजी तथा प.पू. निष्कामजीवनस्वामीजी के तो वे ऐसे right hand बन गये कि सांकरदा मंदिर का कोई भी कार्य उनके सहयोग के बिना संपन्न ही न हो पाता।** अपनी कई विशेषताओं और कार्यों द्वारा छोटी आयु में उन्होंने बहुत प्राप्ति की। सांकरदा मंदिर के प्रत्येक विभाग में हर प्रकार की सेवा करने के लिए वे हमेशा तत्पर रहे, इसलिए सबको उनकी ओर से खूब निश्चिंतता रहती। **उनके सभी कार्य मानो भगवान द्वारा हो रहे हों, उसका दर्शन अधिकांश समाज ने किया। क्योंकि उन्होंने सबके विकास हेतु, सेवाओं में सबको साथ रख कर मिलजुल कर सारे कार्य किये। इसलिए परिणाम अति शुभ और सफल मिलते।** सांकरदा केंद्र से जुड़े युवाओं के साथ भी उनकी अनोखी मित्रता रही। कई चैतन्यों को उन्होंने भगवान से जोड़ा। पिछले पाँच-छः वर्षों से तो वे असाधारण और अविरत भाव से अहोरात्रि सेवा में लगे रहे। **सभी ने अनुभव किया कि ब्रह्मस्वरूप अक्षरविहारीस्वामीजी और प.पू. निष्कामजीवनस्वामीजी के अक्षरधामगमन के पश्चात् तो पू. अक्षरप्रियस्वामीजी सांकरदा केंद्र के प्रमुख-आधार जैसे बन गये।** **'बोले श्रीहरि...'** में **भगवान स्वामिनारायण** द्वारा कथित वचन रोज़ गाते-सुनते हैं— ***मेरी मरज़ी बिना रे, किसी से तिनका न तोड़ा जाए...***

सो, श्रीजी महाराज को जब लगा कि उनका आश्रित प्रिय संत अतिशय सेवाओं के उपरांत परिपूर्ण-परितृप्त हो गया-उसके जीवन का उद्देश्य पूर्ण हो गया, तो तीन-चार दिन की असाधारण अस्वस्थता देकर **26 अगस्त 2025, मंगलवार भाद्रपद शुक्ल तृतीया-केवड़ा तीज** की **सुबह 10.30 बजे** वे उन्हें अपने अक्षरधाम में ले गए। परंतु, सांकरदा केंद्र ने बहुत कम अंतराल में **ब्रह्मस्वरूप अक्षरविहारीस्वामीजी, प.पू. निष्कामजीवनस्वामीजी** और अब **पू. अक्षरप्रियस्वामीजी** की स्थूल विदाई का आघात सहा है, जिसकी खोट कभी पूरी नहीं हो सकती। लेकिन, जिस प्रकार पूज्य शारदा बहन हीराभाई ठक्कर ने अपने सत्कार्यों-सत्कर्मों द्वारा गुरुहरि पप्पाजी महाराज के हृदय में स्थान लेकर जीवन धन्य किया, उसी प्रकार अपने माता-पिता से प्राप्त सत्संग की धरोहर को संजोए रख कर, **पू. अक्षरप्रियस्वामीजी भी अपनी अद्वितीय सेवाओं और सांकरदा केन्द्र में अपना बहुमूल्य योगदान देकर सबके दिलों में सदैव जीवंत रहेंगे।**

व्रतोत्सवसूची

1. **दि. 1.9.'25, सोमवार — गुरुहरि पप्पाजी महाराज का प्राकट्य दिन**
2. दि. 3.9.'25, बुधवार — जलझीलनी एकादशी, व्रत
3. दि. 4.9.'25, गुरुवार — वामन जयंती
4. **दि. 6.9.'25, शनिवार — अनंत चतुर्दशी, श्री गणेश विसर्जन**
5. दि. 8.9.'25, सोमवार — गुरुहरि पप्पाजी महाराज का स्मृति पर्व
6. दि. 9.9.'25, मंगलवार — ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी का स्मृति पर्व
7. दि. 10.9.'25, बुधवार — ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज का स्मृति पर्व
8. **दि. 15.9.'25, सोमवार — प्रगट ब्रह्मस्वरूप महंतस्वामी महाराज की प्राकट्य तिथि**
9. दि. 16.9.'25, मंगलवार — भगवान स्वामिनारायण, अनादि महामुक्त जागास्वामी एवं ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामीजी महाराज का स्मृति पर्व
10. दि. 17.9.'25, बुधवार — एकादशी, व्रत
    ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का स्मृति पर्व
11. दि. 18.9.'25, गुरुवार — मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी एवं गुरुहरि काकाजी महाराज का स्मृति पर्व
12. दि. 19.9.'25, शुक्रवार — अनादि महामुक्त भगतजी महाराज का स्मृति पर्व
13. दि. 22.9.'25, सोमवार — नवरात्रे प्रारंभ
14. **दि. 1.10.'25, बुधवार — प.पू. दिनकर अंकल का प्राकट्य दिन**
15. **दि. 2.10.'25, गुरुवार — दशहरा**
    ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी की पार्षदी दीक्षा तिथि
    पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी की जन्म तिथि
16. दि. 3.10.'25, शुक्रवार — एकादशी, व्रत
17. दि. 4.10.'25, शनिवार — मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी की अंतर्धान तिथि
18. **दि. 6.10.'25, सोमवार — शरद पूर्णिमा**
    मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी का प्राकट्य तिथि
    ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी की भागवती दीक्षा तिथि
    प.पू. दिनकर अंकल की प्राकट्य तिथि
19. **दि. 8.10.'25, बुधवार — अनादि महामुक्त जागास्वामी जयंती**
20. दि. 17.10.'25, शुक्रवार — एकादशी, व्रत—वाघ बारस
21. **दि. 18.10.'25, शनिवार — धनत्रयोदशी**
22. **दि. 19.10.'25, रविवार — अक्षरचौदस**
23. **दि. 20.10.'25, सोमवार — दीपावली**
24. **दि. 22.10.'25, बुधवार — अन्नकूटोत्सव, नूतन वर्ष प्रारंभ**
25. **दि. 23.10.'25, गुरुवार — भैया दूज**
26. **दि. 26.10.'25, रविवार — लाभपंचमी**
27. दि. 2.11.'25, रविवार — प्रबोधिनी एकादशी, व्रत

हे गुरुजी !

जैसी बापा और आपकी गुणग्राहक दृष्टि है

वैसी हम सब की बना दीजिए...